

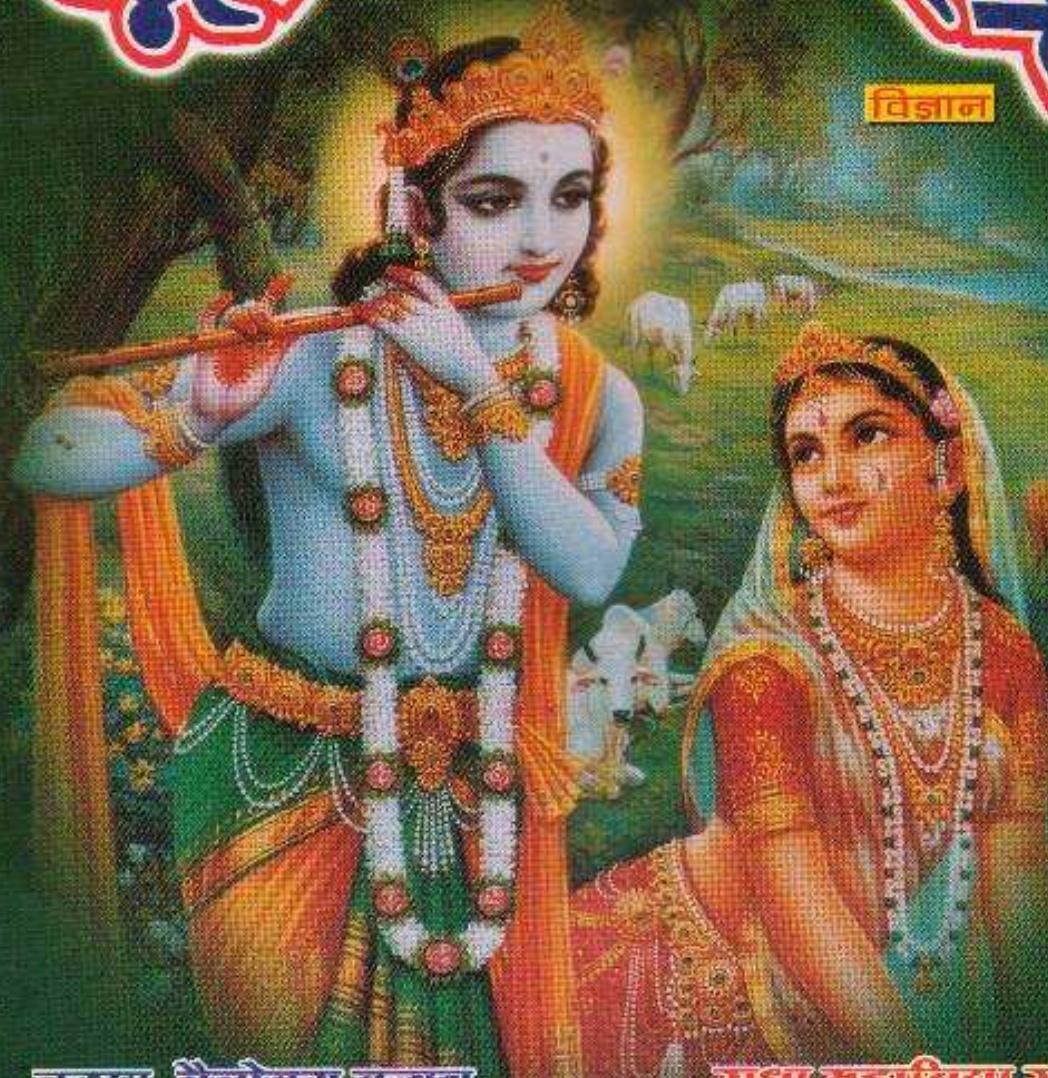
श्री कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक

ज्येष्ठ 2002

मूल्य : 18/-

# कृष्ण-तंत्र-संग्रह

विज्ञान



कृष्ण ग्रैलोक्य कथा

गिरिहरायक यंत्र

यदा यद्यायदा साधना

पितृ दोष कृष्ण गुकि

कृष्ण निश्चिल  
निश्चिलं कृष्ण

निश्चिलं कृष्ण  
कृष्ण निश्चिलं





## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!

आनंद भगवान् ज्ञातवो यन् दिव्यतः  
मानव जीवस को सदैतोन्मुखी लक्षणे उपलिंग और भवशील गुण विद्याओं से अनन्वित मार्गिक पठिला

# श्री ब्रह्म प्रकाश

॥ उत्तम पदम् तत्त्वाय नाकायणाय गुकभ्यो नमः ॥



## साधना

अनन्त चतुर्दशी साधना	27
नारायणकी साधना	31
राधा महाविद्या साधना	37
राहु दोष निवारण साधना	41
<b>सद् गुरु ठडेव</b>	
सदगुरु प्रबन्धन	5
गुरु वाणी	44
<b>स्तनभ</b>	
नक्षत्रों की वाणी	60
में समय हूँ	62
वराहाभिषीकर	63
जीवन सरिता	64
साधक साक्षी	66
कालचक्र	73
इष मास विल्ली में	80
एक दृष्टि में	86

वर्ष 22 अंक 6  
अगस्त 2002 पृष्ठ 26



प्रेरक सारण्यापक  
डॉ. नारायणदत्त  
श्रीमाली  
(परमहंस स्वामी  
जिनेश्वरोदयवालव जी)

प्रधान सम्पादक  
श्री नन्ददिविश्वर  
श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक  
श्री कैलाशवाल्ड्र श्रीमाली  
संयोजक व्यवस्थापक  
श्री अरदिल्द श्रीमाली



## विवेचन

जगत् के सृष्टा भगवान् विष्णु  
जिनकी प्रहिमा अनन्त है 23

विष्णु योग 33

## स्तोत्र

श्रीकृष्ण त्रिलोक्य कवच 75

## विशेष

आद केरो करे 55

प्रकाशक एवं स्वामित्व  
श्री कैलाश वाल्ड्र श्रीमाली  
द्वारा  
नील आर्ट प्रिन्टिंग  
८१७२ नारायणा इंडियल  
एसिया फैसल, नई दिल्ली  
में सुनित नथ  
मंत्र-नव-यन विज्ञान हाइकोर्ट  
कौनौनी, नोएपुर से  
प्रकाशित।

मूल्य (आस्त में)  
एक प्रति : 18/-  
वार्षिक : 195/-

सिद्धाश्रम, 306 कौनौन एन्चल, पीलीघुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-7182248, फैक्स: 011-7190700  
गंत-नव-यन विज्ञान, ८०० श्रीमाली नारा, हाईकोर्ट कौनौनी, नोएपुर-320001 (राज.) फोन: 0291-432206, फैक्स: 0291-432070

WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - [mtyv@siddhashram.org](mailto:mtyv@siddhashram.org)

## विद्याम

पत्रिका में प्रकाशित साझी वस्तुओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मन्त्र-तंत्र-यत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों में सामाजिक का साधारण होता अविद्यार्थी नहीं हो। तर्क-तत्त्व के बारे वाले पाठ्य पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को नाम सामग्री किसी गति, सामाजिक या उट्टाका का विषयी से बदल गए रहती है। बढ़ि कई प्रश्न, बाहर या तथा जिन जाति, तो उच्ची सामग्री सामग्री के लेखक दुष्कर काम-सांत रहते हैं, आज उक्तके पते के बारे में कुछ भी अन्य जागरूकी होता सामाजिक रही रहेगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में बाद-विवाद या तर्क गति रही होगा भी न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सामाजिक विद्यालय होंगे। किसी भी सामाजिक को किसी भी प्रकाशक का पारिश्रमिक नहीं होगा। जाति, विषयी भी प्रकाशक के बाद-विवाद में और उन सामाजिक या सामाजिक गति रही होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधारण या पाठ्य रही हो गी। प्राप्त क्षमताएँ हैं। पत्रिका कार्यालय में संगवारे पर हज अप्रतीक तक के प्राप्तिक भी सामग्री अधिकार यात्रा में जाते हैं। एवं यिन भी उक्तके बाद में, उमली या बख्ली के बारे में अधिकार प्राप्त होते या न होने के बारे में स्थानी विद्यालयी नहीं होंगी। पाठ्य अप्रतीक विवाद पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय में प्रज्ञापात्री। सामग्री के गृह्य पर तर्क या बाद-विवाद साध्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक गुरुक वार्षिक में 195/- है। एवं बढ़ि किसी विषयी एवं अप्रतीक विवाद के बारे में पत्रिका को विद्यालयी का बदू करना चाहे, तो जितन भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उक्ती में वार्षिक ग्राहकता साध्या हो बर्द, तिन वर्ष या प्रत्यक्षीय ग्राहकता को पूर्ण करने, इसमें किसी भी प्रकाशक की आवाजि या आलोचना विषयी भी कृपा में इकाइकर नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री में साकलता-असकलता, हानि-लाभ की विस्तैतानी साधारण की क्षमता की होगी तथा साधारण कोई भी ऐसी उपायता, जप या संह प्रयोग न करें, जो बैतिक, साकाशिक तथा बहुती विद्यार्थी के प्रियतम हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या सामाजिकी लेखकों के विद्यान भाग होते हैं, उन ग्राम्य का अध्ययन पत्रिका के विद्यार्थियों की तक से ग्राम्य के ग्राम्यों की गांग पर इस अंक में पत्रिका के प्रियते लेखों का भी जो का सार्व समावेश किया जाता है, जिसमें कि ग्रामीण पाठ्य लाभ तथा साधारण या लेखक अपने प्राप्तिक अवधारों के अध्ययन पर जो संभव, तंत्र या तंत्र (मत्ते ही वे सामाजिक व्यवस्था के द्वारा ही) बनते हैं, वे ही देखते हैं। अतः इस ग्राहकता ने आलोचना करना बर्थ है। अध्ययन पूर्ण पर या अद्यन जो भी कठोर प्रकाशित होते हैं, इस साधकता में सामाजिकी कठोर भौतिकाल अध्ययन आविष्ट की गयी। दीर्घा प्राप्त करने का तार्क्य यह रही है, कि साधक उपकरण सामग्रित लाभ तुलना प्राप्त कर सके, वह तो ग्रामीण भी अब जाति प्रतिक्रिया है, अतः पूर्ण भव्य भी उन प्रियतम के साथ ही दीर्घा प्राप्त करने इस साधकता में किसी प्रकाशक की कोई भी आवाजि या आलोचना कीवितरी नहीं होगी। मुख्यतः या पत्रिका प्राप्तिकरण साधकता में किसी भी प्रकाशक की विस्तैतानी बहुत नहीं करते।

## प्रार्थना

ध्यानं बलात् परमहंस कुलस्य भिन्नन्  
निन्दन् सुधा मधुरिमाणमधीर धर्माः  
कंदर्ष शासन धूरां मुहुरेव शंसन  
वंशी ध्वनिन्द्रियति कंस निष्पदनस्य।

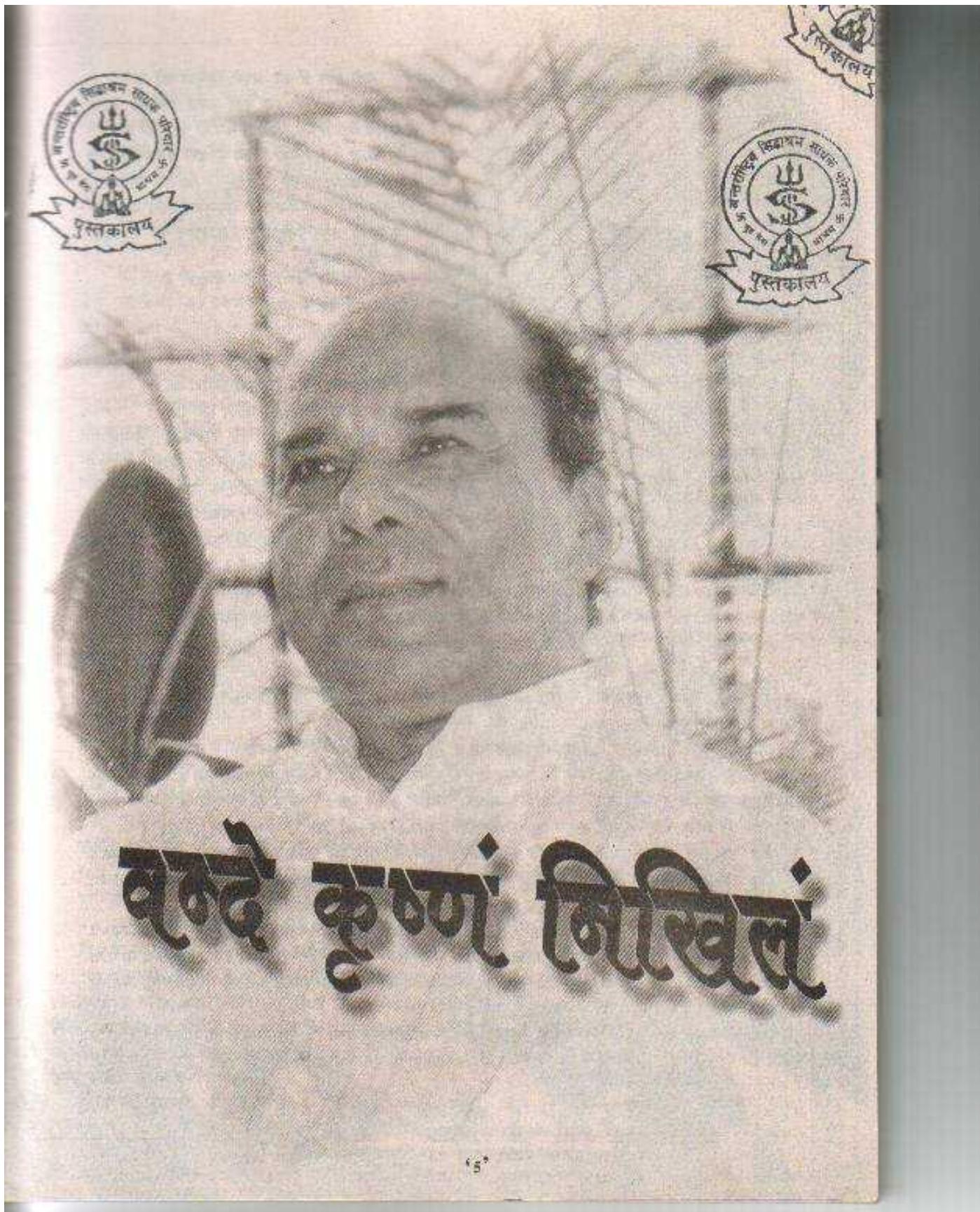
समाधि निष्पदनहंसों की समाधि को हडात ताड़ देने वाली, सुधा के माधुर्य को फीका बना देने वाली, धैर्यवान पुरुषों के धर्षण को नोडकर उनकी अधीरन को उत्तेजित करने वाली, कामवेद पर विजय दुन्दुभि बनाकर उनको अपने शासन में करने वाली भगवान कृष्ण की यह वंशिध्वनि रत्नवत् विजयशालिनी हो रही है।

## \* तू मेरा गुरु \*

मिथ्या लेखों के लिए वर्जित्याशी अवधूत दत्तात्रेय  
दले आ रहे हैं, जान्म में दृक्कल्पयत्याप वर लक्षे। उत्तरकला  
की ओद वृष्टि उत्तर्व्याप्ति देखता, दृक्पश्ची आने आने  
उड़ता चला या रहा है। उक्तके पीछे दस पल्लव पश्ची  
दे। सभी दृक्पश्ची जाति के हैं। फिर भी ये आने उड़ने  
दले पश्ची की बाब बाब चौंच भास रहे हैं। यह बेचारा  
उक्तके उत्तरकल्पय को जाह्नवी कबूता दुर्जा तेजी से आवा  
जा रहा या पौधा कबूते जाले पक्षियों ने भी उसे जहाँ  
छोड़ा ते उसे चौंच भास-मास-कल्पय धार्यत करते ही रहे।

यह देखता, दत्तात्रेय जे कोचा - जेचारा विद्वत्ता  
जिसीहै। अकेजा है उत्तर ये जस्ती भी उसी जाति के हैं।  
फिर भी उसे भास रहे हैं। दहूत देर तक दत्तात्रेय यह  
देखते रहे तभी उठाऊंगे देखता, आजे वाले पश्ची की  
चौंच में बोटी का दुकड़ा है। उसे छीनते के लिए ही  
पश्ची उसे भास रहे हैं। आक्षम्य जे यह नहुआज हो  
धर्या। हावकर उक्तले चौंच जे बोटी का दुकड़ा छोड़  
दिया। उक्तके छोड़ते ही दृक्पश्ची दे पश्ची ने उसे लपक  
लिया उब उत्तर पश्ची मिलकर उस दूजारे ज्वे भासने  
लगे।

पहले वाला धार्यत पश्ची दृक्पश्ची दे पर जा दैता दत्तात्रेय  
बड़ा उत्तर दले पश्ची से लोले हे पश्ची, उपज जे तु मेदा  
नुक है। मैंने सुखे देखकर जीवाजा कि बंधाक में जिस  
वश्तु की प्राप्ति के लिए दहूत से लोब अधिकार जताते  
हों उसे छोड़ देना ही ठीक है, जहाँ तो प्राप्त भी नैकट में  
पक्षकरते हैं, तेकों कुछ देर पहले तुम्हारे प्राप्त संकट  
में था, तुम्हारे यह दुकड़ा छोड़कर ठीक ही किया यह  
कृष्णकर दत्तात्रेय जे उक्त पश्ची को प्रणाम किया।



वरदे कुण्डं विशिष्टं

सदगुरुवेव वही होते हैं जो अपने शिष्यों को कड़वी से कड़वी बात कहने में भी संकोच नहीं करते क्योंकि उनके साथें जो शिष्य बैठा है वह भौतिक रूप से चाहे जो कुछ भी हो गुरु के समझ के लिए एक शिष्य है, इस प्रबन्धन में एक प्रकार से प्रत्येक शिष्य को ललकारा है कि तुम वास्तव में क्या हो और तुम्हें क्या बनना है, सदगुरुवेव की ओजस्वी वाणी में कृष्ण जन्माष्टमी और रक्षाबंधन पर्व पर दिया गया यह दिव्य प्रबन्धन-

दंड व्याप्ति ने अपने इलेक्ट्रोक में कहा है

पुण्यार्थ देह भवता॑

जर सूप देह

सर्वो सदीतां श्री कृष्ण रूपं

सोमाय मौत बदतां भव जिय रूप

जड़तां खिलाश यदि संदेष तुल्यं

में सोचता हूँ कि इससे अच्छा कोई इलोक संसार में

ही दी नहीं सकता, इससे अच्छा किसी गुण विषय को लिए कोई उलोक ही नहीं सकता और यदि आप इस श्लोक के पाने जीवन में नहीं उतारते हैं तो यह आपका दुर्भाग्य है। परन्तु

यह आपका वटियापन है, आपका न्यूनता ह और प्रत्यक्ष व्याक  
अपने आप में न्यून है ही। उंचा तब उठता है जब उस श्लोक को  
अपने शारीर में रखा पक्षा लेते हैं। आप यम ए बन जाते हैं, आपने उसकी

पढ़ाई को अपने अन्वर समाहित करने हैं इसलिए आप एम. ए. हैं, बी.ए. हैं। यह इलोक सुनने के लिए नहीं है यह इलोक जीवन में उत्तरासने के लिए है और जो जीवन में नहीं उतार पाते वे वैसे ही हैं जैसे एक सामान्य प्राणी है, एक सामान्य व्यक्तित्व है। कौप, टंटर, बंटर, कुत्ते, गाय, ऊट, बकरी क्योंकि वे इस प्रकार ज्ञान को अपने अन्वर समाहित नहीं कर लकड़े व्यक्तिलिए ये नुष्ट भी नहीं हो सकते, एम. ए. भी नहीं हो सकते और करोड़ों व्यक्तिकी अज्ञानी हैं। उनके पास सार्टिफिकेट तो है पर ज्ञान और चेतना नहीं है।

हमारे क्राचियों ने हमें ज्ञान दिया है किन्तु नीचेतना वाले हैं, किन्तु उपर्याप्ति और सफलता वाले हैं इसका तुलना नहीं है और उनका किन्तु बड़ा सौभाग्य है कि संसार में उस स्मृतिशक्ति पर है जिसे भारत वर्ष कहा जाता है भारत के राज कण में हम पैदा हुए हैं, बड़े हुए हैं और संसार के उस भाग में हम हैं जहाँ छिमालय है, गंगा है और मानवरसेवर है और उसमें भी ब्रह्मलक्ष के हम उस स्थान पर हैं जहाँ ब्रह्मारे सामने गुश है।

यदि हम नहीं समझते हैं तो यह बेकार है नगण्य है तुच्छ है, यदि हम समझते हैं तो इससे बहु सीधा भाव्य है ही नहीं। इस्तिलए बेत्र व्यास ने पहली ही पाँक में कहा कि यह श्लोक केवल सुनने के लिए नहीं, हाँ यह श्लोक बदलाव ने अपने छिप्पों से कहा और प्राण काल श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन कहा।

यह इलोक में इसलिए नहीं कह रहा है कि आप इसका अध्ययन करें मनन करें या पढ़ें, यह पढ़ने के लिए है ही नहीं यह इलोक युनन के लिए नहीं है जीवन में उतारने के लिए है। इसमें बताया गया है कि श्रीकृष्ण के पाय पर्यावरणी शब्द है, पाद अर्थ है, और भगव हम इन अर्थों को अपने अन्दर समाहित करते हैं तो हम सही अर्थों में मानव बन सकते हैं।

हम अभी नहीं जानते कि श्रीकृष्ण के विजयों का अर्थ है या श्रीकृष्ण क्या है। हम उनको एक मानूसी सारणी में लिख देते हैं। हम उनको एक विजयी दृष्टि से भी बढ़ावा देते हैं वह यशोदा के गुरु समझ देते हैं। इसे उनको जटाव से छुपाकर बचाते हैं।

एक योद्धा समझ बैठे हैं जिन्होंने महाभारत का बुद्ध किया, विजयी हुए और जयादा से ज्यादा त्रूम समझते हैं कि उन्होंने गीता जैसे ग्रन्थ का उपदेश दिया।

मगर यह तो कुछ था ही नहीं, यह तो एक नगण्य सी चीज़ थी। इसनी सो बात के लिए अगर महानता प्राप्त हो जाती है तो फिर भीष्म भी इतने ही महान है। फिर तो आच्छ भी कई योद्धा हैं जिन्होंने श्रीकृष्ण के समान बुद्ध किया। अर्जुन भी था, दुष्यमिति भी था, मीम भी था, नकुल, सहवेद भी थे। मगर वे इनी उच्चकोटि नक व्याध नहीं। पहुंच पाए यह बेट व्यास ने इस श्लोक में व्यष्ट किया है।

श्रीकृष्ण का मतलब है सौन्दर्य प्रत्येक व्यक्ति में सौन्दर्य होता है। मात्र वह उस सौन्दर्य का प्रस्तुतन नहीं कर पाता। और सौन्दर्य होता है मन का बाहरी वस्त्रों का नहीं, बाहरी वस्त्र आपके सफेद हैं, पीले हैं, लाल हैं, इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता, इनसे व्यक्ति सौन्दर्य युक्त नहीं बन सकता।

सौन्दर्य युक्त बनता ही जब मन में एक कमल खिलता है जब हृदय में एक प्रल्युटन होता है, जब हृदय से एक सूखनध का झोंका प्रवाहित होता है। ऐसा लगता है कि मैं गुरु के पास रहता हूँ। ऐसा लगता है कि गुरु नहीं है एक वस्त्र का झोंका है वह वायु वेश है जो मैं आपने प्राणों में भर लना चाहता हूँ और भर कर के अन्वर की सारी दुर्बिध निकालकर इन्हाँ आनन्द युक्त बना देना चाहता हूँ कि २४ घण्टे तक खुमारी में रह सकूँ। फिर साल भर खुमारी में रह सकूँ।

श्रीकृष्ण का पहला अर्थ यही है कि इम सौन्दर्य युक्त बन सकें। परन्तु यह नहीं हो सकता है जब समाज गुरु हो और वो आपको सौन्दर्य युक्त बनाने की इच्छा रखते हीं और आप भी बनना चाहते हीं। ऐसा दिन श्रीकृष्ण जन्मसूत्री का है और यह दिन फिर साल भर बाद आता है। आला तो है परन्तु फिर आप गुरु के पास होते हैं या नहीं होते हैं, यह विषय होता है या नहीं होता है इसको कोई कल्पना नहीं की जा सकती। श्रीकृष्ण का दूसरा अर्थ होता है वूर्ण सम्पन्न होना, वूर्णीता प्राप्त बीं, या एम.ए. पास करने से नहीं होनी क्योंकि हमारे आज सक के किसी व्यष्टि ने बीं, एम.ए. पास नहीं किया, कर्त्त्वीर, सूर, मीरा और तुलसी ने भी नहीं किया दशिष्ठि, विश्वामित्र, गर्ज, उत्ति, कणाद ने भी नहीं किया, कृष्ण ने भी नहीं किया, राम ने भी नहीं किया और न ही महावीर या बुद्ध ने किया।

वे कागज के टुकड़े इकहें नहीं कर पाए। ज्ञान और चैतन्यता वहाँ प्राप्त हो सकती है, जहाँ अथाह स्मृद्र है, सागर है, मानसरोवर है।

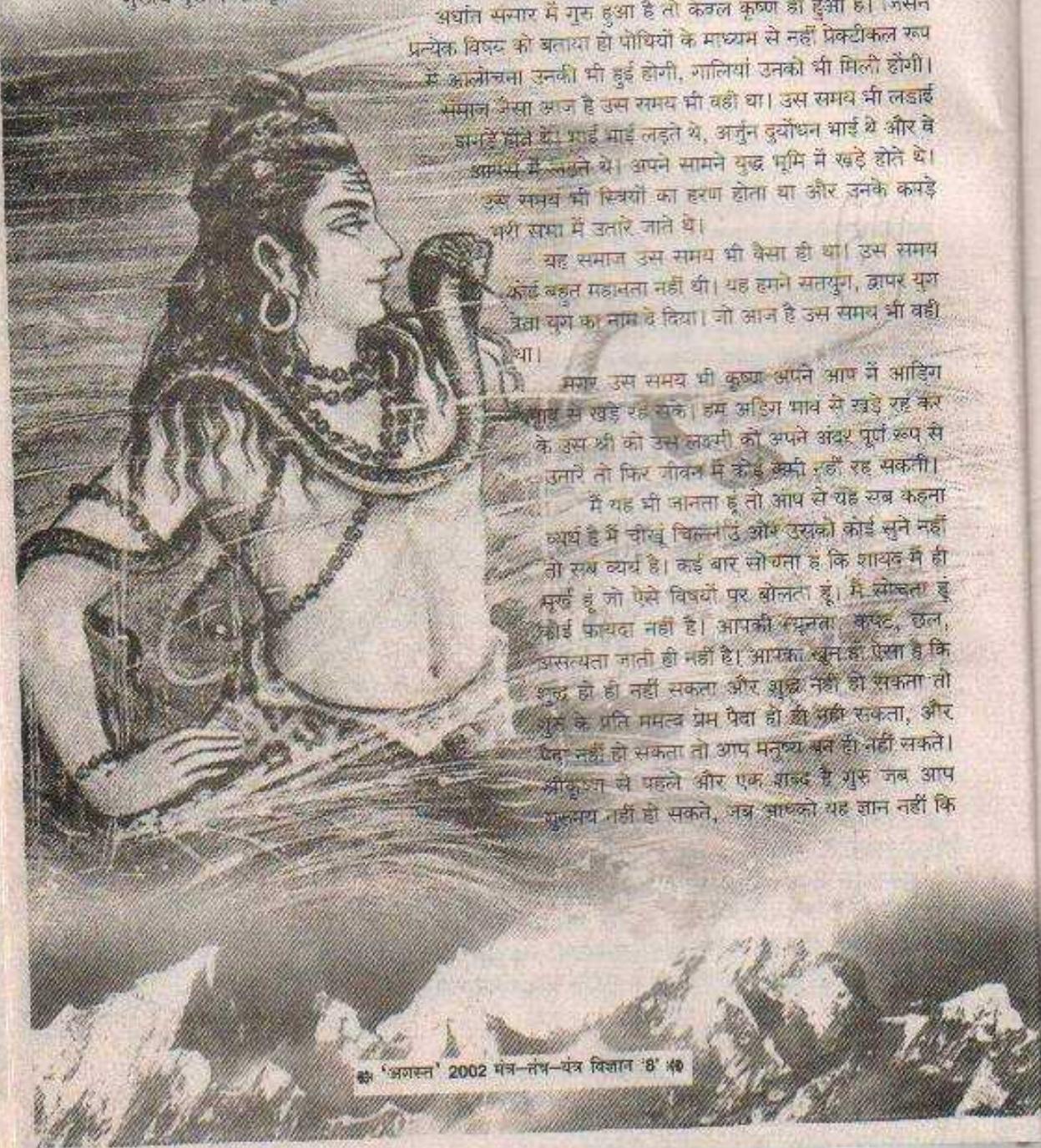
ऐसा मानसरोवर है जो प्रेम की झील है और उस प्रेम की झील में छाँ हँस लनकार उत्तर सके गतिशील हो सके हस बन करके उसमें दूधला लगा सके और हँस बन करके मानसरोवर की गहराई नाम सके। अपना जीवन फिर इस आपके साथ उस होता है क्योंकि आप अपेक्षा नहीं बढ़ते।

सकते आपको पता नहीं है कि अपने पंख कैसे फेलाने हैं। आपको यह भी मालूम नहीं है कि मानसरोवर क्या चीज़ है और क्या है ? आपको यह भी मालूम नहीं है कि उसमें कैसे दुब्रकी लगाई जाती है। नगर अगर काम में जान है, जान की चेतना है, वीपक का प्रज्वलन है तो आप गुरु को पहचान लेंगे। कृष्ण को भी कृष्ण कहा ही नहीं गया अपितु कृष्ण को जगत् गूरु ही कहा गया।

कृष्ण ! बन्दे जगद् गुरु !

गुरुत्वं शिव रेवा कां कृष्णं गुरुत्वं मेव च

गुरुत्वं गुरुत्वं चैव कृष्णं केवल गुरुत्वं



गुरु को क्या आवश्यकता है जब आप गुरु के लिए आंसु नहीं बहा सकते, जब गुरु के प्रेम में नहीं बंध सकते, जब गुरु से एकाकार नहीं हो सकते, जब आप गुरु की सुगन्ध को उपने ने समाहित नहीं कर सकते तो आप शिष्य क्या हैं?

आप शिष्य नहीं हैं, केवल छल है, पाखड़ है, झट है, एक धोखा है। हम उपने आप में खुश हैं कि हम शिष्य हैं, मेरी राय में आप बेकार हैं तुच्छ हैं, शिष्य नहीं हैं। वैसे ही हैं जैसे एक महक पर चलने लोग हैं।

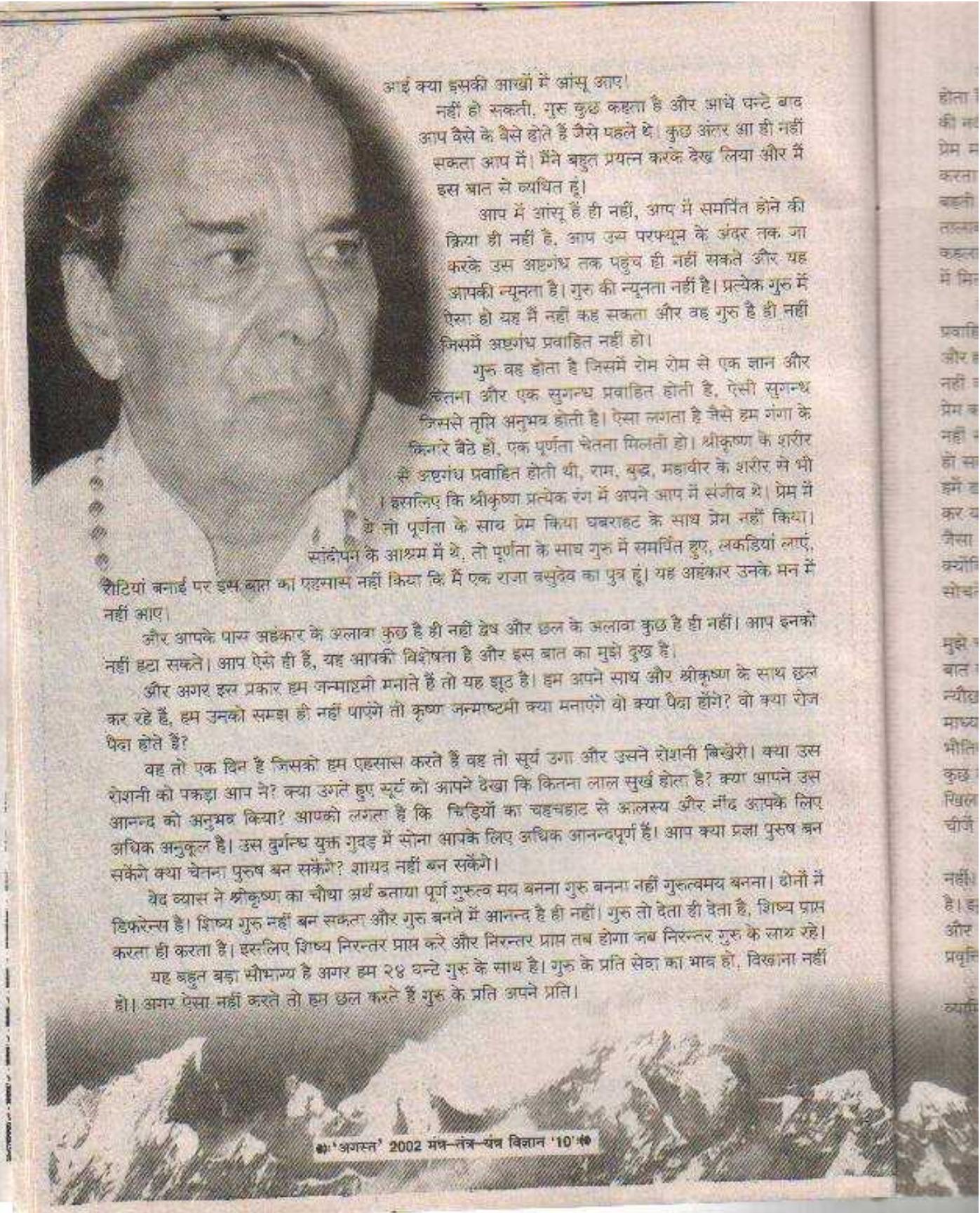
जब आप श्रीकृष्ण को समझे तो उससे पहले एक शब्द है श्री उसे समझे। श्री का अर्थ है पूर्ण, प्राप्त करने की क्रिया। प्रत्येक विषय में पूर्णता प्राप्त करने की क्रिया। गरीब, मन, प्राण, चेतन, ज्ञान, विद्या, व्यज्ञिन, उन्हें उससे भी बदकर के आपने अंदर पूर्ण विश्व का वार्ष गुरु को समझिन करने की क्रिया।

वेद व्यास ने समझाया है कि श्रीकृष्ण का तीसरा अर्थ है विद्या सुपाद।

श्रीकृष्ण के इरोर से उष्णोध उवालिन होती है। यह अष्टग्राध उनके शरीर से व्याप्त होती है जिनका इरोर बहुत आर्थिक पवित्र होता है। यह अष्टग्राध उनके इरोर से प्रवाहित होती है जो विद्या होते हैं, वैतन्य पूर्व होते हैं शत्रुघ्नि पुरुष होते हैं। मगर क्या हमसे ग्राहण शक्ति है कि हम उस उष्णग्राध को एहसास कर सकें?

यह शक्ति नहीं है हम भेद भी नहीं कर सकते। हम एक वायु का दूसरे व दूसरे भेद कर ही नहीं सकते। हम करने की हवा में और सहक की हवा में विनान भेद है हम अनुभव नहीं कर सकते। उस बगीच में जिसमें दो दो रहे हैं और इस कमरे की हवा में क्षा फैद है हम समझ नहीं सकते गुरु की मही ममड़ सकते। इसीलिए जो उत्तम कृष्ण के गरु होते हैं वे कृतिम सुगन्ध को जिसको आज की जाग में पराम्परा कहते हैं, या उन कहते हैं उपको आपने इरोर पर लगा देते हैं जिसमें अष्टग्राध हित जाए और जाए उनकी परमपूर्म को नुष्ठ कर खुश हो जाए कि बहुत सुगन्ध आ रही है।

एक नरपथ्यम जो नकली है उष्णिता है उसका बो प्रदोग करते हैं कि ये भाषा ये निकल कर लोग ब्रह्म में लीन न हो जाए ब्रह्मण्य नहीं बन जाए अपने आप को प्राप्ती हो जाए जहाँ हो दे। मैं से ऐसा इसलिए करता है क्योंकि बह नेमह कर लेना चाहता है कि यह व्यक्ति शिष्य है, क्या इसकी न्यूनत अभी समाप्त हुई, क्या इसमें प्राप्ति



जाई क्या इसकी आखो में आँखु आए।

नहीं हो सकती, गुरु कुछ कहा है और आधे घन्टे बाद  
आप कैसे के कैसे होते हैं जैसे पहले हों कुछ अलार आ ही नहीं  
सकता आप मैं मैंने बहुन प्रयत्न करके लेख लिया और मैं  
इस बात से व्यथित हूं।

आप मैं आँखु हैं ही नहीं, आप मैं समर्पित होने की  
किया ही नहीं है, आप उच्च परम्परा के अंदर तक जा  
करके उस अष्टग्रंथ तक पहुंच ही नहीं सकते और यह  
आपकी न्यूनता है। गुरु की न्यूनता नहीं है। प्रत्येक गुरु में  
ऐसा ही यह मैं नहीं कह सकता और वह गुरु है डी नहीं  
जिसमें अष्टग्रंथ प्रवाहित नहीं हो।

गुरु वह होता है जिसमें रोम रोम से एक जान और  
चेतना और एक सुगन्धि प्रवाहित होती है, ऐसी सुगन्धि  
जिससे नृपि अनुभव होती है। ऐसा लक्षण है जैसे हम गंगा के  
किनारे बैठे हों, एक पूर्णता चेतना मिलता हो। श्रीकृष्ण के शरीर  
में अष्टग्रंथ प्रवाहित होती थी, राम, बुद्ध, महावीर के शरीर में भी  
। इसलिए कि श्रीकृष्ण प्रत्येक रंग में अपने आप मैं संजीव थे। प्रेम में  
ये नो पूर्णता के साथ प्रेम किया घबराहट के साथ प्रेम नहीं किया।  
जादेपन के आश्रम में ये, तो पूर्णता के भाव गुरु में समर्पित हुए, लकड़ियां लाएं,  
रोटियां बनाई पर इस बास का पहसुआस नहीं किया कि मैं एक राजा बप्पुदेव का पुत्र हूं। यह अहकार उनके मन में  
नहीं आए।

और आपके पास अहकार के अलावा कुछ है डी नहीं देख और छल के अलावा कुछ है ही नहीं। आप हनको  
नहीं हटा सकते। आप ऐसे ही हैं, यह आपकी विदेशीता है और इस बात का मुझे दुख है।  
और अगर इस प्रकार हम जन्माष्टमी मनाते हैं तो यह झूठ है। हम अपने साथ और श्रीकृष्ण के साथ छल  
कर रहे हैं, हम उनको समझ ही नहीं पाएँगे तो कृष्ण जन्माष्टमी क्या मनाएँगे वो क्या पैदा होंगे? वो क्या रोज  
पैदा होते हैं?

वह तो एक दिन है जिसको हम पहसुआस करते हैं वह तो सूर्य उगा और उसने रोशनी बिखुरी। क्या उस  
रोशनी की पकड़ा आप ने? क्या उगते हुए सूर्य को आपने देखा कि किनारा लाल सुख्ख होता है? क्या आपने उस  
आनन्द की अनुभव किया? आपको लगता है कि शिरियों का चहचडाट से अलस्य और नींद आपके लिए  
अधिक अनुकूल है। उस दुर्गन्ध युक्त गुदड में सोना आपके लिए उचित आनन्दपूर्ण है। आप क्या प्रला पुरुष बन  
सकेंगे क्या चेतना पुरुष बन सकेंगे? शायद नहीं बन सकेंगे।

वेद व्यास ने श्रीकृष्ण का चौथा ऋर्थ बताया पूर्ण शुस्त्रव मय बनना गुरु बनना नहीं गुरुत्वमय बनना। ढोनी में  
डिफरेन्स है। शिरिय गुरु नहीं बन सकता और गुरु बनने में आनन्द है ही नहीं। गुरु तो देता ही देता है, शिरिय प्राप्त  
करता ही करता है। इसलिए शिरिय निरन्तर प्राप्त करे और निरन्तर गति तब होगा जब निरन्तर गुरु के साथ रहे।

यह बहुन बड़ा सौभाग्य है अगर हम २४ घन्टे गुरु के साथ हैं। गुरु के प्रति सेवा का भाव हो, विख्नना नहीं  
हो। अगर ऐसा नहीं करते तो हम छल करते हैं गुरु के प्रति अपने ग्राति।

और अनाता श्रीकृष्ण का अर्थ है प्रेम, वह प्रेमय होता है। जिसके पाप और कुछ हो या नहीं हो प्रेम की नदी बड़ी रहती है वह प्रेम में मग्न रहता है, वह प्रेम सप्त की नहीं है हमेशा प्रेम की नदी प्रवाहित करता रहता है मग्न इसलिए पवित्र है क्योंकि उसी रहती है नदी रहेगी तो पोखर कहलायेगी, तालाब कहलायेगी, यदनी रहती है इसलिए गंगा कहलती है। वह टीक गंगोत्री से उत्तरकर रसायन में निलटी है, इसलिए वह गंगा है।

इसलिए वे कृष्ण हैं क्योंकि वे निरन्तर प्रवाहित हैं, निरन्तर प्रेम उनमें से बह रहा है और हमारा पुण्य-पूर्ण यथ है कि हम प्रेम में अवगत नहीं कर पाते, हम प्रेम कर ही नहीं सकते वहमें प्रेम करना आनंद ही नहीं। हम उनको बाहुंद में धरनहीं सकते, हम उनके चरणों में नसनप्सक लड़ी हो सकते, हमें दिक्षक आनी है संकोच अना है। हमें डर लगता है कि लोग क्या साचा, और क्या कर दिया आप जीवन भीते हैं तो देसा ही जीवन है जैसा गधे, कुने और गए भीते लोगों का होता है क्योंकि आप में ताकत व क्रमता नहीं। अगर आप सोचते हैं कि लोग क्या कहेंगे तो व्यर्थ है।

जब आपका सिर अपने आप मजबूर हो जाए कि  
मुझे चरणों में समर्पित हो जाना है, जब आपकी चेहरा उस  
आत्म का एहसास बर दे कि मुझे उनके लिए आपने आपको  
न्यौछावर करना है, प्राप्त करने की क्रिया क्रवल ग्रन के  
माध्यम से हो सकती है। और कोई दूसरा रासना नहीं है।  
प्रौढ़िकता का रासना नहीं है, आप मुझ दो रोटों दे दें उम्मीद  
कुछ लेना देना नहीं है, आप मुझे पानी पिला दे या जलना  
खिला दे उससे भी कुछ लेना देना नहीं है। वही प्रौढ़िक  
चीज़ें हैं।

अब प्रेम आप है नहीं यकते क्षणोंकि आपका पाल है ही नहीं। यदि आप अपने मन को टटोले तो प्रम जैसा नीज भवही है। इन्‌ठल, कपट तो है व्यापिचार है, भ्रमन्त तो है, डेष और न्युनता तो है, एक दूसरे को जलो कठी नुनासे की प्रवृत्ति तो है, और बटिया पृष्ठ तो आप हैं हाँ।

बटिया पुस्तक वह है जिसमें छन, छूठ, कपड़ा, आदि, ज्यापीचार, न्यूता और गोछपत्र देता है और आप

इस सब भरा हुआ है। इसलिए मैं आपको धिक्कारता हूँ कि आप में प्रेम नहीं है। प्रेम रक्ता नहीं है। प्रेम चलकर गुरु में एकाकार हो जाता है गुरु के चरणों पर लिप हो जाता है। तब अपने आप अष्टगंथ व्यास हो जाती है। अष्टगंथ उनकी भास में भर जाता है। पूर्ण शरीर में प्रेम और आनन्द की वृद्धि होने पर जग जाती है। तब व्यक्ति प्रेम सब हो जाता है जेहरे पर एक चमक, और रीनक हो जाती है, सारे अंदर की एक सुन्दर सी आळूनि उन जाती है।

आप इसलिए प्रेममय नहीं बन सकते क्योंकि पक्ष भरे हुए घड़े में कुछ भी नहीं भरा जा सकता। खाली घड़े में भरा जा सकता है और आपके घड़े में झूठ और छल भरा हुआ है, पूर्ण लबालब भरा हुआ है। मैं आपको बहुत कहता हूँ पर आप अपने रुपन से एक लीक भी नहीं होते।

मात्र आलभ्य नहीं हो इने, छल नहीं होते, सूत नहीं होते, पाखट नहीं होते, गुरु से एकाकार नहीं होते गुरु में लीन ही नहीं होने एक भरे हुए दीये में जाए भरा जा सकता है। न्यादा धरेंगे तो वह बुझ जाएँगा।

श्रीकृष्ण का पांचवा अर्थ है आनन्द और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन के प्रत्यक्ष क्षण को आनन्दयुक्त बनाना चाहिए। सैकड़ के हजारवें हिस्से को क्षण कहते हैं। पूरा दिन एक आनन्द में, तृतीय में, खुमरी में बीते। आपके पास सुन्दरता है तो आप सीन्द्रवंशी वर्गन करिये, यदि आपके पास जान है तो आप जान को त्रिखेत्रिये, आपके पास जो कुछ हो उसका प्रवर्जन कीजिए।

अगर मेरे पास जान है तो मेरा सन होता है तो सूखह उद् और आपको जान है, अगर मुझे बैद व्यास के इलोक दाद है तो वे इलोक आपके सामने रखें, जो मेरे पास है वह मैं आपको दूर में निरन्तर प्रेम प्रवाहित करना चाहता हूँ, तो करता हूँ। मैं तो देता हूँ, पर आप दीच में ही दीवार खड़ी कर देते हैं, प्रेम नहीं लेते और वह लौट कर आपस आ जाता है।

आपको आंखें कामातुर हैं, अनधी है, कमजोर है, कायर है और बुज़दिल है। आपको अंदर में वासना के अलावा कुछ है ही नहीं और वासना के अलावा कुछ देख ही नहीं सकता। ऐसे हुए तो वासनायुक्त ही नहीं हो सकते। इसमें पठिया कोई आंख दुनियां में हो ही नहीं सकती। आप किसी स्त्री को बहन के रूप में देख ही नहीं सकते मां के रूप में देख ही नहीं सकते। मीठी बहुत सुन्दर होती है, बहन भी बहुत सुन्दर होती है, पत्नी भी बहुत सुन्दर होती है, प्रेमिका भी बहुत सुन्दर होती है। सारा जीरोर भी सुन्दर होता है। प्रातः काल सूर्य उदय भी बहुत सुन्दर होता है, यिदियों का चहचहाना भी बहुत सुन्दर होता है और झूमता हुआ वृक्ष और पुष्प भी बहुत सुन्दर होता है। क्या जास्ति ने इस सुन्दरता को कभी एहसास किया, अनुभव किया, अपने अनन्द लिया।

इसलिए नहीं उतार सके क्योंकि आप कृष्ण को नहीं समझ सके, क्योंकि आप गुरु को नहीं समझ सके, उसके प्रेम को नहीं समझ सके। वेद व्यास ने हस्त इनोक के प्रारम्भ से अन्त तक जीवन का वर्जन कर दिया। हमारा जीवन क्या है, हमें क्या करना चाहिए यह हमें समझाया, हम कैसे कृष्ण लौन सकते हैं वह समझाया। लौनहोका नहीं है कि वेदकी ने ही ऐद कर दिया कृष्ण को जो बहुत प्रे-

ही नहीं हो सकते, कोई वशोदा का टेका नहीं है कि वही कृष्ण को पाने। कोई सांदेशन का ही टेका नहीं है कि वही कृष्ण को उपदेश दें, प्रत्येक शिष्य अपने आप में श्रीकृष्ण बन सकता है, यदि उसमें इन गुणों का समावेश हो।

आप रथवं बैठ कर सोचें कि जो गुरु ने कहा है कि क्या वह आप में है क्या आप वापस इस प्रवचन की सुनेंगे कि गुरु ने क्या कहा था? क्या आप में इच्छा है कि गुरु ने जो कहा था उसका एक-एक कार्यकी जीवन में उतारूँ? क्या आपकी ओर से मैं हिरण्य की तरह प्रेम है, क्या आपकी ऊंचाड़ी में नेज़स्विता है, क्या आपके अंदर ऊपर के के उपर्यूप में धूसकर अपराध का अनुभाव करने की क्षमता है। क्या प्रेम में गुरु को भुजाओं में भरकर अपने को लीन करने की क्षिया है?

यह नहीं है तो वेद व्यास मूर्ख है जो उन्होंने इस ग्लोब का उच्चना की, और मैं नृथ्य हूँ जो इस श्लोक को आपके सामने रखा। मैं यह पहली बार नहीं कह रहा हूँ कई बार कह चुका हूँ और कहता रहूँगा कि मैं अपना कर्तव्य करता रहूँगा जीवन में अलिम सांस तक भी और आग भी ऐसे ही बने रहना। आशिर गुरु के ग्रन्ति कोई महत्व, प्रेम होना नहीं चाहिए, समर्पित होने की क्षिया आप में होनी नहीं चाहिए, आप ने वही इर्षा, छल, कषट, होना ही चाहिए, उतना ही उन, अहकार आप में होना ही चाहिए और आप भरे हुए दोषक होने ही चाहिए ताकि मैं कुछ ढान ही नहीं स्वल्प, और भरा हुआ दोषक जलता नहीं है बुझ जाता है, इसलिए दोषक को ओधा रखते हैं कि वह जल सके। उस भरे हुए घड़े में भर्त्ता भी क्या, वह पहले से ही भरा है।

मैं कहता हूँ तो उप मजबूरी में सुनते हैं और कर लेते हैं। यह ने मैं मूर्खता है कि मैं भाषको कहता हूँ। मैं इस बात का एहसास करता हूँ और मैं इस बात पर गवर्भ भी करता हूँ कि आप नहीं सुधर रहे हैं।

यह बात मेरी बहन कठिन और हृत्तन है, पर यह बात मेरी नहीं है वेद व्यास की बात है, उस व्यक्ति की बात है जिसने पूरे वेदों को मथा कर के उच्चना की करोड़ों करोड़ों कर्षेयों की वाणी को संग्रहित करके चार वेदों में संयोजित किया, एक ग्रंथ बनाया उन वेद व्यास की बात कर रहा हूँ जिसके सामने श्रीकृष्ण स्वयं हाथ जोड़ कर खड़े हो जाते थे। उन वेद व्यास की बात कर रहा हूँ जिसके पृष्ठे गुरुओं की रचना की जिनके बारे में कहते हैं कि ब्रह्म के चार मुखों से चार वेदों का उच्चारण किया।

आपके जीवन में थोड़े भी पूर्व जन्म के पृण्य ही बाप, दादा, प्राचार्य के पृण्य ही हों तो आप जन्माष्टमी के दिन एक चीज़ को भी या प्रेम को भी उतार दे, उतारने अहंकार छोड़कर के भी एक बार भी प्रेम में बंध सके, एक बार भी उस सुपर्युक्त दीक्षा को उपने नशुनों में भर सके, एक बार भी श्रुगार युक्त होकर के आपत्तिवाला जा, औ उपनन्द का यहसास करा सके, एक बार ब्राह्मत्व में उननन्दमय यशस्वी होकर जा-

ज्योति कर सके तो मैं सोचूँगा कि मेरा कहना आर्थिक रहेगा। वेदव्यास के एक असर को भी समझ सके, अबने अबर उत्तर सके। अप वेद व्यास को पूरा नहीं तो एक काग भी उत्तर सके ले यह बहुत बड़ी बात होगी। और उत्तर सकेंगे तभी आप कृष्ण बन पाएंगे, बुद्ध बन पाएंगे, महावीर बन पाएंगे।

यह विनाना विपरीत बिन्दु है कि जो विनकल अहिंसा का पुनरारो हो, अहिंसा का धर्म चलाया जो, चीहो को मारने से भी दाष लगता है। इसा धर्म चलाया उसी अपेक्षा की ओर जहा गया, और दौर नहीं भट्टाचारी कहा गया। दौर जह लाता है जो लड़ाई इन दो करता है युद्ध में दातुओं को मारता है। प्रस्तु अहो दौर का एक विनकल विपरीत अर्थ बन गया है यह जापानी गान है कि, चीहो पर भी पव पढ़ जाए तो बहुत धूप लगता है कि जापान जो हम जो रहे हैं उसे हूँ मैसल नहीं पाप है।

शोधन जो तम ली

हो वह  
जो व न  
नहीं है। इसी  
प्रथंग में एक  
गुण हनुमान स्मृति  
जिसमें है तो केवल ५२  
श्लोक और वे स्वयं एक  
बहुत बड़े विद्वान् हैं। उन्होंने  
शिष्यों के छः गुण बताए हैं। जिस  
प्रकार वेद व्यास ने श्रीकृष्ण के अर्थ  
बताए हैं ठीक उसी प्रकार हनुमान ने दिव्य  
के गुण बताए, जिनसे वह श्रेष्ठता तथा पृणता  
प्राप्त कर सकता है।

उन्होंने एक इलाके में कहा —

बशस्त वैष भवतम् वरन् सर्वाय पूर्ण परा

चिन्तय विचिन्त्य रूपं सर्वश्च देव्य शवता

भव शिष्य रूपं जातवं प्रथेक प्रता पदवचनेश्च-

उन्होंने कहा कि मैं अपने जीवन में केवल शिष्य बनना चाहता हूँ दास बनना चाहता हूँ। आज जिस हम शिष्य कहते हैं पहले उसे दास कहते थे। दास का अर्थ है तेंग बाल, जो निरन्तर अपने पास जो है वह देता रहे उसे दास कहते हैं। किसी के पास तन है, किसी के रास मन है और किसी के पास धन है। इन तीनों ये मिलाकर जो खान बनती है उसे जीवन कहते हैं।

उन्होंने शिष्य के छु, लक्षण बनार है, इस इलाकों उन्होंने पहली बात यह कही है कि मैं चाहै कितना ही चौखु पर आने वाली गोदिया इस इलाके पर अमल नहीं करेंगा। विशेषज्ञ उनका चिन्तनिर्मल होगा ही नहीं दिन दहना वृष्टि और कल्पित ही जागा कि अपने जीवन में वे ऊर्जा शिष्य बन ही नहीं होंगे और बनेंगे तो दूसरा होगा जैसे चौटी सनुद को पार कर ले।

परन्तु चौटी सनुद को पार कर सकती है। उन्होंने शिष्य का पहला गुण बताया है कि अगर उसे शिष्य बनना ही है तो समय उसके लिए कोई मूल्य नहीं रखता, वेष्टन यही मूल्य रखता है कि गुरु क्या आज्ञा देते हैं और मुझे कैसे पालन करना है, गुरु कहता है तो मुझे जरूर करना है। मुझे नहीं पितकी नहीं करता है।

दूसरा उन्होंने कहा कि शिष्य की नींद व्यान निन्द्रा की नींद होती है जैसे कुत्ता कोई सो रहा हो और कह मास में निकल जाए तो एकदम वह अंख खोल देता है और देख कर पिछे सो जाता है। अगर पाप सी आदमी निकलेंगे तो जड़ पाप सी नार उत्ता है।

शिष्य की नींद अवान निन्द्रा की नींद होती है ऐसा नहीं है कि घोर नींद में सोता रहे

तीसरा शिष्य का गुण बताया है कि वह मन को इन्द्र विद्य बना दे कि बाहर की वृष्टि हवाएँ उस पर नगाय ही आप-पास की गंदी हवाएँ उस पर ऊपर नहीं कर पाएँ उस पर निकलोंगे कि कोई प्रभाव न हो। जो ३३ स्थानी भव होने हैं वे उस पर व्यापत नहीं और मन में किसी अव्यापक अस्थकार क्षमता, क्षम और क्षमता आप नहीं।

चौथा उन्होंने बताया कि यदि शिष्य के किसी भी शंग या चार फाइकर देखा जाए तो उसमें से केवल राम शब्द ही निकले या गुरु शब्द ही निकले। जब राम ने कहा कि इनमान का नाम महाभास्त्र

में याद रखते हों तो उन्होंने कहा मेरे पास कोई और प्रमाण  
नहीं है और कहा कि मेरे हृदय में आपके और मां सीता के  
अलावा कोई और हो तो मुझे दिखा दीजिए।

राम के मन में संदेह का एक छिन्दु उभरा और उन्होंने  
उसी क्षण प्रमाण दिया। उन्होंने कहा कि हो सकता है कि  
किसी कारण से आपके मन में संदेह उभरा, परन्तु आप केवल  
ले कि मैं आपका दास हूँ मैंने सुनीव को भी छोड़ दिया तो  
उस क्षण से मेरे जीवन में दूसरा कोई रहा ही नहीं।

पाठ्यवा उन्होंने कहा कि शिष्य प्रत्येक उस कार्य को  
करे जिससे गुरु को प्रसन्नता मिले तब सम्बन्ध अस हो  
विद्या गुरु और शिष्य का, जब हम शिष्य बन हो गए तो  
प्रत्येक उस कार्य करना है जो कार्य गुरु को कठिन लग  
रहा हो या जो काम हो नहीं रहा हो या जिस कार्य के  
कारण वे चिंता में हो तो उस समय मनी के रूप में सलाह  
करने हुए सेवक भाव से अपनी सलाह भी दे और फिर  
अगर उनकी गर्दन भी हिले तो उस कार्य को कर देना  
चाहिए।

छठा हनुमान ने कहा कि एक बार गुरु मान लिया  
गया तो शत्रु है अलस्य, अति भोजन, तर्क विनक, मन में  
लेप रखना गुरु के अलावा मन में कोई और चिंतन करना  
और किसी प्रकार का दिखावा का अलस्य का विचार  
करता उन्हें त्याग देना चाहिए। ये छ, प्रकार के शत्रु हैं  
जिन्हें त्याग देना चाहिए। ये शिष्य को समाज कर देते  
हैं। अगर आप अलस्य में बेटे रहे और कार्य नहीं करे,  
या पूजा का होंग करे, या असत्य का उच्चारण करे,  
या लेटे रहे और कहे कि मैं तो शवासन कर रहा हूँ,  
कैसे कर रहा हूँ या भेद लेने की कीशिश करे कि कौन  
जन्या बर रहा है कैसे कर रहा है ये सारी चीजें आपके  
जीवन को पतित हो करती हैं।

शिष्य तीव्र मति से गुरु के कार्य को सम्बन्ध करे,  
अपने सुझाव और विचार गुरु के समक्ष प्रकट करे,  
कि ऐसा करने से और कार्य हो सकता है। रचनात्मक  
सुझाव हों, भालोचन नहीं और गुरु जो आज्ञा दें उसी  
का पालन करे। अपने जीवन का इस प्रकार निर्माण  
करना हो जीवन की पूर्णता देना है। मन में कोई और  
चिंतन हो ही नहीं केवल यहीं चिंतन हो कि गुरु आज्ञा  
हैं और मुझे पालन करना हैं क्यों करना है यह कोई  
तर्क नहीं है।

मगर हमारे जो विकार है हमारा जो अन्दर का कपट है वह जीवन की उपलब्धि नहीं है जीवन की गलती है और जीवन की गलती को हम सुनह ही त्याग देते हैं। मणिन ने ऐसा हमारा शरीर बनाया है कि शरीर की गन्धी को हम निकाल देते हैं। सुनह उठने ही सबसे पहले वह कार्य करते हैं और जब गुरु के दर्शन होते हैं तो हमारे विकार, समाप्त होते ही हैं। मन की गन्धी गुरु के दर्शन करने पर समाप्त होती है, तब की गन्धी प्रातःकाल उठते ही स्वतः ही निकाल देते हैं। मन उससे स्वच्छ बनता है और तब उससे स्वच्छ बनता है। दिन भर अपने कार्य में जुटे रहना, गुरु का कार्य कर लेना और अपनी जाग को बद्ध नहीं करना असत्य बोलकर के, और जो गलती हो गई हो लिखकर के गुरु के सामने प्रायशिचिन्त कर देना जब जीवन की उच्चता है। जीवन में रचनात्मक काम हो यह तभी स्वकल्प करें। आप अपने कर्तव्य में लगे रहें, ब्राह्म अपने विकार समाप्त करें, गुरु के सामने आपकी आख्या रहें, जब आप धरती पर जा ही गए हैं तो गुरु के प्रति समर्पित हों और कोई जीवन में गर्व हवा या संगति का प्रभाव अपने हो ही नहीं और तीसरी बार भी यही कहता हूँ कि स्नान का प्रभाव आपके जीवन को बदल कर देगा न आप गुरुमुखी हो पाएं न जीवन मुखी हो पाएं। आप पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएं।

इसीलिए जीवन का प्रत्येक क्षण रचनात्मक काव बनने में लगना चाहिए। प्रनाद, आलय और असत्य वे दोनों ही आपके जीवन को समाप्त करने के लिए बहुत हैं। इसीलिए मन को गुरु के नाथ जोड़ दें। आपकी आख्या उनके सामने नमन ही, आप में श्रद्धा भाव ही, आपकी आख्या में प्रेम ही और समर्पण का भाव ही।

आपका भाव हनुमान की तरह हो जिनकी जांचे हमेशा राम की तरफ लगी रहती थी कि कब उनका आदेश हो और मैं उनके कार्य को करूँ। ऐसा ही भाव आपका ही और आप सही शिष्य बन जाएं हनुमान की तरह जिन्हें लर्योंहो लोग पूजते हैं। आप महावीर बन सकें, कृष्ण बन सकें आपका जीवन प्रायशिक्षणिक शिष्य बनने की ओर बढ़े। यहीं जीवन की श्रेष्ठता है, उच्चता है। इसीलिए एक वृषि ने कहा है —

प्रथल्य सदिवं भव नित्यं पूर्णं सदावे प्रसञ्च, रक्षोत्सवं  
आत्मं बनां पूर्णं सदैव रूपं, सदिवं रूपं, गुरुवे सदात्मं।  
कहिये जीवन की व्याप्ति की है कि जीवन ऐसा होना



जिसा कि तपती हुई दोषकरी में नमे पांव गतिशील हों। बारीर सूलसता रहता है, पैर में छाले पड़ने रहते हैं। जीवन में व्यज्ञ वाप सहन करने पड़ते हैं उसके बाद भी व्यक्ति गतिशील रहता ही है। वे लोग बहुत धन्य होते हैं जो ऐसे पुरुष के साक्षिधय में डौटे हैं जहाँ अभ्य दोता है निविदेतता होती है, निर्भकता होती है। सीन्दर्घ वह कहलाता है जहाँ जीवन में सफ्टता और उच्चरिता होती है। जहाँ सच्चिदता है, जहाँ प्यार है, पवित्रता है दिव्यता है वहाँ जीनदर्घ है।

रक्षाबंधन का उर्थ है कि हम ऐसा प्रेम का वातावरण बनाए ऐसी चरित्रता बनाएं जो हमारे अंदर की जीर्णता नहीं ताता न्यूनता मेलापन छूट, छल और कपट समाप्त हो जाएं, हमारे अंदर हमें अलाभ कुछ ही नहीं। जिस रक्त की बूढ़-बूढ़ में झूठ और छल है, जिस रक्त की बूढ़ों में झूठ और छल है, जिस रक्त की बूढ़ों में नकरन लिखी रहती है उन रक्त की बूढ़ों से आनन्द की अनुभूति नहीं हो सकती। वह रक्त बहने के लिए ही होता है, मरने के केवल ३० मिनट के अंदर पूरा खून पानी बन जाता है।

बोइ न कोई कारण होगा कि मैं आप लोगों के बीच हूँ मैं समझता हूँ, कि आप शिष्य हैं। मैं समझता शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ क्योंकि अभी आप पूरी प्रियता बन नहीं पाए हैं। शिष्य तब होते जब आपकी आखों में हिरण की नरह पवित्रता का बोध हो। आप अगर गाय या हिरण की आंख केरवे तो उसमें बहुत स्वच्छता होती है, आपनांच का भाव होता है जहाँ कोई गंदगी या मैलापन नहीं होता।

इस कर्म क्या करते हैं वह एक अलग तर्फ है और अस्तु इन्हें ४८ एक अलग बाल है।

रक्षाबंधन का दिन एक रक्षा का दिन है। रात्रि का अर्थ जो रक्षा कर सकता है। रक्षा का निवेदन कर सके। रात्रि शब्द रक्षा से बना है।

रक्षान्तोदै पूर्ण प्राणश्चर्व पृणत्व रूपं



### सदैव महाया

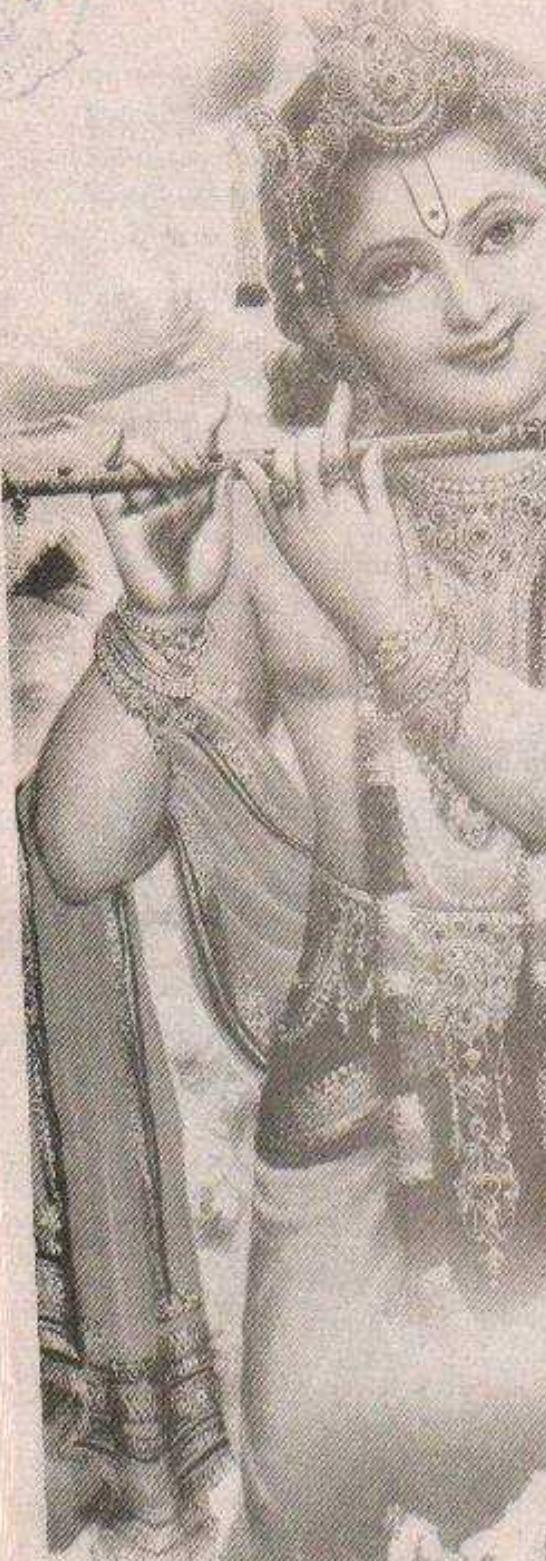
जो तन मन और जीवन की रक्षा करने में समर्थ हो और यदि ऐसा रक्षक मिले तो सही अर्थों में बड़ राखी का पर्व होता है त्योहार होता है। यों तो इस दिन भी सूर्य पूर्व से उगेगा जीवन वैसे ही बैतेगा। नगर निश्चिन्तना और निर्भीकता उस दिन आती है कि हम किसी के हाथों में हैं, कोई हमारे साथ है, हम अकेले नहीं हैं, लाहे हमारे मां बाप ही चाह गाई बहन ही, चाह गुरु ही चाह ईश्वर हीं और रक्षावंधन तो मन का एक धितन है, मन की विचार धारा है और जब मन में मैलापन आ जाए तो समझ लौजिए कि हम राक्षसत्य की ओर बढ़ रहे हैं।

आप में अहंकार की भावना है मन में वह आता है कि मैं क्यों शुक्र, उभी भी संदेह के बीज आपके मन में ढोए हुए हैं, और यदि इस दिन भी ये बीज विघ्नान रहते हैं तो भविष्य में भी समाप्त नहीं हो पाएँ।

रक्षावंधन का दिन यहला और आरिहारी दिन है जब आप मन से एक दूसरे के प्रति प्यार प्रकट कर सकते हैं, एक दूसरे के प्रति समर्पित हो सकते हैं, मन से किसी के रक्षक मान सकते हैं मन से अग्रसर होते हुए पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न के बहुत जोधपुर और विल्ली का नहीं है, अपितु पूरे भारत वर्ष संसार पूरे सिद्धांश्रम के योरी यति सन्यासी प्रत्येक यही कामना करते हैं कि गुरुदेव मेरे सामने रहे और मैं यथा संभव उस प्रकार का बातावरण बनाने की कोशिश करता हूं कि जो निम्न प्रकार प्रसन्न हो मन से उसकी उसी प्रकार प्रसन्न करने की कोशिश करता रहा हूं। परिवार में पाँच लोगों को भी प्रसन्न करना बहुत बड़ा कार्य है पूरे भारत वर्ष में लाखों लोगों को प्रसन्न बनाये रखना, बड़ा कठिन कार्य होता है। सभी लोग समर्पित और लिंगाटी होते हैं वे प्रसन्न होते हैं और आज्ञा पालन करने की तनाव होते हैं।

यह कोई विशेषना की बात नहीं कह रहा है, जब आपके



पाप ऐम का सागर उमड़ रहा है तो उसमें जो स्नान करेगा वह अपने आप में ब्रह्मस्य बनेगा ही बनेगा। आज आधुनिकत को दूर कर दें, कोई छोटा पीर बड़ा नहीं होता। आप इनमें बहुत नहीं हैं कि हिमालय में भी ऊँचा आपको सिर है औ आप इनसे धटिया भी नहीं हैं। कि कोई आधुकर नाम रख दें तो आप येर साथ उस स्तर पर खड़े हैं जहाँ जीवन है — राक्षसत्व की ओर भी वेयत्व की ओर। जहाँ जीवन में भैल आएगा, किसी के प्रति संदेह पैदा होगा, तो भमश लौजिए कि मैं राक्षसत्व की पगड़ी पर पाच सात कदम बढ़ा हूँ। यह जीवन का पतन है जीवन की दृतता है। जीवन में आपके एक गतिशीलता है।

यह भैर भीभाष्य है एक आनन्द प्रद क्षण है कि मैं आपके साथ हूँ। यह भी भैर भीभाष्य है कि आप आजागालन के लिए संदेह न तयर रखते हैं। मगर यह भी मैं कहना चाहता हूँ बहुत उजले कपड़ों में एक कलिमा का छोटा जा बिन्दु पूरे कपड़ों को सत्यात्मा कर देता है और उनकी सफेदी समाप्त हो जाती है। यह आप से कहीं पर भी कोई नफरत के लोग नपरत की कलिमा है तो यह क्षण ऐसा है जो याज भरे बाब आता है जब आप अपने अवर की अप्यन्तरा को समाप्त कर सकते हैं।

यथा माम प्रपञ्चस्ते ते तथाव्यं  
अनाप्यहम्।

जो जिस रूप में देखता है उसी रूप में आपने बाला व्यक्ति खड़ा होता है। देखने की दृष्टि आपकी होनी है आप किस रूप में सामने बाले को देखते हैं उन रूप में आप अपना मूल्यांकन कर रखते हैं। मगर फिर भी मैं चाहता हूँ कि यह छिप्पी का छोटा सा समृद्धाय प्रसन्नता से झील प्रोत रहे, आनन्दप्रद हो यदि ऐसे क्षण आपके साथ व्यक्ति हों एक तो यह आपका सौभाष्य ही है।

यह जीवन तो वैया ही जैसे सनुद में पानी का बुलबुला है जो बनता है और कूट जाता है। इस विशाल छहाप्पड़ में जीव का कोई वर्सितत नहीं होना। यह एक बूद के भमान होता है और एक छोटी सी बूद को बनाए रखने बहुत कठिन होता है। क्योंकि चारों तरफ एक छंचड होता है। एक तपतम होती है, उस नहीं से दूप की जलाय रखना बहुत कठिन काम होता है। द्वादश करना पड़ता है बहुत कठ

न्देला पड़ता है और जहां नकरत है वहां से अपने आपको बढ़ता पड़ता है यह मैं ही जानता हूं कि पिछले '३०-६०' साल की जो जीवन की यात्रा की त्रै किसी गम्भीर दोषहरी, किसी तपती हुई धूप और कांटों के बीच यात्रा की है जहां कांटों के बीच यात्रा की है जहां पर लहलुआन हुए हैं। जहां रहे वह शूल और कांटों से पैर छिले हैं, मोम्बा लो तो शायद १०८ बाण लगे थे और शर शब्द पर पढ़ गए थे और यहि मैं भद्रमन्यता नहीं करता तो शायद कई हजार तीर मेरे जीवन में लगे हैं और लगने जा रहे हैं।

मगर यह तो जीवन है वैसा होगा ही मैं लक्ष में राम की कल्पना करूँ तो मेरी भूखता है मैं आपको उपदेश देने के लिए नहीं बैठा हूं मैं तो यह बता रहा हूं कि इम किस प्रकार से अपने आपको समर्पित चर सकते हैं, प्रेम मय बना सकते हैं और रक्षावंधन के लिए अपने भवन की कलुषता को धो कर के स्वच्छ और अद्विनीय बन सकते हैं।

और यदि ऐसा बन सकते हैं तो महाबीर ने कहा है-

खुमं जीवेणत नः

हम पहले क्षमा मांगे क्योंकि फलंति निमितो वृक्ष फलंति  
गणिनो जनः

शुष्क काष्ठं च मृख्यं च न नमति कथाचनः

जो बहुत फलवार वृक्ष होता है वह अबसे पहले द्युकता है जो सुखी हुई लकड़ी है वह दृंठ की तरह खड़ी रहती है रक्षावंधन उत्सव का दिन है, आनन्द का दिन है प्रेम का दिन है और जब भी आपकी आख्य में गंडगी, आप, ऊँछापन आए, तुच्छता आए तो समय लीजिए कि आप ही घटिया हैं, ओछे हैं। राम कृष्ण वह महाबीर चैतन्य और ईशा मसहाने गवे नहीं थे, गवे हो नहीं सकते, लोगों की ओरें, गंधी थे, और वे राबके जीवन में आनन्द ही भरना चाहते थे।

मैं अपने रक्त की बूंदों से आपके हृदय पर प्रेम शब्द अंकित कर रहा हूं, फिर अपने जीवन के मध्ये क्षणों को आपके अवर उत्सवों की कोशिश कर रहा हूं फिर मैं आपकी आख्य में उत्तरकर पक प्रेम का पाठ पढ़ाने के लिए खड़ा हुआ हूं।

और मैं चाहता हूं कि आपसे इतना अधिक पथार लिने प्रेम मिले, समर्पण निले कि आपका हृदय नद्दार हो जाए अवसर्व हो जाए आख्य में अशुद्धार हो और आपके जीवन समर्पित हो और उसके बदले में आप मेरा सब कुछ जान कर स्वें मेरा सब कुछ प्राप्त कर स्वें मैं ऐसा ही आपका आशीर्वाद देता हूं ऐसी ही कल्पाण कानना करता हूं।

महावीर यरमहान्य स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिका आपके परिवार का आशीर्व अंग है। इसके साथ सामाजिक सम्बन्ध को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकृत किया गया है, क्योंकि इससे प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाधित है।

# वार्षिक विश्वापन

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

## तिब्बती धन प्रदाता लामा यंत्र

विव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहियान करा दी देती है... इनके लिए कहने की आवश्यकता नहीं होती, यह तो अपनी उपस्थिति मात्र से, अपनी सुगन्ध से ही पास के लोगों को एहसास करा देता है, अपने होने का... उत्तम कोटि के मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित दिव्य यंत्रों के लिए भी किसी विशेष साधना विधान की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे यंत्र तो स्वयं ही दिव्य रसिमयों के भंडार होने हैं, जिनसे रसिमयों स्वतः ही निकल कर सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति एवं स्थान को चैतन्य करती रहती हैं। हिमालय की पहाड़ियों पर बसा तिब्बत देश क्षेत्रफल में छोटा बाले व्यक्ति एवं स्थान को चैतन्य करती रहती हैं। हिमालय की पहाड़ियों पर बसा तिब्बत देश क्षेत्रफल में छोटा अवश्य है परन्तु तंत्र क्षेत्र में जो उपलब्धियां तिब्बत के बीच लामाओं के पास हैं, वे आम आदमी को आश्वर्यचकित कर देने और दातों तर्फे उन्हें उंगलियां दबा लेने के लिए पर्याप्त हैं। ऐसे ही एक सुदूर बीच लामा मठ से प्राप्त गोपनीय पद्धतियों एवं मन्त्रों से निर्मित व अनुप्राप्ति यह यंत्र साधक के आर्थिक जीवन का काथाकल्प करने के लिए पर्याप्त है।

इस यंत्र के स्थापन से तिब्बती लामाओं की धन देवी का धरद साधक के घर को धन धान्य, समुद्रि से प्राप्तिपूर्ण कर देता है, फिर अभाव उसके जीवन में नहीं रहते, क्रष्ण का बोझ उसके सर से ढट जाता है और उसे किसी के आगे हाथ नहीं पसारने पड़ते।

**किसी रविवार की रात्रि को यह यंत्र लाल कपड़े में लपेट कर 'ॐ मणिपद्मे धनदायै हुं' पढ़ और उच्चारण कर मौलि बांध दें। फिर इसी अपने घर की तिजोरी में रख दें। इससे निरन्तर अर्थ दृढ़ि होनी।**

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी प्रिय, रिश्वदार या ख्याल को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप परिवेश सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनाकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. ४ रप्पल अक्षरों में भ्रकूर उपरां पाल्स ब्लैज दें, शेष कार्य हम खत्यार करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at :

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त 45/- Annual Subscription 195/-+45/-postage

### सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) - 0291-432209, टेलीफॉक्स (Telefax) - 0291-432010



## इसलिए उनका नाम है

सृष्टि का प्रारंभ भगवान् विष्णु से हुआ है, इसी कारण उन्हें उनन्त कहा जाता है, उनन्त का तात्पर्य है, जिसका न कोई आवि है और न कोई अत। जो आदि और उन्न से परे होते हैं उन्हें ही उनन्त कहा जाता है, और यह उपाधि भगवान् विष्णु को और शिव को ही प्राप्त है। अलग-अलग समय में अलग-अलग रूप में भगवान् विष्णु के अवतार अवश्य हुए हैं। लेकिन वे अवतार किसी एक विशेष कार्य के लिए वे और कार्य पूर्ण होने ही पृथ्वी पर युनः धर्म की स्वापना कर स्थिराश्रम

भगवान् विष्णु प्रथमते ब्रह्मणे की सौर जगत का पातन भगवती लभी के सहयोग से भगवान् विष्णु करते हैं, भगवान् विष्णु वे जो जगत पातन की परंपरा प्रारंभ की वह क्षमार में उत्पन्न होने वाला प्रत्येक प्राणी उस धर्म की विभाव है, भूति की वृद्धि में सहयोग करता है, अपने वरिष्ठ का पातन पोषण करता है, इसका तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति में बड़ा वा छोटा अश है, विष्णुका पातन अश है, और भगवान् विष्णु का संहार अश है। प्रस्तुत तेस में भगवान् विष्णु के अवतार में एक विशेष विशेषता है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति के मन में यह भ्राता आत्मको की धृति जर से आत्माना अत्र यज्ञ सक्ता है।

भगवान् विष्णु को पुरुष भी कहा गया है, ज्योंकि सृष्टि के प्रथम पुरुष भगवान् विष्णु ही थे और उनके साथ ही उन्होंने अपने ही शरीर से शक्ति उत्पन्न की जिसे लक्ष्मी, पद्मा, कामला....इत्यादि कहा गया है। भगवान् विष्णु में हजारों गुण हैं, लेकिन शास्त्र कहते हैं कि जिस व्यक्ति में हजारों गुणों के उपरांत भी छः गुण प्रमुख हैं, वह तत्त्व के अनुसार यह छः गुण है १. ज्ञान, २. अल, ३. ऐश्वर्य, ४. वीर्य, ५. राज्ञि, ६. ओज, प्रमुख हैं। विष्णु पुराण के अनुसार छः गुणों में प्रमुख हैं १. ऐश्वर्य, २. धर्म, ३. कीर्ति, ४. कान्ति,

भगवान् विष्णु के धाम जिसे कई शास्त्रों ने वैकुण्ठ भी कहा

५. राजा, ६. वैराज्य है और इन छः गुणों को 'भग' कहा गया है। यह छः गुण जिनमें पूर्ण होते हैं, वे ही वास्तव में 'भगवान्'



है, अन्य व्यक्तियों के लिए भगवान् शब्द का उपयोग आवश्यक है। भगवान् शब्द का सूचक भाव के लिए ही किया जाता है। भगवान् शब्द का प्रभास्ता के लिए ही मुख्य पदोग्गति है।

भगवान विष्णु में सृष्टि की रचना एक संकल्प के रूप में की और 'चतुर्थज' कहलाये। इसके पंछे भी बड़ी ही विशेष बात है सृष्टि में चर का अंक दो ऐसा अंक है जिसे सृष्टि का निर्माण इसा और कम बना। चतुर्मुनशरी भगवान विष्णु के आदर ज्यो ही सृष्टि रचना का संकल्प हुआ, त्वं ही उनके नामि कमल में चतुर्मुख श्री ब्रह्मजी का जन्म हुआ, उनके

हुयों में चार वेद - साम, कव, यजु. एवं उत्तर्य थे और उनके चारों मुख चारों ओर - उचर, दक्षिण, पूर्व लक्षा पश्चिम की ओर थे।

इसके बाद श्रीद्वारामे भगवान् विष्णु के आज्ञानुसार प्रणियों को चार आकारों अर्थात् चार वर्गों अष्टज्ञ, जशाधूज, स्वेदन एवं उद्भिज्ज में विभाजित किया और उन प्रणियों के नीतन की व्यवस्था भी चार अवस्थाओं में - जाग्न, स्वान, सुष्ठुपि एवं तुरीय में की। तत्पश्यात् श्रीविष्णु ने मानवीय सृष्टि की रचना अपने चारों मानस पुत्रों भग्नकादि-सनाक, सनन्दन, सनन्दकुमार, एवं स्नानातन से प्रारंभ की, लेकिन वे चारों भगवान के चारों द्वाम श्रीबद्धरिकाश्रम, श्रीरामेश्वर, श्रीद्वारका एवं श्रीजगन्नाथपुरी की ओर भगवान् विष्णु की भक्ति करने के लिए चल दिये।

जब सनकादिकों से सृष्टि  
रचना का कार्य पूर्ण नहीं हुआ, तब  
झलाने चार वर्ण - ब्राह्मण, क्षत्रिय,  
वैद्य एवं शुद्र उत्पन्न किये और  
चारों आश्रमों - ब्रह्मण्य, गृहस्थ,  
वानप्रस्थ एवं संन्यास का गठन  
हुआ।

चलता रहा और चलते-चलते भगवान् विष्णु के मक्क चार  
देवियों में विमल हुए—अर्थात्, आर्त, जिजासु और जानी  
ऐसे चार प्रकार के भक्तान हैं।

इन चार प्रकार के भक्तों को प्रसन्न करने के लिए  
भगवान् विष्णु को चतुर्भूजलूप धारण कर चारों हाथोंमें चार  
वर्णनुयाँ-शंख, चक्र, मदा एवं पद्म धारण कर भक्तों को चार  
प्रदाय-धर्म, जर्थ, काम, एवं मोक्ष देने पड़े।

धगदान विष्णु के ऊपरी दाहिने हाथ में चक्र है, जिससे उसकी रक्षा करते हैं और नीचे दाहिने हाथ में गदा



अनन्त है और इसी कारण समय समय पर अवतार लेते हैं। यदि कोई व्यक्ति भगवान् के गुणों का वर्णन करते लगे तो भी वह थक जायेगा क्योंकि भगवान् के गुण वैसे के वैसे अनन्त रहते हैं। महा कवि कालिदास ने 'रघुवंश' में महाकाव्य में देवताओं द्वारा भगवान् का वर्णन करते हुए लिखा है कि—  
महिमाने यदुवीर्यं तव संहियसे वचः।  
श्रेष्ठं तदशक्तत्या वा न  
गुणानाभियत्तया।

उथावृत्त उपके महात्मी प्रशंसना करके जो हम चुप हो रहे हैं, वह उन्नतिये नहीं कि हमने आपके सब गुण बरहन छालें बल्कि इसलिये कि हम उब थक गये और आगे बढ़ाने की इच्छा हममें नहीं रह गयी है।

जिस प्रकार समय—समय पर व्रकृति में परिवर्तन होता है, वैसे ही गन्धर्व की बुद्धिमें परिवर्तन होता है उसी प्रकार भगवान् अनन्त विष्णु आपना कोई प्रयोगन न रहने पर धर्म संरक्षण एवं साधु अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्तियों कि रक्षा और सृष्टि पर कृपा करने के लिए इरीर धारण करते हैं। इन्हींने श्रीमद् भागवत् में जटभी हतार जड़ियों को उपदेश देते हुए

हे, जिभासु भन्तो जो अपने नक्षत्र का शान प्रदान करते हैं। भगवान् के उपर भाष्ये हाथ में गंख है, जिससे वे जन्मी भन्तों को मोक्षराति देते हैं, एवं नीचे बढ़े हाथमें पदम अचान्तु कमल का फूल है, जिससे अथोर्गी भन्तोंकी इन पदार्थ दल्पादि प्रदान करते हैं। वस्तुतः भगवान् विष्णु को भन्तोंकी प्रसन्नता के लिये ही चहुंमुक्तृप होना पड़ा।

भगवान् विष्णु के विष्णु सहृदयनाम स्तोत्र ने एक स्पष्टवर नाम है, यह सभी नाम उनके गुणों के अनुसार हैं। मूल भूचक होने के कारण ही यह सभी नाम 'जीर्ण' कहे जाये हैं। भगवान् अनन्त है उनके चरित्र भी अनन्त हैं। अतः उनके नाम भी

महर्विं सत्तजी, कठने हैं कि—

अवतारा द्वासर्थयो हरे: सन्दवनिधेद्विजाः।  
यथाविदासनः कुल्याः सरसः स्वुः सहस्रशः॥

अर्थात् जिस प्रकार किसी एक ग्रन्थये जलाशय से असरद्यु छोटे-छोटे नल-प्रवाह निकलकर चारों ओर धावित होते हैं, उसी प्रकार नात्वनिधि परमधर्म से विविध अवतारों की उत्पत्ति होती है।

इस प्रकार भगवान् विष्णु के दीबीस अवतारों का शान्त्रो में वर्णन है जैर प्रत्येक जनवार में उपने काल में किसी विशेष प्रयोगन लक्षा किशोर कार्य के लिए ही अवतार लिया,

हर अवतार के पीछे बहुत बड़ा रहस्य गाथा और वर्णन है यहो संक्षेप में इन चौबीस अवतारों के नाम इस प्रकार हैं—

१. सनत्कुमार, २. वाराह, ३. नारव, ४. नर-नारायणी,  
५. कपिलदेव, ६. वताचेय, ७. यजपुरुष, ८. ऋषभदेव,  
९. आदिराज पृथु, १०. मत्स्य, ११. कूर्म, १२. घनवत्ति,  
१३. श्रीमोहिनी, १४. भगवान नृसिंह, १५. भगवान वामन,  
१६. भगवान पशुराम, १७. भगवान व्यास, १८. भगवान हनुम, १९. भगवान श्रीराम, २०. भगवान श्रीकृष्ण, २१. भगवान हयशीव, २२. भगवान हरि, २३. भगवान बुद्ध, और २४. भगवान कलिक

उन सब अवतारों में सबसे अधिक विशेष बात यह है कि विष्णु की मूल शक्ति लक्ष्मी प्रत्येक अवतार में उनके साथ ही रही है, जैसे नारायण अवतार ने भगवती रूपमें, कृष्ण अवतार में राधा रूपमें, राम अवतार में सीता रूपमें, श्रीमोहिनी अवता में मोहिनी रूपमें, उल्लेख आता है, जहाँ भगवान विष्णु, किसी भी रूप का वर्णन आयेगा तबही भगवतों लक्ष्मी का उल्लेख अवश्य हो आयेगा। अर्थात् जहाँ अनन्त श्री विष्णु है, वह श्रीलक्ष्मी है, और जहाँ श्रीलक्ष्मी है वहाँ अच्युत अर्थात् भगवान विष्णु है, इसीलिए लक्ष्मी को अच्युत वल्लभा आविन्नवर्णा, ज्यलन्ति, तृष्णा, देवजूट, नेत्यपृष्ठा, पश्चिनी, पुष्टि, भगवती, विष्णुपनेनकूला, श्री-हरिवल्लभा इत्यादि नामों से कहा गया है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विष्णु की साधना करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है, और लक्ष्मी की साधना करने से आदि देव भगवान विष्णु जो कि जगत के पालक है, प्रसन्न होते हैं।

श्री विष्णु और लक्ष्मी के सम्बन्ध में पूराणों इन्यादि में कई कथायें आती हैं। जिस प्रकार समझ ले जब अमृत घट निकला, देव और दानव उसे प्राप्त करने के लिए आतुर हो उठे तो भगवान विष्णु ने ही मोहिनी रूप धारण कर सब को अपने वश में कर लिया और देवताओं को ही अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्तियों कोही अमृत पान कराया।

मनुष्य जन्म लेता है तो वह भगवान विष्णु का ही प्रक अंश होता है, क्योंकि उसका प्रधान कार्य सृष्टि में वृद्धि करना और उसको पालना है। यदि वह ऐसे पालनकर्ता है तो वह उपने जीवन में विष्णु के चरित्र को पूरी तरह से उत्तर कर धर्म, अर्थ, क्राम और मोक्ष प्राप्त कर सकता है जो स्वयं अपना पालन और दूसरों का पालन नहीं कर सकता है, उसका जीवन अनुकूल नहीं है, यहाँ पालन करने का तात्पर्य केवल जन्म और धन से नहीं है, अपितु

जान द्वारा, कर्म द्वारा अपने जीवन में और दूसरों के जीवन में अनन्द का संचार करना है।

जैसा की मैंने ऊपर लिखा है कि विष्णु और लक्ष्मी का संयोग सदैव रहता ही है, दोनोंको विभक्त करके नहीं देखा जा सकता है, विष्णु की शक्ति विभिन्न रूपों में लक्ष्मी ही है। येदों में जिस प्रथम पुरुष का उल्लेख आया है, वह विष्णु ही है, और उनकी शक्ति प्रकृति ही है, इसी प्रकार शिव और शक्ति का भी संयोग है, हिन्दु धर्म पांच संप्रदायों में विभक्त हो गया है, यह संप्रदाय विष्णुव संप्रदाय, शैव संप्रदाय, शाक्त संप्रदाय, सौर संप्रदाय और गाणपत्य संप्रदाय है। लेकिन इन सब में आराधना का उपमा और सिद्धांत एक ही है कि किस प्रकार जीवन का अर्थ समझा जाय और कुण्डलिनी शक्ति को जागत कर मूलाधार से सहस्रार तक जागत जिया जाय। यहाँ कुण्डलिनी जागत का तात्पर्य वह योगिक क्रिया है। जिस में मनुष्य अविद्या अर्थात् अज्ञान का नाश कर विद्या मार्ग अर्थात् ज्ञान की ओर चलता है। जब वह ज्ञान मार्ग पर चलता है तो उसे भौतिक जीवन के और आध्यात्मिक जीवन के साथ रहस्य अपने आप प्रगट होने लगते हैं।

पुरुष अर्थात् नर भगवान विष्णु वो और शिव को अपना आदर्श मानते हैं। हर मनुष्य का यही लक्ष्य रहता है कि मैं विष्णु के समान ऐश्वर्य वान, शीर्यमुत, कीर्तिमुत, लक्ष्मीमुत बनूँ। इसके साथ ही अपने जीवन में शिव के समान पूर्ण आमन्दमुत रहूँ। ब्रह्मा ने रचना तो कर दी है लेकिन पालन और संहार अर्थात् जीवन में सदरुणों का विकास और कुर्मुणों का विनाश, जीवन में उन्नति का मार्ग और रचना तथा वादाओं का संहार यह दोनों ही शक्तियों उसके पास रहनी चाहिए। इसीलिए पूरे भारत वर्ष में अनन्त चर्नुदेवी और महाशिवरात्रि का विशेष विधान है। जो पूर्ण इन दो महाकलों में भी कोई प्रेरणा नहीं लेता, संकल्प नहीं लेता, वह अपने जीवन में कुछ काल के लिए उत्तरांश और धोग विलास तो अवश्य प्राप्त कर लेता है। ही सकता है कि यह उसके पूर्व जन्मों के शुभ कार्यों का क्रूल हो, लेकिन पूर्ण आनंदिन आनन्द की अनुभूति प्राप्त नहीं कर सकता है। पूर्ण आनन्द की अनुभूति तो वही व्यक्ति कर सकता है जिसमें विष्णु नव ही अर्थात् विष्णु के समान जीवन पालन करने की क्षमता हो और शिव के समान जीवन को आनन्द से जीने की आकाशा हो। विष्णु तत्त्व और शिव तत्त्व दोनों मिलकर ही जीवन को पूर्ण बनाते हैं।



यदि जीवन में श्रेष्ठ पालन कर्ता बनना है  
 यदि जीवन में श्रेष्ठ वृद्धि करनी है  
 यदि जीवन में श्रेष्ठ गुणों का विकास करना है  
 यदि जीवन में लक्ष्मी को अपनी सहस्री बनाना है



## तो अवश्य कीजिए

# अनन्त चर्तुदशी साधना

पिछले लेख में आपने भगवान विष्णु के तत्त्व के सम्बन्ध में विवेचना का अध्ययन किया है और उनन्त चर्तुदशी भगवान विष्णु का साहै गेप पुस्तक रूप में अवतरण दिया गया जाता है। बारह साहिता में पुरुषों के लिए महाशिवशत्रि तत साधना, अनन्त चर्तुदशी तत साधना और नवशत्रि आष्टमी साधना विशेष मानी जाती हैं। इसके अतिरिक्त गृहस्थ व्यक्तियों के लिए हजारों तत पर्व जनूर्जन है लेकिन इन तीन दिवसों पर साधनाएं अवश्य करनी चाहिए—

यह तो स्पष्ट है कि विष्णु नन्द के बिना जीवन का पालन नहीं हो सकता है क्योंकि जहाँ विष्णु है वहाँ भगवती लक्ष्मी है। संसार में प्रत्येक व्यक्ति जो कर्तव्य अपने पारेवार का शब्दलप से पालन करना है और वह उसी उसे भगवान विष्णु से ही प्राप्त हो सकती है, क्योंकि वे जगत के पालन करता है और प्रत्येक मनुष्य भगवान विष्णु का अंग है। अनन्त चर्तुदशी भगवान विष्णु का उच्चतरण दिवस के स्थान ही वह दिवस मना जाता है, जिस दिवस को उन्होंने जगत में कामना, इच्छा, परिश्रम, धर्म, अर्थ, काम का बोजरोपण सुषिके पुरुषों में किया जिससे वह पशुभाव छोड़कर पुरुष भज्व में ऊँचा और अपना ज्ञान्य भर्तीभालि स्वरूप नै लगा।

इस वर्ष अनन्त चर्तुदशी का पर्व दिनांक 20-09-

ग्रन्थ 'अग्रसर' 2002 संस्कृत व विज्ञान '27' ५०

—२००२ शुक्रवार भाद्र पक्ष चतुर्दशी को आ रहा है, इस दिन साधक भगवान विष्णु के भगवन्त रूप की साधना अवश्य करें। इसके अतिरिक्त यह साधना किसी भी रविपुष्य योगमें, यिन्ह योग में, शुक्रल पक्ष की चतुर्दशी को प्रारंभ की जा सकती है। यह साधना जीवन को श्रेष्ठ पालन कर्ता बनाने की साधना है। स्वयं का निर्माण करने की साधना है।

इस दिन साधिक आहार तें, और पूरे विधि विधान सहित साधना सम्पन्न करें। साधना का ऊल अवश्य प्राप्त होता है क्योंकि साधना देह में रोपा गया एक बोग स्वरूप है जो पहले अकुरित होता है फिर धीरे-धीरे बढ़ता हुआ विशाल वृक्ष बनकर पूरे जीवन में ढां जाता है।

साधना प्राप्ति करने से पहले वयोदशी के दिन ही



सम्पन्न करता है, जिसी साधना क्रम ने बहिने हाथ में शरीर के अंगों को स्पर्श करना दे, उपर्युक्त भी बहिने हाथ से किया जाता है, यह विशेष ध्यान रहता है।

### विनियोग

अस्य श्री हादशाक्षरमन्त्रस्य  
प्रजापतिर्ब्रह्मः जायत्री छन्दः वासुदेवः  
परमात्माक्षता लवेष्टि विनियोगः।

### ऋच्यादिन्यास

ॐ प्रजापति ऋषये नमः शिरसि।  
जायत्री छन्दसे नमः मुखे।  
वासुदेव परमात्मा वेवतायै नमः हृषि।  
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

### कर्तृत्यास

ॐ अग्नुषाभ्यां नमः।  
नमः तज्जनीभ्यां नमः।  
भगवते मध्यमाभ्यां नमः।  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

### हृदयादिन्यास

नमः	शिरसे	स्वाहा
भगवते	शिखायै	वषट्
वासुदेवाय	कवचाय	हु
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	अरत्राय	फलः

### ६४०

विष्णु नारद चन्द्रकोटि सदृशं शंखं रथांगं गदाम्।  
आम्भोजं दथतं सिताल्लनिलयं कान्त्या नगन्मोहनम्॥  
आबद्धां गदहारकुण्डलमहामौलिं स्फुरत्कं कणम्।  
श्रीवत्सांकमुदारकीस्तुभधरं बन्दे भनीन्द्रिः स्तुतम्॥

### भावार्थ

हाथों में जीतिशरनचन्द्रधवलं शंखं, चक्रं, गदा, पदम् लिये, जिस पर मकुट, कानों में कुण्डल, नले में हार एवं उदार कीलन्मध्यमणि, ओहों पर केषुर एवं कलाईं पर चमचमते करभूषण कंकणं धारण किये, उपर्युक्त भगवत्ते विशेषविमोहन करने वाले, जहाँ गुनि में अविविनित, श्री वस्तोक, परम महान् श्रेत्रक वद्यस्थल पर लगत वासावत (विह विशेष), ध्वनि कमलनिवाली मुगीन्द्री के छारा संस्कृत भगवान्

जनित सामग्री की व्यवस्था अवश्य कर लें। जिससे नुसर प्राप्त विशेष विद्वान के सहित वह साधना सम्पन्न कर सके।

### साधना सामग्री

इस साधना में मूल रूप से विष्णु महा यत्रे आवश्यक है, जिसे एक लकड़ी के पट्टे पर पीला वस्त्र बिछा कर स्थापित करें और पूरे अनुष्ठान में उसी रूप में स्थापित रहने दें, इसे हठाना ही नहीं है, इसके अतिरिक्त उबौर, गुणल, कुमकुम, केसर, चन्दन, मौली, सूपारी और अर्पण हेतु प्रसाद आवश्यक हैं।

इस साधना क्रम में विष्णु के भयी स्वरूपों का पूजन किया जाता है, वह पूजन करते हुए '२१विष्णु कमल बीजं चन्दनं' द्वयों कर अपित करना है, इस हेतु काफी मात्रा में चन्दन घिस कर पहिले से ही रख लेना चाहिए।

### साधना विधान

श्री विष्णु की साधना में विनियोग, साधना तथा पंचावरण पूजन का विशेष विधान है, सभी दिवाली में स्थित विष्णु



विष्णु का मैं बन्दन करता हूँ।

### पीठ शर्ति पूजान

अपने सामने जो यन्त्र स्थापना के लिए पीठ ब्रनाई गई है, उस पर बस्त्र लिढ़ा कर सबसे पहले पीठ पूजन किया जाता है, और वहाँ वह पूजन पूर्व दिशा से प्रारम्भ करते हुए आठ दिशाओं तथा अन्त में पीठ के मध्य दिशा का पूजन किया जाता है, यह क्रम निम्न घटकर से होगा, प्रत्येक पीठ शक्ति का ध्यान कर उस दिशा में पृष्ठ बढ़ायें—

ॐ विश्वलायै नमः ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥

ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥

ॐ योगायै नमः ॥ ॐ प्राच्यै नमः ॥

ॐ सत्यायै नमः ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥

ॐ अनुशङ्खायै नमः (मध्य में)

अब यन्त्र स्थापना प्रारम्भ होती है, हाथ में पृष्ठ लेकर उपर चन्दन में हुबों कर पीठ के मध्य में भासन स्थापित करे और निम्न मंत्र बोलने हुए यन्त्र को पृष्ठ के इस आराम पर प्र्याप्ति करें—

॥ ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने

वासुदेवाय सर्वान्तर्यांयोगीटात्मने नमः ॥

अब पुनः 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः' का पांच

बार उच्चारण करे, तदा यह ध्यान करे कि श्री विष्णु द्वय यन्त्र स्वरूप में स्थित है और उन्हें पूज्य उपर्युक्त करने हुए आवरण पूजा के निए आज्ञा प्राप्त करें।

### आवरण पूजा

श्री विष्णु यन्त्र के चार कोणों ने चार आवरण द्वाजा तथा यन्त्र प्रवेश द्वार की ओर एचम आवरण पूजा सम्पन्न होती है, साथक की इसी द्वार में मन्त्र बोलते हुए एक तुलसी पत्र तथा एक विष्णु कमल बीज चन्दन में डुबो कर अपिन करना है।

### प्रथमावरण पूजा

ॐ हृष्याय नमः ॥

ॐ नमः शिरसे स्वाहा ॥

ॐ भगवते विष्ण्यायै वषट् ॥

ॐ वासुदेवाय कवचाय हु ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट् ॥

तत्प्रयात ऊनलि में पृष्ठ लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पृष्ठ ऊनलि चढ़ायें—

ॐ अर्भाष्ट शिरिं मे वेह शरणागतवत्सलो

भवत्या समर्पय तुभ्यं प्रथमावरणाच्चनम् ॥

पूजिता: तर्पिता: सन्तु ।

### द्वितीयावरण

ॐ जप्तेवाय नमः वासुदेव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ संवत्सराय नमः संवर्णेण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ प्रथमनाय नमः प्रथमन श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ अनिरुद्धाय नमः अनिरुद्ध श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 श्री शान्त्ये नमः शान्ति श्री पादुका पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ श्रिये नमः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ सरस्वत्ये नमः सरस्वती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ रथ्ये नमः रथि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

तत्पश्यात अंजलि में पूज्य लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पूज्यांजलि चढ़ाये—

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।  
 भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥  
 पूजिता: तर्पिता: सन्तु।

यह तृतीयावरण की पूजा है

### तृतीयावरण पूजा

ॐ केशवाय नमः केशव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ न नाशयणाय नमः नाशयण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ मां माधवाय नमः माधव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ गोविन्दाय नमः गोविन्द श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ वं विष्णवे नमः विष्णु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ मं मधुसूदनाय नमः मधुसूदन श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ तं त्रिविक्रमाय नमः त्रिविक्रम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ वां वामनाय नमः वामन श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ श्रीश्रीधराय नमः श्रीधर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ हं हृषीकेशाय नमः हृषीकेश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ पं पद्मनाभाय नमः पद्मनाभ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ तं वामोदराय नमः वामोदर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

तत्पश्यात अंजलि में पूज्य लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पूज्यांजलि चढ़ाये—

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।  
 भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥  
 पूजिता: तर्पिता: सन्तु।

यह तृतीयावरण की पूजा है

### चतुर्थावरण

ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ रं आज्ञेय नमः अज्ञि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ यं यमाय नमः यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ लं निर्वास्ये नमः निर्वासि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ वं वस्त्राय नमः वस्त्रण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ षं वाव्ये नमः वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ कुं कुबेराय नमः कुबेर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ हं ईशानाय नमः ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ ओ ब्रह्मणे नमः ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः  
 ॐ ही अनन्ताय नमः अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

तत्पश्यात अंजलि में पूज्य लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पूज्यांजलि चढ़ाये—

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

पूजिता: तर्पिता: सन्तु।

यह चतुर्थावरण की पूजा है।

### पंचमावरण

ॐ वं वज्राय नमः ऋं शं शक्त्ये नमः  
 ॐ वं दण्डाय नमः ऋं खं खडगाय नमः  
 ॐ षं पाशाय नमः ऋं ओ अंकुशाय नमः  
 ॐ गं गदाये नमः ऋं त्रिं त्रिशूलाय नमः  
 ॐ दं पद्माय नमः ऋं चं चक्राय नमः

तत्पश्यात अंजलि में पूज्य लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पूज्यांजलि चढ़ाये—

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्॥

पूजिता: तर्पिता: सन्तु।

यह पंचमावरण की पूजा समाप्त है।

इब धूप इत्यादि देकर नमस्कार कर आग्ने भाव से बैठ कर 'वैजयन्ती माला' से 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का जप करना चाहिए, जप की संख्या भाधक की इच्छा पर निर्भर करती है और यह इस निरन्तर चलाने रहना चाहिए, शान्त्रोक्त विधान है कि १२ अक्षर के इस मंत्र का लम्ब संरूप सहस्र अर्थात् १२ हजार मंत्रों का जप करने से साधक को पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है, तथा भगवान् विष्णु की अभीष्ट कृपा सिद्धि से साधक मनोवाहित कल प्राप्त करता है, सख ग्रकार के पाप दोष दूर हो कर साधक श्री विष्णु का तेज शहप करने में समर्थ रहता है, यह साधना तो निश्चय ही सर्वोत्तम साधना है।

(साधना सामग्री न्योगापार रु. ५५०/-)



# नारायणकी साधना

जिसे सम्पन्न करने से व्यक्ति भवत है अपनी सभी क्रियों को मूल से ही नष्ट कर, सभी प्रकार से शेषता प्राप्त कर सकता है। क्रिया तो व्यक्ति के जीवन में अनेक है— उत्तिरुद्धार, रोग, शरु, भव, मुकुड़मे में अदि, अवशुण भी जीवन में अनेक है— काम, लोधि, मोह, लोभ, प्रमाद आदि, इनको इन मन से पूर्ण रूप से समाप्त कर व्यक्ति अपना पुनः जीवन कर सकता है, और धन, प्रेतवर्य, शत्रु—दमन, रोगमुक्ति की स्थिती प्राप्त कर एक निर्मल एवं पवित्र जीवन की ओर अग्रसर हो सकता है...

और अगर व्यक्ति यह साधना सम्पन्न कर लेता है तो किर कोई विपरीत परिस्थिति उसके लिए बाधा नहीं बन सकती। वह उन सब में अचूत रहता हुआ भिरन्तर अपने मार्ग पर गतिशील रहता है, जो प्राचीन काल से ही अत्यधिक सम्मानीय रही है—

‘प्रलाद’ ‘नारायणकी’ प्रयोग सम्पन्न करके तीनों लोकों का स्वामी बन सका।

‘पांडवों’ ने भी प्रयोग को सम्पन्न किया, जो महाभारत जैसे दुर्धर्ष महासंग्राम में विजय श्री ग्राम करने में सहयोगी बना और बार—बार कठिनाईयों का सामना करते हुए भी वे लोधि ग्राम कर सके...

तिष्ठत के लामा ‘ओलम्पा’ के अनुत्तर यह प्रयोग अपने आप में ही सर्वश्रेष्ठ है, और जो कोई भी इसको जीवन

में एक बार सम्पन्न कर लेता है, उसे फिर जीवन में कुछ और करने की आवश्यकता नहीं रहनी है।

ऐसे किनने ही उद्दरण है, जब इस साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन का अमीट ग्राम कर सकता।

‘नारायणकी’ का अर्थ है नारायण का मेत्र, और विष्णु के बारे में कहा गया है—

सहस्रशीर्षा: पूरुषः सहस्राक्षः सहस्रप्राप्तः।

स भूमि (ग) सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठदशांगुवम्॥

जो व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न कर लेता है, वह स्वयं नारायण के समान चेतनावान, क्रमतावान हो जाता है। उसकी सभी हन्दियाँ पूर्णि: नाशन हो जाती हैं और हर क्षण जटिशील रहती हैं, जिसके फलस्वरूप वह आसनी से किसी भी ध्रुव में स्फलता अर्जित कर सकता है।

इस साधना को सम्पन्न करने से निम्न विधियाँ व्यक्ति के जीवन में आ जाती हैं—

1. घर में लक्ष्मी का चिर निवास रहता है, और डस प्रबाहर में किसी प्रकार की क्रमी, कठिनाई उसके जीवन में नहीं आ पाती और वह आनन्द का जीवन जीता है।
2. उसके सभी शरु भमास हो जाते हैं। अगर कोई मुकुड़मा चल रहा हो तो उसका निर्णय उसके पक्ष में हो जाता है।



३. व्यक्ति रोजी हो, तो भयंकर से भयकर रोग कुछ ही दिनों के अंदर जह मूल से नष्ट हो जाता है और व्यक्ति प्रसन्नचित हो स्वरूप जीवन जीने लगता है।
४. उसके अंदर के सभी विकार, कृतिसत भावनाएँ नष्ट हो जाती हैं, और उसका मन पूर्णतः शिरेल हो जाता है, इस प्रकार से वह चाहे किसी भी वातावरण में रहे, उसले अकृत रहता हुआ एक 'ठिक्य पथ' की ओर अग्रसर होने लग जाता है। सीधे शब्दों में, नहां वह ग्रोतिका में थेष्ठता प्राप्त करता है, तो वही अश्यात्म की ऊंचाईयों को भी प्राप्त कर लेता है।
५. उस व्यक्ति में सम्मोहन अंदर व्यग्र हो जाता है, उससे मिलने वाला हर व्यक्ति उसकी ओर स्वन: हो अकृष्ट हो जाता है।
६. आगे धाले समय के बारे में उसे पहले ही जान हो जाना है, जिससे वह किर उसी के जनुसार कार्य करना है, जिससे वह किर उसी के जनुसार कार्य करना है।

क्रृष्ण 'अग्रसर' 2002 संत्र-संत्र-यत्र विज्ञान '32' १४

करता है, 'नारायणार्थी' का अर्थ ही है, कि दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाना।

७. इसके अलावा भी इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों ही पक्षों में सफलतायुक्त होता है, और उसे सहज ही यश, मान, प्रतिष्ठा, प्रेम आदि प्राप्त होता है।

### साधना विधान

- यह साधना 'अनन्त चतुर्पथी' को सम्पन्न करे या फिर किसी गुरुवार को सम्पन्न करे।
- यह साधना रात्रिकालीन है। इसके लिए साधक को 'नारायणार्थी माल्य' की आवश्यकता होती है। सर्वप्रथम साधक स्नान कर रात्रि में दम बजे स्वच्छ उत्तम वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा की ओर मुंह करके होठे।
- उपर्युक्त सामने बानोट पर सफेद वस्त्र छिठोकर कुमकुम से आंख की आकृति बना कर, उस पर 'नारायणार्थी चंत्र' स्थापित कर उसका विधिवत पंचोपचार पूजन करें। नारायण का ध्यान करे-

### ध्यान

कस्तुणापरायणपवं श्रुति शास्त्रसारं,  
ध्यायामि सत्यार्थं परं प्रसन्नं।  
तं चिन्तयामि सततं भवशोग वैद्यम्,  
नमोऽस्तु नारायण देव देवम् ॥

उसके बाद यंत्र पर 'लोचन' अर्पित कर साधना में सफलता के लिए प्रार्थना करें। अगर कोई विशेष ननोकामा हो तो उसका उन्नरण करें। 'नारायणार्थी माल्य' से निम्न मंत्र का २१ माला मंत्र जप करें—

### मंत्र

॥ ॐ ही नमो नारायणाय अनन्ताय श्री ॐ नमः ॥

यह एक दिवसीय साधना है। साधना के उपरान्त यंत्र माला तथा गुटिका को किसी विष्णु मंदिर आद्या जलाशय में अर्पित करें। ऐसा करने से साधना फलीभूत होती है।

(साधना सामग्री पैकेट रु. ३६०)

# विवेक और वैराग्य का संयोग भावालय



## शिष्य योग

विवेक और वैराग्य ये दो गुण शिष्य बनने वाले साधक में होने ही चाहिए—

जो जिजासु, मनुष्य क्या है, ईश्वर क्या है, योग भक्ति ज्ञान क्या है, जगत् किसे कहते हैं, इस प्रकार जिजासा पूर्वक विचार करता है, वह ही भाग्यवान शिष्य है, शिष्य वह है, जो सर्वदा गुरु आज्ञा में संलग्न होकर अपने को उनमें छो देता है, श्री गुरु के बनाये हुए रास्ते पर जो निर्मलता से चलता है, वही भाग्यशाली शिष्य है, ऐसा ही शिष्य कालान्तर में गुरु बन जाता है, वस्तुतः भक्त वह है, जो मगवान से भिज न हो, योगी वह है, जो ध्यान से भिज न हो, राजा वह है जो प्रजा से भिज न हो, वेसा ही श्रीगुरु से जो भिज नहीं हो, वही यथार्थ शिष्य है।

अर्जुन भगवान भे कहता है—‘करिष्ये वचनं तत्र अर्थात् आपकी आज्ञा का पालन करना।’ इस प्रकार जो गुरु का कहना पूरा—पूरा मानता है, वही सत् शिष्य है, जानेश्वर मठाराज कहते हैं—‘गुरु वचनी मन धूलते अर्थात् गुरु के उपदेश वचन से मन शुद्ध हो।’ न ता है, ऐसे शिष्य का अधिकार बड़ा होता है, कालान्तर में उस परम शिष्य को गुरु पद प्राप्त होता है, व्यवहार कुशल, अभ्यासरत, जागरूक, कर्मव्यपरायण, गुरु वचन में पूर्ण निष्ठा रखने वाला ही श्रीगुरु

का आदर्श शिष्य है, गुरु भक्ति पूर्ण शिष्य अपनी भक्ति तथा वैराग्य विवेक के बल से संसार बन्धन को तोड़ डालता है, गोह पशु को काट डालता है, विघ्नजाल को जला देते हैं, वह न भ्रममय मस्त नदी में बहता है, न दुःखाभि में नपता है, न किसी से डरता है, न किसी को डराता है।

शिष्यत्व बड़ा जटिल विषय है, शिष्य—रहस्य को जानना साधारण व्यक्ति के लिए असम्भव है, यदि साधक पूर्ण शुद्धता से शिष्यत्व प्राप्त कर ले, तो उसके समान जगत् में कौन है? जगत् में गुरुजन बहुत मिलेंगे, परन्तु शिष्यत्व बड़ा दर्ज है।

जगत् में स्वधारण देने वाले, श्रीलेखान बनाने वाले बहुत प्रकार के साधना—मार्ग ऋषि मुनियों द्वारा रखे हुए हैं—जप, तप, चक्ष—यान, दान व्रत, तीर्थ धारा, सगुण—भक्ति निर्गुण उपासना आदि। सब सत्य, निर्विष और परलंगे वाले हैं, किंतु भी साधक के लिए शिष्य योग अर्थात् शिष्यत्व स्वीकार करने के सदगुरु के बनाये हुए, वश पर चलने का साधन सर्वथा शेष है, यह योग मार्ग जगत् में महान कहलाता है।

आधुनिक कुछ महात्मा लोग और तत्व ज्ञान के व्याख्याकार शिष्यत्व का खण्डन करने हैं, साथ—साथ गुरुत्व का भी लोप कर देने हैं, एक तो आप मेरे धर्म में राह चलते

गुरु उत्तम का पूजा-पूजा पालन करता है। गुरु ने अपूर्ण के विचालित संग्रहीत, गुरु भवा के सिद्धा अन्य कुछ भी श्रीगुरु रोचना मांगना, अधिकार करना बहिर्भूत था। करना, दूसरे अधिकार है, ऐसा जो है वह शिष्य है, काव्य, लचन और फल है श्रीगुरु का जो अद्वितीय है। इसका करना है और लड़ख भी लड़ी भागत, उसका सर्व धैर्य धैर्य प्राप्त होता है। अब भवानी अन्तिम दृष्टि है—भवति शिष्यों का पूजा धैर्य।

है—ओरों को भी अपने पीछे द्वारा अपन्य में ले जाते हैं, अभिभावकश पठे प्रस्तुक पर्वेत अनुभूतिदीन जानी, भक्ति अन्य हीन हृदय वाले इुक्त लोग अन्यथा के पथ प्रदर्शक बनते हैं, कुछ ऐसे भी हैं, जिन्होंने न किसी गुरु से योग की धूति गानी है, न जान की अनुभूति को पढ़चाना है, लेकिन स्वयं गुरुहीन होने के कारण गुरु से कुछ नहीं पाया है, वह दूसरे का ज्यो लिखा। संकेतः जो स्वयं करान है, वह क्या करन देश? जो विलकुल उनपठ है, वह क्या सिर्फु सकता है? जो पूर्ण अन्य है, वह कौन सी राह बताएंगा? जिसने जिसी गुरु से प्राप्त नहीं किया है, वह दूसरे को क्या दे सकता? ऐसे ही कई स्तोम जगह जगह तत्त्व जान के विषय पर प्रवचन करते हैं, श्रीताजन का अन्यवर्गन करते हैं, और बड़ी विचित्र बात तो यह है कि गुरुत्व का खण्डन करते हैं।

शिष्यत्व ग्रहण करना यानी गुरु को स्वीकार करना, समर्पण करना, यह एक बड़ा जटिल और रहस्यमय विषय है, शिष्य वह है जो ध्यान, ज्ञान, विज्ञान और प्रेम द्वारा श्रीगुरु का बन कर रहता है, जैसे विन्दु मिन्दु में विलकर सिन्धु बन जाता है, वैसे ही शिष्य शुद्ध भावना से अपने अन्तःकरण में गुरु के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है, और योहे ही समय में उनके समान बन जाता है।

शास्त्रों ने दो प्रकार के पुत्र बताते हैं—एक वीर्यगत और दूसरा मन्त्रजात। 'जात' नाम पुत्र है, जो विन के वीर्य से उत्पन्न होता है, वह वीर्यमुक्त है, और जो गुरु से शक्तिपात्र द्वारा मन्त्रित किया जाता है, वह मन्त्रजात पुत्र है। वस्तुतः मन्त्रजात ही वैह शिष्य है, श्रीगुरु अपने तेजोमय, तपेमय, योगमय और ज्ञानमय मन्त्र वीर्य के शिष्य में स्थापित करते हैं।

चितिमय महामन्त्रवीर्य शिष्य का एक अनोखा

आश्वर्यमय योगान्वितमय शरीर बना कर उसे अपने जैसा ही अर्थात् श्रीगुरु जैसा ही बनाता है, तब शिष्य गुरुमय बन जाता है।

आजकल जिसी—किसी के मन में एक प्रज्ञ उठता है, कि एक गुरु के सभी शिष्यों की प्रज्ञति एक समान क्या नहीं होती, सभी एक समान क्या नहीं बनते हैं? इसका कारण है शिष्यों का अधिकार शेष। एक ही गुरु से अन्ति प्राप्त शिष्यों ने मध्य समान नहीं होते, इसी में किसी शिष्य में अन्ति का पूर्ण प्रभाव, किसी ने अल्प प्रभुत्व दिखाई पड़ता है, और किसी का पतन ही हो जाता है, श्रीगुरु के रहन-सहन तथा व्यवहार में ऐसा क्यों? वैसा क्यों? इस प्रकार शक्ति सेवें करने से पूर्णत्व की प्राप्ति और गुरुत्व की विद्धि में सकारात हो जाती है, जो कोई गुरुजनों में देख देता है, तथा कोध, रोध आदि भावना करता है, वह कभी शिष्य हो ही नहीं सकता, जिसने अपने को पूर्ण रूप से गुरुत्व को दे दिया, उसने गुरुदेव से सम्पूर्ण लिया, सब कुछ प्राप्त किया और वह शिष्य है, जिसने पूर्ण विद्या उपने पूर्ण पाया, जिसने कुछ बचा रखा, थोड़ा कुछ छिपा रखा, उसने उतना ही कम पाया।

शिष्य में गुरु भक्ति होनी चाहिए शिष्य गुरु के प्रति जो प्रेम रखता है, वही भक्ति कहनाती है, भक्ति नाम प्रेम है। काव्य, बाचा, मनसा गुरु सेवा में रत हो जाना, गुरु आज्ञा का पूरा-पूरा पालन करना, गुरु स्मृति से विचालित न होना, गुरु देवा के सिवा अन्य कुछ भी श्रीगुरु से न मांगना, अर्थात् कामना रहित प्रेम करना, गुरु धक्कि है, ऐसा जो है वह शिष्य है, काव्य, बाचा और मन से श्रीगुरु का जो अद्वितीय है और सेवा करता है और कुछ भी नहीं मारता, उस पर सर्व देवता प्रसरना होते हैं, सर्व मन्त्र कल्पीभूत होते हैं, सर्व सिद्धियों सहन ही प्राप्त होता है, ऐसा शिष्य चाहे गुरुत्व भी हो, तो गुरुत्व न तजते तुर आन-बचों के बीच रह कर भी सहज में ही ईश्वर प्राप्ति करता है, और यदि स्त्यागी हो तो सुलभता से मर्यादाम पूर्णकाम निजात्म दियने को प्राप्त करता है।

ब्रह्मजान—सम्पन्न, योगस्थिति रत और शक्तिपात कुशल होने पर भी जो शिष्यत्व को अखण्ड रस्ता कर अभेदमय बनकर भी भेदवहित शेष से श्रीगुरु की सेवा करने की तत्पर रहता है, वही शिष्य कहलाता है।

अप्रेद प्राप्त गुरु शिष्य के बीच में ही एक अप्रतिम दिव्य भानन्द की रसमय नदी बहती है, जिसमें जगत् के असंख्य लोग स्नान करके पवन बनते हैं, पवित्र होते हैं।

(‘परमार्थ प्रकाश’ से)



श्रीकृष्ण भी जियकी उपासना करते हैं,  
जरों श्रीकृष्ण की शक्ति है



# श्री राधा महाशक्ति साधना

श्रीकृष्ण नों छ पेइवर्दी के पूर्ण सर्वेश्वर यिनका स्वरूप नाशयण है जो अधिकारी के अधीश्वर है, वे कृष्ण भी श्रीराधा की साधना करते हैं और उनकी अधीश्वात्री देवी है।

श्रीराधा महाविद्या के सम्बन्ध में दो प्रामाणिक मन्त्र श्री राधोपनिषद एवं नारद पंचताव हैं, जिनमें इस महाशक्ति के सम्बन्ध में पूर्ण विवरण हैं।

जब तक मूल शक्ति की साधना नहीं की जाती तब

तक साधना में मिलि केसे संभव है? यह शक्ति हाँ किसी महापुरुष, देव अथवा साक्षात् भगवान् का आधार है, अतः साधक को इस मूल रहस्य को समझाने हुए मूल शक्ति की आराधना की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। लेकिन तब तक श्रीकृष्ण की शक्ति श्रीराधा महाविद्या की उपासना नहीं की जाती तब तक साधक को कृष्ण भाजि तथा कृष्ण उपासना में सकलता नहीं मिल सकती। इसी लिए देवी भगवत् में लिखा है कि ब्रह्मा

आदि सम्पूर्ण देवता नित्य प्रसन्न हो भगवती राधा का ध्यान करते हैं क्योंकि वहि श्रीराधा की पूजा न की जाय तो पुरुष भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा का अनाधिकारी समझा जाता है।

राहनोति सकलान् कामनाओं को सिद्ध करने के कारण इस देवी का नाम 'श्रीराधा' हुआ है।

'नारद पञ्चरात्र' में श्री नारद द्वारा प्रमाणन शंकर की साधनाओं के सम्बन्ध में पूछे गये विशेष प्रश्न और उनके द्वारा दिये गये समाधान का विवरण है। उसमें श्रीराधा के सम्बन्ध में लिखा है कि श्रीराधा प्राप्त की अधिकारी देवी है।

श्रीराधा विशेष पूज्य और उपासन्न इसलिए है कि कृष्ण को जगत् पिता और श्रीराधा को जगत् माता बना नदा है और माता तो पिता से सौनुना अधिक बन्दा होती है। जो कर्त्ता बहुत काल तक श्रीकृष्ण की आराधना के बाद सिद्ध नहीं होता है वह श्रीराधा की उपासना से बहुत शीघ्र सम्पन्न हो जाता है।

श्रीकृष्ण भी इसकी उपासना करते हैं, वह पठुहारी महाविद्या तो कामधेनु स्वरूपिणी है। इसकी उपासना से बल, पुत्र, लक्ष्मी, भक्ति और ईशित्व की प्राप्ति होती है, श्रीलक्ष्मी तो श्रीराधा की अंश स्वरूप है, अतः श्रीराधा की उपासना से लक्ष्मी उपासना अपने आप हो जाती है तथा आङ्गादिनी, सन्धिनी, शान, इच्छा और क्रिया श्रीकृष्ण की शक्तियाँ हैं, और इसमें प्रमुख आङ्गादिनी शक्ति है और यहीं श्रीराधा स्वरूप है।

### श्रीराधा शक्ति स्वरूप

राधा रासेश्वरी रम्मा कृष्णमन्त्राधिदेवता ।  
सर्वथा सर्वबन्धा च वृन्दावनविहारिणी ॥  
वृन्दाराध्या रमाशेषगोपीमण्डल दृजिता ।  
सत्य सत्यपरा सत्यभामा श्रीकृष्णवल्लभा ॥  
वृषभानुसुता गोपी मूलप्रकृतिरीश्वरी ।



गन्धर्वा राधिका रम्मा रुक्मिणी परमेश्वरी ॥

परात्परतरा पूर्णा पूर्णचन्द्रविमानना ।

भुक्तिमुक्तिप्रदा नित्यं भवव्याधिविनाशिनी ॥

१— राधा, २— रासेश्वरी, ३— रम्मा, ४— कृष्णमन्त्राधिदेवता, ५— सर्वाभा, ६— सर्वबन्ध, ७— वृन्दावनविहारिणी, ८— वृन्दाराध्या, ९— रमा, १०— शेष गोपीमण्डलसूजिता, ११— सत्या, १२— सत्यपरा, १३— सत्यभामा, १४— श्रीकृष्णवल्लभा, १५— वृषभानुसुता, १६— गोपी, १७— मूलप्रकृति, १८— ईश्वरी, १९— गान्धर्वा, २०— राधिका, २१— आरम्मा, २२— रुक्मिणी, २३— परमेश्वरी, २४— परात्परतरा, २५— पूर्णा, २६— पूर्णचन्द्र निमानना, २७— भुक्तिमुक्तिप्रदा तथा २८— व्याधिविनाशिनी

ये २८ नाम श्रीराधा के २८ स्वरूप हैं, प्रत्येक स्वरूप विशेष शक्ति युक्त है।

### कामना पूर्ति साधना

— जिस शक्ति ने योगेश्वर श्रीकृष्ण को भी अपने आधोन कर लिया हो, उस शक्ति की साधना करने से साधक को ब्रह्मीकरण साधना में सिद्धि अवश्य प्राप्त हो जाती है।

— श्रीराधा प्रेम और आङ्गाद की शक्ति है, जीवन में पूर्ण प्रसन्नता, प्रेम, अनुराग, की पूर्ण श्रीराधा साधना से सम्प्रद है।

— श्रीराधा सौन्दर्य शक्ति की प्रतीक है, जो सिद्धिवां श्रीराधा की साधना करती है, उनके सौन्दर्य में अतीव वृद्धि होती है।

— श्रीराधा की उपासना से दाम्पत्य सुख की पूर्ण प्राप्ति होती है।

— श्रीराधा उपासना से साधक को संतानहीन पुत्र प्राप्ति के इच्छुक दम्पति को पुत्र की प्राप्ति होती है।

— श्री लक्ष्मी तो राधा की एक शक्ति है, अतः इसकी उपासना से साधक को लक्ष्मी का पूर्ण कल प्राप्त होता है।

— श्रीराधा शक्ति पूर्णिमा जागृति का आधार है, और यह शक्ति स्वरूप में मूलधार चक्र जागृत होकर कुण्डलिनी महाशक्ति

सहस्रार  
— श्रीराधा  
आप प्राप्त  
श्रीराधा

विवाहित  
सकता है।  
की आवश्यक  
आनन्द के

सकती है,  
महाविद्या  
इसके अल  
आवश्यक  
की व्यवस्था  
सुन्दर वस्त्र



सहस्रार चक्र में स्थित हो जाती है।

- श्रीराधा उपासना से कृष्ण की उपासना के सारे फल अपने आप प्राप्त होते हैं।

### श्रीराधा उपासना

इस महाशक्ति की उपासना, स्वीकृतवादी पुरुष, विवाहित अथवा अविवाहित, कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है बद्योंकि इस साधना हेतु केवल दास्य भाव और शक्ति की आवश्यकता है इसकी साधना से तो जीवन में प्रेम और आनन्द की वर्षा होती है।

यह साधना किसी भी वृथत्वार को प्रारम्भ की जा सकती है, इस साधना हेतु विशेष सामग्री स्वरूप में 'श्रीराधा महाविद्या महायन्त्र' जो 'कल्पों' कृष्ण मन्त्रों से आपूरित हो, इसके अलावा १५ राधा शक्ति चक्र, राधा वशीकरण माला' आवश्यक है।

इसके अलावा पूजन में सफेद पुष्प, चन्दन तथा दुर्बा की व्यवस्था आवश्यक है लेनी चाहिए। साधक तथा साधिका सुन्दर वस्त्र धारण कर यह साधना करें।

यह साधना प्राप्ति काल स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने श्रीकृष्ण और राधा का स्वयंक्रित चित्र स्थापित कर उसके आगे एक थाली के मध्ये में सुगन्धित पुष्प रख कर उस पर 'श्रीराधा महाविद्या चन्त्र' स्थापित करे इसके बावजूद हाथ में गल लेकर संकल्प करें कि मैं (अपना नाम) जीवन की अमुक इच्छाओं की पूर्ति हेतु यह संकल्प लेते हुए यह अनुष्ठान सम्पन्न कर रहा हूं, कि श्रीराधा वहक्षरी शक्ति मुझ पर प्रसन्न हो, मेरा कार्य पूर्ण हो।

अब हाथ में पुष्प लेकर निम्न स्तोत्र का तीन बार पाठ करते हुए यन्त्र तथा चित्र के मध्य में पुष्प अर्पित करें, चित्र पर चन्दन का टीका लगाए, तथा यन्त्र पर भी चन्दन, दुर्बा अर्पित करे इसके साथ ही सुगन्धित द्रव्य नैवेद्य अर्पित करें और सुगन्धित अगरबती लगाए।

### प्रार्थना

नारायणि महामाये विष्णुमाये सनातनि ।  
प्राणादिदेवि कृष्णास्य मामुद्धर भवार्जित ॥  
संसारसागरे धोरे भीतं प्रां शरणागतम् ।  
प्रपञ्चं पतितं मातर्मामुद्धर हरिप्रिये ॥

हे नारायणि ! विष्णुमाये महामाये ! सनातनि श्रीकृष्ण प्राणप्रिया, संसार सागर की दीड़ाओं से मेरा उद्धार कीजिए, इस संसार सागर के भव से मुझे मुक्ति प्रदान करें, मेरे जीवन में रख, आनन्द, प्रेम और सुख की वर्षा करें।

### पंचादस श्रीराधा वास्त्र पूजन

राधा की शक्तियां उसके वास्त्र रूप में निवास करती हैं, और उनकी पूजा करना आवश्यक है। इनमें प्रेम, सौन्दर्य, वडीकरण, लक्ष्मी, शक्ति, सरस्वती सभी गुणों से ऊक्त अलग-अलग शक्तियां हैं, इस हेतु जो १५ श्रीराधा शक्ति चक्र हैं उन्हें चन्दन में डुबो कर क्रमशः इन शक्तियां का ध्यान करते हुए 'श्रीराधा महायन्त्र' के आगे स्थापित करें, तथा एक श्रीराधा

शक्ति चक्र की स्थापना के बाद एक अग्रवती जलाए, ये १५ शक्तियां हैं—

१— मालती, २— माधवी, ३— रत्नमालावती, ४— चमपावती, ५— मधुमती, ६— दुशीला, ७— बनमालिका, ८— चन्द्रमुखी, ९— पद्मा, १०— पद्ममुखी, १२— बनमाला, १३— कालिका, १४— कृष्णप्रिया, १५— विद्याधरी।

इस प्रकार हनका प्रेम सहित पुजन कर 'श्रीराधा वशीकरण माला' अपने नेत्रों के तथा मस्तक के लगा कर राधा वल्करी महाविद्या मन्त्र की पांच माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर सम्पन्न करें।

बड़करी महाविद्या यन्त्र

॥ रां ॐ आं यं स्वाहा ॥

अब जप अनुष्ठान पूर्ण हो जाने के पश्चात् श्रीराधा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

### श्रीराधा स्तोत्र

राधा रासेश्वरी रम्भा रामा च परमात्मनः।  
रासोद्धवा कृष्णकान्ता कृष्णवक्षःस्थलस्थिता ॥  
कृष्णप्राणाधिदेवी च महाविष्णोः प्रहविष्णी ।  
सर्वधा विष्णुमाया च सत्या नित्या सनातनी ॥  
ब्रह्मस्वरूपा परमा निर्लिपा निर्गुणा परा ।  
वृन्दा वृन्दावने सा च विरजातटवासिनी ॥  
गोलोकवासिनी गोपी गोपीशा गोपमातृका ।  
सामन्दा परमानन्दा नन्दनन्दनकामिनी ॥  
वृषभानुसुता शान्ता कान्ता पूर्णतमा च सा ।  
काम्या कलावती कन्या तीर्थपूता सती शुभा ॥

जो साधक श्रीराधा के इन ३७ नामों से युक्त स्तोत्र का नित्य प्रति पाठ करता है वह अचल लक्ष्मी सभी सुखों सहित प्राप्त करना है।

स्तोत्र पठ के पश्चात् राधा कवच अर्थात् परमानन्द संदोह कवच का पाठ अवश्य ही करना चाहिए, जिसके पठन से परमानन्द अर्थात् परम आनन्द की प्राप्ति होती है, 'नारद पंचरात्र' में लिखा है कि श्रीकृष्ण ने तो इस कवच को अपने कण्ट में धारण कर लिया और इसीलिए श्रीकृष्ण को राधा की सभी शक्ति निविष्ट रूप से प्राप्त हैं।

### परमानन्द संदोह कवच

सर्वांगा मे शिरः पातु केशं के शकामिनी।  
भ्रालं भगवती लोला लोचनयुग्मकम् ॥

नासां नारायणी पातु सानन्दा चाधरोष्टकम् ।  
जिछां पातु जगन्माता दन्तं वामोदरप्रिया ॥  
कपोलयुग्मं कृष्णेशा कण्ठं कृष्णप्रिया तथा ।  
कर्णयुग्मं सदा पातु कालिन्दी कूलवासिनी ॥  
वसुन्धरेशा वक्षो मे परमा सा पश्योधरम् ।  
पदमनाभप्रिया नाभि जठरं जाह्नवीश्वरी ॥  
नित्या नित्यवयुग्मं मे कंकालं कृष्ण सेविता ।  
परात्परा पातु पृष्ठं सुश्रोणी श्रोणिकायुग्म ॥  
परमाया पादयुग्मं नखरांश्व नरीसमा ।  
सर्वांगं मे सदा पातु सर्वेशा सर्वमंशला ॥  
पातु रासेश्वरी राधा स्वप्ने जागरणे च माम् ।  
जले स्थले चान्तरिक्षे सेविता जलशायिनी ॥  
प्राच्यां मे सततं पातु परिपूर्णतमप्रिया ।  
वहतीश्वरी बहितकोणे वक्षिणे दुःखनायिनी ॥  
नैऋत्ये सततं पातु नश्कार्णवतारिणी ।  
बासणे बनमालीशा बायव्यां बायुपूजिता ॥  
कौवेरे मां सदा पातु कृमेश परिसेविता ।  
ईशान्यामीश्वरी पातु शतभूंग निवासिनी ॥  
वने वनचरी पातु वृन्दावनविनोदिनी ।  
सर्वश सततं पातु सर्वेशा विरजे श्वरी ॥  
प्रथमे पूजिता या च कृष्णन परमात्मना ।  
बड़कर्या विजया च सा मां रक्षतु कातरम् ॥

अब श्रीकृष्ण और राधा की आरती सम्पन्न कर साधक प्रणाम कर प्रसाद श्राहण करें— 'ब्रेलक्यपावर्नी राधा सन्तो सेवनं नित्यशा' श्रीराधा की साधना से इस लोक की तो शत ही क्या तीनों लोक पावन ही जाते हैं, बास्तव में श्रीकृष्ण आराध्य शक्ति बड़करी महाविद्या श्रीराधा की साधना, उपासना तो परम सिद्धिप्रदा एवं परमानन्द परम सुखदायिनी है। साधक को श्रीराधा की कृपा का कल नित्य प्रति प्राप्त होता ही रहता है। प्रेम सौन्दर्य की इससे ऐष्ट्र कोई उपासना नहीं है।

आप अपने दो मित्रों को पत्रिका नदस्व बनाए तथा कठीं के ५ पर अपने दोनों मित्र का पना निखकर भेजे। दूर्दृष्टिनाम् पर ५, ४९०/- की वी.पी.पी.द्वारा अपमकी हम एक धन्यवाद को मंत्र सिद्ध प्राप्ति प्रतिष्ठापुक समर्पणी भेज दें। तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित दूष से प्रतिका छोड़ी जाएगी।

कर  
लाभ भी न  
यह माना ज  
हेतु क्या ब  
कैसे प्राप्त  
मूल  
बुहास्तनि,  
इसके अन्त  
अन्य गहे  
है।

मूल  
यह है, जि  
है, राहु का  
बीच प्रबल  
शाह का

प्रत्येक  
होता है औ  
इस दृष्टि से  
चिन्ता, शा  
का करक

निश्चित है कि राहु अह प्रतिवूल फल देता है लेकिन क्या उसका उपाय सम्भव नहीं है? अवश्य कीजिए ये अचूक साधना

# राहु दुष्प्रदोष शमनार्थ शमनार्थ शमनार्थ

कूर एवं अनिषुकारी ग्रहों के फलस्वरूप शुभ ग्रहों का लाभ भी समाप्त हो जाता है। राहु सबसे अधिक प्रबल कूर ग्रह माना गया है, इस सम्बन्ध में व्यक्ति, वोष को दूर करने के लिए क्या करें? राहु पौड़ा क्या है? इसका दुखद—सुखद फल कैसे प्राप्त होता है? एक विस्तृत विवेचन—

मूल रूप से तो जन्मकुण्डली में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, इनि, बुध तथा शुक्र ग्रह ही माने जाये हैं, लेकिन इसके अतिरिक्त दो छाया ग्रह राहु और केतु का प्रभाव भी अन्य ग्रहों की पांच व्यक्ति के जीवन पर पूर्ण रूप से पड़ता है।

मूल रूप से राहु दुष्ट, नीच, अशुभ, कूर तथा बलवदन ग्रह है, जिस भाव में स्थित होता है, उसका ही नाश करता है, राहु का विशेष प्रभाव व्यक्ति के १८वें वर्ष से ४८वें वर्ष के बीच प्रबल रूप से रहता है।

## राहु का प्रभाव

प्रत्येक ग्रह कुछ विशेष कार्यों, वस्तुओं का कारक यह होता है और उस क्षेत्र पर उसका प्रभाव सर्वार्थिक रहता है, इस दृष्टि से राहु शारीरिक इस्ति, परिव्राम, साङ्गस, कुर्माल्य, चिन्ना, शवुता, संकट, दुर्घटना, विलासित, राजनीति, यात्रा का कारक यह है, इसके अतिरिक्त व्यवसाय में इसका मुख्य

प्रभाव मशीनरी, चिकित्सा, मुद्रण इत्यादि से संबंधित है, नीले रंग की वस्तुओं, शीशा, लोहा, बाहन, चन्दा इत्यादि पर भी इसका आधिपत्य माना गया है, इस प्रकार किसी भी दृष्टि से जन्मपत्रिका का अध्ययन करें, तो राहु की स्थिति पर विचार करना अत्यन्त ज्ञावश्यक है।

राहु, बुध, शुक्र और शनि का मित्र यह तथा सूर्य, चन्द्रमा तथा मंगल का शत्रु है, गुरु से उसका सम्भाव है, राहु तो ग्रहण कारण यह है, अतः सूर्य जो कि व्यक्तित्व का कारक यह है, चन्द्रमा, जो कि जीवन में सीन्वर्य रस, आनन्द का कारक यह है, से यहि इन दोनों में से किसी का भी संयोग अश्वा दृष्टि—प्रभाव राहु से हो जाय, तो उसका प्रभाव अत्यन्त क्षीण हो जाता है।

## राहु दोष और उनका व्यक्ति पर प्रभाव

- जन्मकुण्डली में प्रथम, छठीय, चतुर्थ, सातम्, नवम, दशम्, एकदश भाव में राहु की स्थिति अशुभ फल देती है।
- राहु का प्रभाव आने पर व्यक्ति को व्यापार में हानि, उदर रोग विशेष रूप से रहता है।
- राहु की दृशा में संतान सम्बन्धी कष्ट विशेष रूप से रहता है।

- राहु व्यक्ति को अविवेकी, किन्तातुर, तथा खर्चीला बना देता है।
- विपरीत स्थिति में राहु व्यक्ति के दुर्भाग्य एवं चित्त दोष का कारण बनता है।
- राहु प्रबल हो तो व्यक्ति राजनीति में विशेष सफलता अवश्य प्राप्त करता है, परन्तु परिवारिक दृष्टि से उसे हानि प्राप्त होती है।
- राहु यदि छठे भाव में प्रबल हो, तो व्यक्ति शत्रुओं पर हाथी रहता है, अन्य भाव में राहु होने पर शत्रु विशेष हाथी रहता है।
- यदि इनमें से कोई संताप आपको है, तो आपको मान लेना चाहिए कि आप पर राहु का प्रभाव है।

## राहु पीड़ा दोष का निवारण

यदि कोई रोग है, तो उसकी औषधि, उसका इलाज भी अवश्य होता है, रोग की जानकारी होने के पश्चात भी यदि उसका इलाज न कराये, तो वह स्वविनाश की किया ही होगी, इस प्रकार यदि राहु दोष है, तो उसका उपाय अवश्य करना चाहिए, अन्यथा एक बार हानि, दोष, पीड़ा होने पर उससे निकालना अत्यन्त दुःख्य हो जाता है।

सामान्य स्व से ज्योतिशी लोग राहु की विपरीत स्थिति होने पर 'गोमेव रत्न' धारण करने की सलाह देते हैं, लेकिन यह प्रभावकारी नहीं कहा जा सकता, राहु कृत दोष निवारण हेतु अन्य ग्रहों की स्थिति जो भी ध्यान में विशेष स्व से रखना चाहिए।

## राहु दोष पूजा

रविवार की रात्रि को साधक १० बजे के पश्चात राहु शान्ति कार्य प्रारम्भ करें औपने सामने एक बाजोट पर काला वस्त्र बिछाएं और उसके मध्य में मन्त्र स्थित 'राहु यन्त्र' स्थापित करें, इस राहु यन्त्र पर सरसों का तेल तथा सिन्धुर मिला कर तिलक करें, इसके अतिरिक्त प्रतीक स्वरूप तिल, लोहे का टुकड़ा, नीला वस्त्र, सामने तांबे का बना छोटा सर्प रखें, अपने हाथ में जल सेकर राहु पूजा का संकल्प कर निम्न मंत्र ग्यारह बार पढ़ें—

### आवाहन मंत्र

॥ॐ भूर्भुवः स्वः राहो इहागच्छ

इह तिष्ठ राहवे नमः ॥

प्रत्येक बार आवाहन मन्त्र बीलने के साथ एक तिल की



हेती बना कर उस पर एक सुपारी उच्चश्य स्थापित करें, इस समय दोपक अवश्य जलते रहना चाहिए, अब साधक राहु बीज मन्त्र का जप करें, यह बीज मन्त्र केवल 'काली हकीक माला' से ही जप किया जाना चाहिए।

### बीज मंत्र

॥ॐ भां भीं भीं सः राहवे नमः ॥

अपने स्थान पर ही ढेठ-बेटे दस नाला बीज मन्त्र का जप करें, शास्त्रों के अनुसार राहु दोष पूर्ण स्वर से दूर करने हेतु कुल अठारह हजार मंत्र जप किया जाना चाहिए, इस प्रकार साधक शुक्रवार की भी मंत्र जप सम्पन्न कर सकता है, जब मन्त्र जप अनुष्ठान पूरा हो जाय, तो सारी वस्तुएं उसी काले कपड़े में बाध कर किसी चीरहे पर रख दें, केवल राहु यन्त्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित रखें, लेकिन यह ध्यान रहे कि दिन प्रतिदिन की पूजा हेतु जो सात्विक दन्त नहीं, शिवलिङ छलाति स्थापित हैं उनके साथ राहु यन्त्र न रखें।

राहु दोष पूर्ण स्वर से दूर हो जाने पर साधक की उत्तर सम्बन्धी पीड़ा, पांवों से सम्बन्धित पीड़ा दूर होती है, इसके अतिरिक्त यदि किसी कारणवश बदनामी का योग होने की आशंका होती है, तो वह भी दूर होती है, व्यक्ति को शत्रुओं पर विजय तथा राजनीति में अत्यन्त ऐड स्थान पर पहुंचाता है, और उसका प्रभाव बढ़ता है।

(साधना सामग्री न्यौडावर रु. ३३०)

इस  
कोई न  
का मत  
भी जिए

\* गुरु  
भी शप्त  
है पांडे  
बनाने व  
धर्म ज

\* ज  
प्रेम में ब  
उठते हैं  
दस सीधा  
एक सीधा  
मेरे अन  
आप गौं  
बिलकुल  
जो सही

\* ज  
चलता है  
द्याति है  
कैसे प्रा  
आप के

\* ज  
आप ले  
जाता है

# शिष्य धर्म

त्वं विद्धितं भवतां वदेत् देवाभवावोतु भवतं सदेत् ।

ज्ञानार्थं गूढं गपर्जं महितां विहंसि शिष्यत्त एता भवतां भनवद् नमामि ॥

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का श्रेष्ठ तत्व शिष्य होना है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यदि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शब्द शिष्य है। शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरु से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक धर्म नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है वालक भी शिष्य है, जो मां के गुणों को अपने जीवन में उतारता हो, देख करके अनुसृप बनता है।

## \* जेवा धर्म अति कठोरः

गुरु के पुअ गुरु ही कहनायेंगे, हाँ पिता रिखा दे उच्छी तरह से, यह पिता का धर्म है कि एक भी दृष्टि कारण नहीं जाए। इभीलिए दसको दैवर किया है। इसलिये नहीं कि कोई वारिस बनना है पीछे परन्तु आपकी अंख मेरे ग्रन्ति किन्तु जन्म है उतनी इनके प्रति भी हीरा दहिये। मगर गुरु बनने में कठोर ही जाए हैं। शिष्य बनने में जानलद ही जानलद है, इधर्य का अर्थ है सेवा और सेव धर्म अति कठोर हैं।

\* जीवन का जानलद तो शिष्य बनने में ही है जीवन का सार तो शिष्यता में ही निहित है, अपने इष्ट के प्रति प्रेम में न्यौछायर ही जाने की कितनी उच्च अवस्था का नाम शिष्यता है। जीवन में ऊंचा उठना है और यदि नहीं उठते हैं तो यह जीवन व्याध है, करोंके ऊंची रीढ़ी पर चढ़ना बहुत कठिन है, जीवे किसलगा बहुत आसान है, कस सीढ़ियों से नीचे उतारने में एक रोकाण लगता है, परन्तु दस सीढ़ी चढ़ने में आपको बीस रोकाण लगेंगे एक एक सीढ़ी चढ़नी पड़ेगी, आपको नित्य बार बार सोचना पड़ेगा कि मैं शिष्य बन रहा हूँ या नहीं बन रहा हूँ, क्या मेरे अन्दर राधास वृति पजप रही है या सदगुणों का विकास हो रहा है? ऐसा जीवन कैसा व्यरोत्त हो रहा है अपने आप में विश्लेषण करता जीवन की श्रेष्ठता है, महानता है और यह वह व्यक्ति कर सकता है जो अपने आप में बिलकुल शिष्यता बनकर गुरु के पास रहने का सामर्थ्य रखता है और ऐसा ही व्यक्ति गुलाब के फूल बनते हैं, जो सही आथों में गुरु के लिये अपने आपको समर्पित कर देते हैं।

\* जीवज वज श्रेष्ठतम शब्द शिष्य है और शिष्य वह होता है जो अपनी जान को दृश्येती पर लेकर दखलता है। दो तरह के व्यक्ति होते हैं, एक व्यक्ति शद्गुणों का आआर होता है, अपार होता है, एक व्यक्ति षड्यंत्र का भंडार होता है जो कि चौबीसों घंटे यही सोचना किए गए कैसे छल करूँ? कैसे झूँ लौँवूँ? कैसे प्रपञ्च उचूँ, कैसे बनकर पुरस्ताक कैसे बनाएं पूट बाहूँ? कैसे दल दोरों को लड़ाऊँ? कैसे उपने आप को शेष शिष्ट करूँ?

\* जो गुलाब के फूलों के बीच रहते हैं, जब थोड़ी सी भी नाली की दुर्जन्ध आती है तो वे आंप लेते हैं कि यहाँ दुर्जन्ध है, कहाँ से आ रही है। ऐसा शिष्य या तो किनारे पर झड़ा हो जाता है या फिर उस सुनन्ध में श्वर्य को ट्यात करने के लिये तैयार हो जाता है।

# गुरु वाणी

\* अमर ज्ञान के पुंज को प्राप्त करना है, तो तुम्हें गुरु की एक एक कर्तीती को ज्ञेत्रने के लिये तैयार रहना पड़ेगा, गुरु प्रहार करे और उसे तुम्हों सहन करना ही पड़ेगा। और किर भी तुम्हें मुस्काना ही पड़ेगा, किर भी श्रद्धा व्यक्त करनी ही पड़ेगी मध में, हृत्य से, देहाना से, प्राणों से!

\* गुरु को बाहिरे कि यह तुम्हें पादपद्मन नहीं बनने दे, तुम चाहे किंतती आरजू करो, लिङ्गत करो, चापलूसी करो, तुम चाहे किंतने ही पांत पशांती पर यदि गुरु सतर्क है तो तुम पर प्रहार करे और देखो, तुम्हें हेस्ट करे, बार-बार करे।

\* अगर मेर पास पात्र नाख सुपये हैं तो तुम्हें लखपति बनाने में पूँछ कुछ सेकेण्ड ही लेंगे, जिस पात्र नाख सुपये तुम्हारी छोली में डाल देना है। मगर उसके पहले गुरु यह देख ले कि यह उसका वुफव्योग तो नहीं करेगा।

\* अलापाश जो बीज प्राप्त होती है, यिना पूर्ण प्रिंशिप के जो बीज प्राप्त होती है, उसका गृह्य और नहुता खाल्य शमका नहीं शकता, उसको आंक नहीं शकता, अरु आ जायेगा, और यह बार-बार शूरा के लिये बहुत घातक सिद्ध हो जायेगा, इसलिये गुरु जो बाहिरे कि यह उस अरु देने शमास करें।

\* तुम ऐसे राजसे जितने दी लिङ्गजिक्षणे, हाथ लीडे, पर तैं जरूर जैता दूँ, कि तुम कहां पर चढ़े दै, पूरा जैरीजैर जैरे राजसे चढ़ा, दूर्जय है और जिस तुम तुम्हें उत्तराप्ति देंगे, कि उत्तर उत्तरी अपर्दीप देना चाहए है, तुम्हें कुछ कुछ जरूर देंगे जै कुली कीर्त उचाक्षर है। और तुम

\* दि  
दिला, ज  
तोड़ा ही  
शंकरण  
दूँ जल क  
दुआ व्य  
वनी वही  
ब्रह्मी व  
पड़ा।

\* इ  
गलति  
सिर्व्यो  
आप व  
गलती  
ने यह

\* इ  
करे औ  
पास से

\* उपर  
है। और  
तो तुम

\* शंकराचार्य के बहुत पहले ही पादपद्म को वह जान दे दिया, जबकि उसका अहम् तोड़ा ही नहीं था और अस अहम् तोड़ा ही नहीं तो उसके मन में वह आ गया, कि मुझपरो अब शंकराचार्य लग जाओ चाहिये और मैं शंकराचार्य एवं उन सम्प्रदाय हूं जब उसकी तृत्या कठ दूँगा। इसना जयच्छ अपग्राय इसलिये हुआ वयोःकि उसका अहम् नहा वही, उसके अधूरे में गंदणी बली वही। यह शंकराचार्य की रथजला ही वह शंकराचार्य की जलती थी, और उस जलती का परिषाम शंकराचार्य को भुजता दूँगा।

\* इतिहास उठाकर देख लें, इतिहास में ये गलतियां हुई हैं, गुरुओं ने गलतियों की हैं, और शिष्यों ने उन गलतियों का लाभ उठाते हुए अपने आप को पतन के दाढ़ते पर लाला हैं। पर में वह गलती नहीं कर सकता जो बुद्ध ने कर दी, महावीर ने कर दी, जो शंकराचार्य ने कर दी।

\* इसलिये गुरु को चाहिये कि वह पादपद्म नहीं प्रिदा करे और शिष्य को चाहिये कि वह विवेकानन्द बने, उसके पास सेवा हो, श्रद्धा हो।

\* अगर तुम्हारी गुरु के प्रति अद्वा नहीं है तो व्यर्थ है, अगर तुम में सेवा करने की क्षमता नहीं है तब भी व्यर्थ है। और यदि अद्वा कर भी रहे हो, सेवा कर भी रहे हो तो तुम कोई एहसान नहीं कर रहे हो गुरु यह।

हमारा पूर्वजों के प्रति कर्तव्य है  
हमारे ऊपर पूर्वजों का ऋण है  
हमें अपने पूर्वजों कि पूजा करनी है

यह पूजा

शहर में अधिक शक्तियों के बावजूद सभा ने आवेदन भी उठाये हैं। इसके लिए विधायक व्यक्ति और उचित समझौता दी गई है। इसमें सुनिश्चित व्यक्ति उचित शक्तियों की सलगत है और उचित शक्तियों की वर्ती जीवन करने जाता है। यिह वर्ष ही उत्तरवादी है, जिस समय राष्ट्रपाल में आकाश बंदगी का विमर्शण होता है, उस समय स्थानीय विवरण होता है, उस समय अवधि की विवरण होता है, भाव वर्णण करते हुए, शहर का भाव वर्णण करते हुए, उप-प्रशासन वालों का अपर्क तिर अवश्यक है—

यह तो पूर्ण सत्य सिद्ध हो चुका है, कि मृत्यु वीं जीवन का अन्त नहीं है, उपके पश्चात भी एक ऐसा जीवन है, जो कि इस भौतिक जीवन से आधिक उत्तिष्ठाली, प्रभावकारी एवं सामान्य नियन्त्रण से परे है, भौतिक जीवन में जो स्कावटे तथा गतिविधियों पर नियन्त्रण रहता है, वह दूर हो जाता है, एवं प्रत्येक प्राणी शक्ति-पुज बन जाता है।

हमारा सम्पूर्ण जीवन आकिर्ति हात है उलाघात है

लेकिन इन शक्तियों पर नियन्त्रण नहीं है, जिसके कारण निस प्रकार का जीवन साधरणा व्यक्ति जीना चाहता है, वैसा जीवन जीना उसके लिए सम्भव नहीं हो पाता है, बहुत अधिक धन होने पर भी व्यक्ति सुखी नहीं कहा जा सकता है, उसे कई दृष्टियों से समस्याओं का जागरना करना पड़ता है, यह वह मानसिक पीड़ा हो, भय सम्बन्धी पीड़ा हो, अथवा लोड और, क्या यह संभव नहीं है, कि जिस प्रकार हम वाहन चलाते हैं, उसी प्रकार हमारे जीवन का नियंत्रण भी हमारे वश में हो, हम जिस प्रकार चाहें उस प्रकार उसे मोड़ दे सकें, इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है, कि हम यह पहिचान लें, कि कौन से सद्व्यवहार प्रदान कर सकता है

किसकी शै  
है, यदि को  
प्रयास कर  
केसे लगाए  
जाहो  
प्रत्याक का  
में सबसे ।  
गुरु को ही  
शिष्य को  
ही मार्ग प्रा  
में आकर  
कोई भी ग  
सकती।

गुरु  
सख्योगी व  
धी जो पूछ  
है, जीवित  
बार मत  
विरोधमान  
के पश्चा  
स्थितियाँ  
प्रकार एक  
है, कि उस  
बने, उसी  
संतान आ  
जीत

कर देने से  
करने की।  
कर सूक्ष्म  
देख नहीं।  
प्रात नहीं  
को शुद्धा  
उसके प्रत  
समस्याएँ  
विधि पूर्वी  
पितरेश्वर

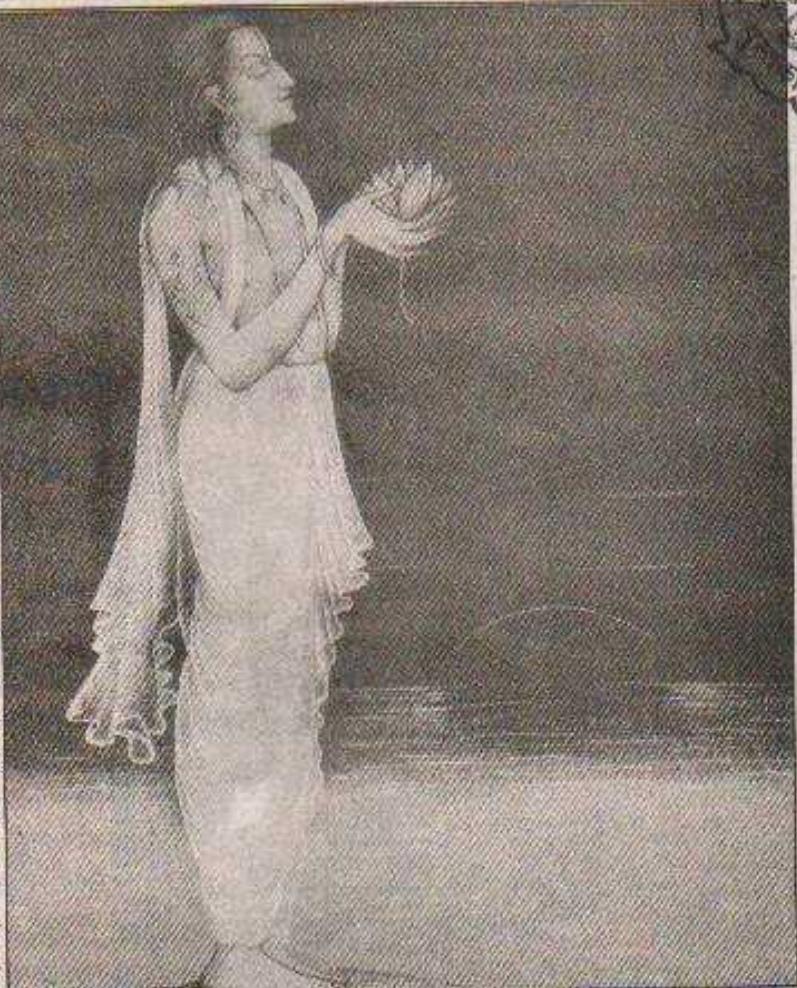
किसकी शक्ति हमें प्राप्त हो सकती है, यदि कोई शत्रु बाधा पहुंचाने का इच्छास कर रहा है, तो उस पर रोक के से लगाई जाए।

जहां तक सहयोग एवं विशा प्रवायक का सम्बन्ध है, सभी शास्त्रों में सबसे बड़ा सहयोगी मार्गदर्शक गुरु को ही कहा गया है, गुरु द्वारा शिष्य को संदेश उसकी उन्नति का ही मार्ग प्राप्त होता है, गुरु के शरण में आकर तथा शुद्ध मन से की गई कोई भी गुरु-भक्ति निष्फल नहीं हो सकती।

गुरु के पश्चात् सबसे बड़ा सहयोगी परिवार है, और परिवार में भी जो पूर्वज है, उनका स्थान उच्च है, जीवित रहते हुए आपस में कई बार मत-धेद, मनमुटाव एवं विरोधाभास हो सकता है, लेकिन मृत्यु के पश्चात् यह सब सामाजिक स्थितियों समाप्त हो जाती है, जिस प्रकार एक पिता संैव यही चाहता है, कि उसका पुत्र उससे अधिक योग्य बने, उसी प्रकार हमरे पूर्वज यही चाहते हैं, कि उनकी संतान अपने जीवन में सम्पूर्ण रूप से सुखी हो।

जीता में लिखा गया है, कि व्यक्ति के शरीर का अन्त कर देने से ही समाप्त नहीं होता है, वह तो नये वस्त्र धारण करने की प्रक्रिया सम्पन्न कर देता है, स्थूल शरीर का त्याग कर सूक्ष्म शरीर से सबको देख सकता है, लेकिन उसे कोई देख नहीं सकता, यदि उसे उचित भावना एवं पूजा, आवाहन प्राप्त नहीं होता है, तो अन्यन्त निराश होता है, यदि पितरों की श्रद्धा पूर्वक पूजा, ध्यान एवं आह्वान किया जाय तो वे उसके प्रत्येक कार्य में ऐसे सहयोगी बनते हैं कि चितार-एवं समस्याएं उनके जीवन से दूर ही हो जाती हैं, इसीलिए जो विधि पूर्वक पूजा, ध्यान करने हैं, वे पूजन कार्य से पहले अपने धिनरेश्वरों का ध्यान करते हैं, उनका आह्वान करते हैं।

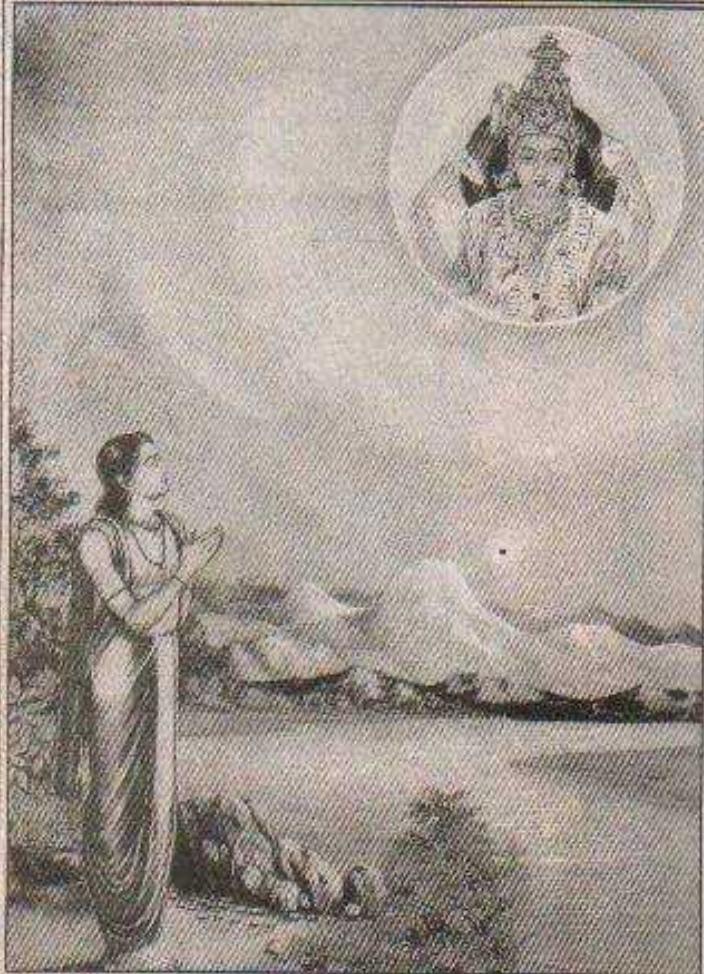
यजुर्वेद में कहा गया है, कि पितरों का आह्वान करते



समय उन्हें पूर्ण निभान्ना है, अपने जीवन के सभी कार्यों में भागी बनावें, तथा अपने आशु, यश, उन्नति में वृद्धि हेतु कामना करें।

### पितरेश्वरों की शक्ति

पितरों की शक्ति भूमिका शरीर होने के कारण अत्यन्त विशाल बन जाती है, वे शक्ति एवं विशिष्ट के निश्चित स्वरूप बन जाते हैं, उनमें होने के कारण स्वास्थ्य, वायु, गर्भ आदि कार्यों के नियन्त्रक बन जाते हैं, वे अपनी शक्ति से आने वाली घटनाओं को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, यदि उनकी पूर्ण कृपा रहती है, तो वे अपनी संतानों को ऐसा मार्ग दिखा सकते हैं, जिसमें कम से कम आधार हो, ऐसा कार्य बनने को प्रवृत्त कर सकते हैं, जिससे सम्पूर्ण उन्नति हो, व्यक्तित्व में तेज उत्पन्न कर सकते हैं, जीवन में रक्षा, माधुर्य एवं सौन्दर्य चौल सकते



है, उनके लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं रहता है, अबश्यकता केवल इस बात कि है, कि वे पूर्ण रूप से प्रसन्न हों, और उनकी पूजा, साधना, ध्यान नियमित रूप से की जाय।

## पितरेश्वर साधना

धर्म, साधना एवं शास्त्रों में सचि रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कोई भी श्रेष्ठ गुण कार्य प्राप्त करने से वहने अपने दूर्वाले पितरेश्वरों द्वारा ध्यान अवश्य करता है, लेकिन यह शिवति ही पूर्ण नहीं है, उन्हें पूर्ण रूप से अपने अनुकूल बना कर प्रत्येक कार्य में सहयोग प्राप्त करने हेतु विशेष साधना की आवश्यकता रहती है, शास्त्रों के अनुसार शुद्ध दिवसों को शुभ कार्यों के अनुकूल नहीं माना जाता है, इस समय बायु की गति एक विशेष प्रकार की रहती है, आकाश में तारा-मण्डलों द्वारा एक विशेष समृद्ध बनता है,

(३) 'अगस्त' 2002 संस्कृत एवं विज्ञान '५८'

और यह सिद्ध हो चुका है, कि इस समय पूर्वज पितरेश्वर मूळम शरीर से इस पृथ्वी लोक पर उपर्याप्ती पूर्ण गति से विचरण करते हैं, यदि इस समय कोई श्राद्ध कूर्म विधि-विधान सहित पितरेश्वर साधना करें, तो उसे अन्य समय की अपेक्षा अधिक सरलता से पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती है, इस वर्ष श्राद्ध पक्ष दिनांक २३-१-२००२ से प्रारम्भ हो रहा है तथा दिनांक ६-१०-२००२ को पूर्ण होगा, वे १५ दिन इस विशेष साधना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं।

## साधना क्यों करें?

इस विशेष साधना में सबसे बड़ा महायम भावना है, अपनी समस्त इच्छाओं, कर्तव्यों को भावना के रूप में प्रकट कर देने से पितरेश्वर अत्यधिक प्रसन्न होते हैं, उनके प्रति पूर्ण रूप से सम्मान देने हुए, सहयोग की कामना ही इस साधना का विशेष लक्ष्य है, जहां व्यक्ति नहीं पहुंच सकता है, वहां भावना पहुंच सकती है, और जहां भावना होती है, उसके पीछे शुद्ध हृदय से किया कर्म होता है, वही सफलता ऐसे सिद्धि है, शुद्ध भावना के कारण ही अधिक से अधिक सहयोगी बन पाते हैं।

यह सत्य है कि पितरेश्वर के कारण ही वर्तमान शरीर अस्तित्व में आया है, पालन-पोषण और विकास हुआ है, जीवन को बनाने में उनका सहयोग प्राप्त हुआ है, उनके प्रति भक्ति नहीं प्रकट करने का यही अभिप्राय होगा, कि व्यक्ति अपने अस्तित्व को ही नकार रहा है, उनकी साधना करना हर वृष्टि से आवश्यक है, और यही तर्पण कहा जाता है।

## साधना विधि

यह साधना काल्प दिवसों में की जाने वाली साधना है, इसमें प्रथम दिवस का विशेष महत्व है, प्रथम दिवस से पितरेश्वरों का आङ्गान कर उन्हें स्थापित किया जाता है, और प्रतिदिन निश्चित संख्या में मन्त्र जप एवं पूजन कर सिद्ध किया जाता है, जिससे कि वे साधक के वर्णीभूत होकर उसे अपने संरक्षण में ले लेते हैं।

इस त  
आवश्यकता  
सकती है,  
नारियल  
या, शहद,  
शाल्म  
साधना सूच  
आवश्यक  
ही, अवश्य  
कर साधन  
अपने

पांच सौमे  
पश्चात इन  
पर 'प्रयास  
दीपक अव  
संपर्क स्वा  
भूत-प्रिया  
जहां आप  
किये हैं,  
तिलों की  
जब  
लेकर पूर  
पितरेश्वर  
अजलों के

हम  
में अपन  
बार जप  
सुदृढ़ि  
जांच बा  
ध्यान  
स्वशा  
पितरे  
सर्वात

इस साधना में कुछ विशेष प्रकार की सामग्री की आवश्यकता रहती है, जिनके बिना यह साधना पूर्ण नहीं हो सकती है, इस सामग्री 'पांच सोमेश्वर रुद्राक्ष', '११ लघु नारियल', ताम्रपत्र, चावल, निल, केसर, इवेत वस्त्र, दूध, धी, शहद, चांदी का बना सर्प, तुलनी भूत्र आवश्यक है।

शुद्ध के प्रथम दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करें, यह साधना सूर्योदय के साथ ही प्रारम्भ कर देनी चाहिए, इस हेतु आवश्यक है, कि प्रातः उत्पन्न जल की उठ कर सभी सामग्री की व्यवस्था एवं स्थान व्यवस्थित कर अपने पूजा स्थान को शुद्ध कर साधना क्रम के अनुसार सामग्री रख दें।

अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर इवेत वस्त्र बिछाकर पांच सोमेश्वर रुद्राक्ष के चारों ओर एक घेरा बना दें, उसके पश्चात इन पांचों रुद्राक्षों के आगे क्रम बार चालों की ढेरी पर 'ब्यारह लघु नारियल' स्थापित करें, एक और धी का दीपक अवश्य जला दें, अपने आसन के नीचे छोटा चांदी का सर्प स्थापित कर दें, जिससे कि किसी भी प्रकार के भूत-पिशाच आदि आपको हानि नहीं पहुंचा सके, अपने सामने जहाँ आपने पांच त्रिदिशा बले 'सोमेश्वर रुद्राक्ष' स्थापित किये हैं, उन्हें सिन्धू अवश्य चढ़ायें, तथा ये रुद्राक्ष काले लिलों की ढेरी पर स्थापित करने चाहिए।

अब पूजा स्थान से बाहर आकर तांबे के मात्र में जल लेकर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर जल की अंजली दें, तथा पितरेश्वरों के आवश्यक देत् प्रार्थना करें, इसके साथ ही प्रत्येक अंजली के साथ निम्न मंत्रों का उच्चारण करें—

ॐ लं नमः

ॐ वं नमः

ॐ रं नमः

ॐ यं नमः

इसके पश्चात् बिना किसी ओर देखे, सीधे पूजा स्थान में अपना आसन ग्रहण करें, तथा निम्न ध्यान मंत्र का पांच बार जप करें, प्रथम बार जप करते हुए, पहले सोमेश्वर रुद्राक्ष को धी मिला कर तिल अर्पित करें तथा क्रिया क्रम पांच बार देखरायें—

### ध्यान ग्रन्त

स्वशारीरं तेजोमयं पुण्यात्मकं पुरुषार्थसाधनं  
पितरेश्वराराधनयोग्यं ध्यान्वा तस्मिन् शरीरः  
सर्वात्मकं सर्वज्ञं सर्वशक्तिसमन्वितं पितरेश्वरामयं

### आनन्द स्वरूप भावयेत् ॥

इस प्रकार शुद्ध मन से किये गये इस ध्यान से पितरेश्वर अपना रथान शृणुप कर लेते हैं, अपनी शावनाओं को पूर्णल्प से प्रगट करते हुए उनसे डर दृष्टि से सहयोग प्राप्ति की इच्छा प्रगट करें, इसमें किसी प्रकार का कोई सकोच नहीं ढोना चाहिए, क्योंकि ये पितरेश्वर आपके अपने हैं, इसके पश्चात् सामने रखे हुए लघु नारियलों का चारों ओर इस प्रकार अर्द्ध चन्द्रकार घेरा बना दें और प्रत्येक लघु नारियल पर केसर, पुष्प, धी, तुलनी पात्र अर्पित करें, यह लघु नारियल प्रयोग इस साधना में अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि यह अर्द्ध चन्द्रकार स्थिति लक्षण रेखा है, जो कि पितरेश्वरों को स्थायी रूप से आपके यहाँ स्थापित कर देती है।

इसके पश्चात् 'रुद्राक्ष माला' से पितरेश्वर बीज मंत्र का जप करें, इस साधना में जो माला प्रयोग में लाई जाए, वह किसी दूसरी साधना में प्रयोग नहीं ली जा सकती है, इस बात का ध्यान रखना विशेष आवश्यक है।

### बीज मञ्च

॥ ॐ सर्वं पितृं प्रसन्नो भव ॐ ॥

यह प्रभावकारी बीज मन्त्र परम विस्मोटक शक्ति लिप द्वारा है, और इसकी पांच मालाएं उसी स्थान पर बैठे जैठे जप करें।

इस प्रकार प्रत्येक दिन पूजा विधान में बीज मन्त्र की पांच माला का जप करना ही है, जब श्राव दिवस पूर्ण हो जाए, तो ये सभी सामग्री काले वस्त्र में बांध कर किसी जल धारा में, या तालाब में अर्पित कर दें।

यह प्रयोग अत्यन्त सिद्ध प्रयोग है, और इसके कारण आपको जीवन में अपने पूर्वजों का ऐसा मार्गदर्शन, सहयोग एवं शक्ति प्राप्ति हो जाती है, जिनके कारण आपका जीवन एवं व्यक्तित्व शक्तिमान हो जाता है, शाश्वत दिवसों में अपने पितरेश्वरों के प्रति शक्ता भक्ति प्रकट करने हेतु प्रत्येक साधक को यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

(साधना सामग्री न्योजावर रु. १८०, रुद्राक्ष माला रु. ३००)



क्या आपके घर में छायायें दिखाई देती हैं?  
 क्या आपके घर में हर समय अशांति बनी रहती है?  
 क्या आपके स्वप्न में आपके पूर्वज आते हैं?

तो निश्चित जानिए

आपके परिवार में आपके कोई पूर्वज की  
 आत्मा भटक रही है,  
 आपका परिवार पितृ दोष से युक्त है

उसका समाधान है

# पितृदोष बुकि द्यावा

हमारा कोई प्रिय आत्मीय, जो बालचङ्ग में विवश होकर हमसे बिछुड़ गया हो, उसके स्मरण, उसके प्रति सावना और श्रद्धा के अतिरिक्त हम कर भी क्या सकते हैं? इस सब को व्यक्त भी किया जाता है ऊनेक उपायों से, लेकिन

श्रेष्ठतम होने के साथ — साथ व्यवहारिक पक्षों का भी पर्याप्त ध्यान रखना उचित होगा और यही बात उपने मृत आत्मीय के प्रति भी इतनी ही सज्जनता से व्यवहृत होती है। मृत्यु के पश्चात हमारा और उसका सम्बन्ध विच्छेद केवल वैदिक स्तर पर होता है, आत्मिक स्तर पर नहीं और तब हमारा

दग्धित्व पहले से अधिक बढ़ चुका होता है। क्योंकि तब तो यह इस भौतिक देह के अभाव में अनेक ऐसे कार्य और कर्तव्य करने में असमर्थ हो जाता है, जो कि अन्यथा कर सकता, जबकि हमारे पास इश्वर प्रदत्त यह स्थूल देह है, जिसका हम न केवल अपने लिये अपितु अपने आत्मीय के लिये भी उपयोग कर सकते हैं। यह उपयोग में लेना इस प्रकार से संभव है कि उसकी आत्मा की शांति के लिये निर्धारित विधि विधानों को पूर्ण कर, तर्षण दान देकर उसे भी निम्न कोटि की योनियों से निकल कर पितृ वर्ग में ले जायें, जहाँ वे उच्चता और श्रेष्ठता से आसीन हो स्वयं भी तुम हों एवं हमारे लिये भी सहायक भी बने, उनका आशीर्वाद और कृपा हमें प्राप्त हो।

जिन पूर्ण कार्यों को वे स्थूल देह के अम व में नहीं कर पायें उन्हें उनके वंशज करे बदले में वे अपनी असीम शक्तियों का उपयोग कर अपने वंशजों को आशीर्वाद व कृपा फैल देते हैं। पितृ पूजन का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। सभी धर्मों सम्प्रदायों में पितृ पूजा के विभिन्न उपाय मिलते हैं। यहाँ तक कि नेपाली कबीलों व आदिवासी जन जातियों के नध्य भी पितृ पूजा का विस्तृत विधान मिलता है।

हमारे प्राचीनतम यज्ञ 'ऋग्वेद' में पितृवर्ग का उल्लेख सम्मानपूर्वक करते हुए उन्हें देवताओं के समकक्ष व उन्होंके समान सोमपान करनेवाला बताया गया है। 'ऋग्वेद' में ही पितृ वर्ग के तीन घेद मिलते हैं यथा अवर, नध्यन और पर वे केवल पूज्यनीय ही नहीं माने गये बरन् मांगलिक अवसरों पर उनका आवाहन और उनसे आशीर्वाद प्रवान करने की प्रार्थना का उल्लेख भी देखो में मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि पितृ वर्ग वास्तव में मनुष्य के लिये ऐसा वर्ग होता है, जो उसकी सभी मनोकामना पूर्ति में देववर्ग के समान ही होता है। प्रायः देववर्ग से भी अधिक प्रभावशाली, क्योंकि वह व्यक्ति विशेष से सीधे एवं रक्त डारा सम्बन्धित जो होता है।

### आपको क्या करना है?—

हमारे मृत आत्मीय मृत्यु के उपरान्त भटके नहीं, उनको कोई निकृष्ट योनि न मिले, इसके लिये कुछ विधान शास्त्रों में



बताये गये हैं। एक बात जो मृत्यु के उपरान्त कलग—अलग धर्मों में सामान्य रूप से मिलती है, वह यह कि मृत्यु के उपरान्त कुछ दिन निर्धारित किये गये, जिनमें शोक मनाये जाने की प्रथा रखी गयी। इसके पीछे मूल भावना यही है कि इन दिनों में मृत आत्मा सर्वाधिक सक्रिय रहती है, एवं अपने परिवार के सदस्यों से सम्पर्क साधने की इच्छुक रहती है। ऐसी दशा में जहाँ किसी व्यक्ति की मृत्यु किसी दुर्घटना में हुई हो एवं मृत व्यक्ति प्रेत—दीनि अथवा ऐसी ही कोई विकृत योनि में जा जिरा हो, तब यह उपाय लाभदायक पाया गया है कि पितृ पक्ष के दिनों में गया के निकट फल्गु नदी में तर्पण और पिण्ड देने से पितरों को प्रेत योनि से मुक्ति मिल जाती है।

हमारे शास्त्रों में पितृ वर्ग को सम्मान देने के लिये तथा केवल उनसे ही सम्बन्धित पूजन उपासना करने के लिए पूरे वर्ष में जिस पक्ष विशेष को निर्धारित किया गया है, वह पितृपक्ष कहलाता है। उश्विन माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिप्रदा से लेकर आमावस्या तक का सारा काल पितृ पक्ष कहलाता है। इन दिनों में अपने पूर्वजों के प्रति प्रब्दापूर्वक जो शास्त्रोंका

जिधन सम्पत्ति किया जाता है उसे 'महालय शुल्क' की गद्दा दी गई है।

इस वर्ष पिन्नपक्ष दिनांक २३-१-२००२ से प्रारम्भ हो रहा है तथा दिनांक ६-१०-२००२ तक समाप्त हो रहा है, जिस में सामग्री की वाली वाले जिस लंगड़ा का उल्लेख उपर किया गया था वह १५ के स्थान पर ३८ दिनों का माना जाता है, अर्थात् पिन्नपक्ष प्रारम्भ होने से एक दिन बाद नक्ष इन विवेषण लंगड़ा को बार मात्रों में बाट कर किया जाता है—

आक्रमिक तुर्द्धना में मृत्यु होने के अतिरिक्त भी कुछ कुछ दुखवदगाये मानव जीवन पर परिवार में घट जाती है, जिसे मृतक व्यक्ति का पता न चला है, वह नदी या समुद्र में डूब गया हो और उसका शव न मिल जाए, या ऐसी कोई अन्य दुखवदगाये व्यक्ति का अंतिम संस्कार या तो हो ही न पाया हो अथवा अझौर हुए से हुआ हो, बिना शास्त्रोक्त निधियों का पालन किये सम्पत्ति किया गया है, इस स्थिति में भी व्यक्ति मृत्यु के पश्चात दुखी और संतान भटकता रहता है, ऐसी समस्त अप्रिय स्थितियों के निवारण के लिये 'गारुदेश नंव' नामक ग्रन्थ में एक विधि प्राप्त हुई है, जिसे केवल पिन्नपक्ष के दिनों में ही सम्पत्ति कर मृतक आनन्द को नुक्ति प्रदान की जा सकती है। पिन्नपक्ष केवल सामान्य स्वप्न से बाह्यण भोजन कराकर, शाढ़ किया सम्पत्ति बर देने के दिन ही नहीं है, बरन इन्हीं दिनों में समस्त पिन्नवर्ग एवं जिसकी प्राकृतिक मृत्यु हुई हो उसके लिये भी इस प्रयोग को सम्पत्ति करना अति आवश्यक है, क्योंकि इस प्रकार से व्यक्ति अपने पूर्वजों की कपा और पारिवारिक स्थितियों में लेषुना प्राप्त करने की स्थितियों निर्भित कर लेता है। बास्तव में किसी भी मृतक पूर्वज के लिए स्वभाव उपद्रुत शाढ़ का अर्थ तो यही है कि उसे निरन्तर योनियों से सम्प्रवास मुक्ति दिलायी जाय, उसके प्रति सम्मान व्यक्त किया जाय, उसको भावनात्मक स्वप्न से तुलि दी जाय तथा इस स्थान पिन्नपक्ष से मुक्ति प्राप्त की जाय।

## साधना विधि

इस विधि की विशेषता यह है कि इसे साधक घर पर ही सम्पत्ति कर अपने मृत आत्मीय को निश्चय पूर्वक मुक्ति प्रदान कर सकता है। पिन्नपक्ष के प्रथम दिवस अर्थात्

दिनांक २१-१-२००२ से प्रारंभ होने वाली साधना को परिवार का कोई भी सरवस्य जो वयस्क हो, सम्पत्ति कर सकता है, फिर भी युरुष वर्ण ही इस साधना को सम्पत्ति करे तो अधिक

उचित होगा, वथा सम्भव परिवार की लती या अल्प वयस्क वालक इस साधने न करे। शत्रिकालीन इस साधना में साथक काले रंग के वस्त्र धारण कर, काले रंग के ऊनी आसन पर दक्षिणाभिमुख दोकर बैठे तथा सामने बाले रंग के वस्त्र की बाजोट पर बिछा कर लोह के पात्र में 'शूतशुर्व वंश' को स्थापित करे, उस पर नम्पानपूर्वक तेल में पिन्नदूर धील कर अपित बरे, काले तिल, अक्षत, जी, व लाल रंग के तुष्य चढ़ाये तथा यव के चरों ओर चार 'मुरुकयंश लद्वदा' अस्थापित कर उनका सामान्य पूजन करे। इस सम्पूर्ण पूजन सामग्री के चारों ओर कान्ति से एक धेश भी बना ले तथा एक ओर तेल का बड़ा सा दीपक जला कर, सम्मानपूर्वक 'प्रमस्त पूर्वजों, पितृवर्ग, एवं मातृवर्ग में जो भी पूर्वज अतुम रह गये हों, उनकी मुक्ति के लिए मैं उनका वंशज यह साधना सम्पत्ति कर रहा हूँ' कह कर संकल्प लें। पन्द्रह दिनों की इस साधना में निःसक्त समाप्ति अमावस्या की होना है, यथा सम्भव प्रतिदिन एक निश्चित समय पर ही साधना सम्पत्ति करे। इस साधना में केवल 'पिन्नदूर माला' का ही प्रयोग मंत्र जप में किया जाता है।

## मञ्च

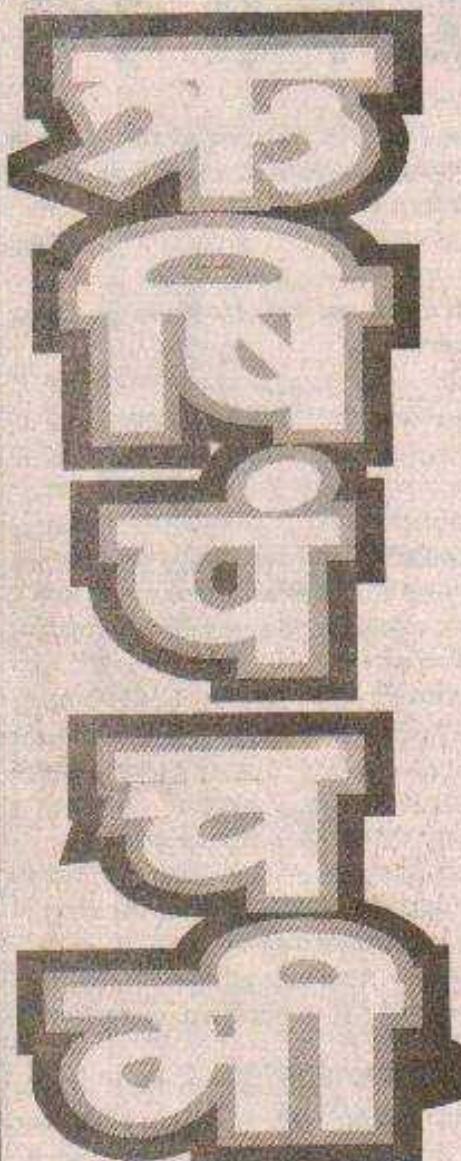
॥ ३५ ऐ पिन्नदूर शमनं ही ॐ स्वधा ॥

इस महत्वपूर्ण साधना में जिस दुर्लभ मंत्र का उल्लेख मुद्दे गारुदेश नंव की प्राचीन व हमनलिखित प्रति मैं मिला, उसको मैंने ऊपर स्पष्ट किया है। इस मंत्र का प्रतिदिन केवल ११ माला ही मन्त्र जप करना चाहिए है। साधना समाप्ति के बाद अर्थात् अग्रावास्त्र की रात्रि मैं ही समस्त माला यज्ञ अदि को काले कपड़े में बाथ कर शमशान में रख दें। पन्द्रह विश्वरीय इस साधना को कलने के उपरोक्त साधक स्वयं अनुभव करता है कि उसके मन मस्तिष्क पर छाया कोई वकाब हट गया है तथा वह पहले की उपेक्षा अधिक प्रसन्न रहने लगा है।

इस साधना के उपरान्त भी साधक उपने पूर्वजों के प्रति सम्मान भाव बनाये रखें तथा जब भी कोई आक्रमिक संकट की स्थिति उसके जीवन में आये तो उपरोक्त मंत्र का केवल ११ बार जप करें। उनका शूलम रूप में आवाहन कर, उनसे संकट मुक्ति की प्रार्थना जरूर। आपके पूर्वज तो आपके ही होते हैं, वे क्यों नहीं आपके भजहवक और सहयोगी होंगे। यदि आप उनका समरण और विन्तन सौदेब सम्मान पूर्वक एवं आत्मीय दंग से करते रहेंगे।

(साधना सामग्री न्योदायर रु. ३००)





विश्व विद्या की कल्पना हिंदू धर्म में  
कृष्ण वर्त्तने हो करता है, तो उन्हें सार्व  
ज्ञान विद्या में जैव साक्षर  
त्वं विद्यारूप विशेष आवश्यकता  
नहीं है, इस प्रकार ज्ञानिकर्ता से  
प्राप्त अनुभव का एक विशेष  
उत्तमांकन प्राप्त होता है।

(पृष्ठा 'जगत्' 2002 मंत्र-तेज-वेद विशेष '56')

किसी भी संस्कृति की विशेषता उस संस्कृति का दर्शन (Philosophy) है, इस दर्शन को जो व्यष्ट करते हैं उन्हें जानी कहा जाता है, और अपने ज्ञान को जब यह संसार में बाटते हैं, तो उनका सिद्धांत मानने वाले उन्हें अपना गुरु अथवा भगवान मान लेते हैं। पारंतीय दर्शन मूलसूत्र से वेद ज्ञान विद्यों ने प्रभावित हैं। इसके साथ ही साथ पारंतीय दर्शन चारोंक बुद्ध, सांख्य, वैदेन, गंडर इत्यादि से भी प्रभावित हैं।

वेदिक कानून में ही पुरुषजन्म के सिद्धांत का प्रतिपादन हुआ, जिसके सम्बन्ध में जीता मैं अन्यन्त सुन्दर हुग के व्याख्या की नई है 'जिस प्रकार मानव की आत्मा धिन धिन अवस्थाओं से जैसे श्रीधावस्था, वुचावस्था, वृद्धावस्था से गुजरती है उसी प्रकार यह एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है (कठोपनिषद्)'। जीता के दूसरे अध्याय में यह लिखा है कि जिस प्रकार मनुष्य पुरुषों वस्त्र के जीर्ण हो जाये पर नवीन वस्त्र को धारण करता है उसी प्रकार आत्मा इतर द्वारा बृद्ध शरीर को छोड़ कर नवीन शरीर धारण करती है। वेद के सिद्धांत को जागे उपनिषदों द्वारा देवांत, नीमांसा द्वारा व्यष्ट किया गया है।

भारतीय दर्शन का प्रमुख लक्षण यह है कि यहाँ के दार्शनिकों ने संसार को दुःखमय माना है। दर्शन का विकास ही भारत में आध्यात्मिक असन्तोष के कारण हुआ है। रोग, मृत्यु, बुद्धाया, कषण आदि दुःखों के फलस्वरूप मानव मन में सर्वदा अशांति का निवास रहता है। बुद्ध का ब्रह्म आर्थिसत्य विश्व को दुःखात्मक बनलाता है। उन्होंने रोग, मृत्यु, बुद्धाया, मिलन, वियेज आदि की अनुभूतियों को दुःखात्मक कहा है। जीवन के इस एहत्यू में मानव दुःख का ही दर्शन करता है। उनका यह ज्ञान है कि दुश्चियों ने जितना आशु बदला है उसका पानी जनुद्रव्य में भी अधिक है, जगत के प्रति उनका दृष्टिकोण प्रसन्नावित करता है। बुद्ध के प्रवग आर्थ मन्त्र से गांध्य, वेद, न्याय, वेश्विक, शक्ति, रामानुज, जैन आदि सभी दर्शन सहमत हैं। सांख्य ने विश्व को दुःख का सामर कहा है।

विश्व में तीन प्रकार के दुःख हैं - आध्यात्मिक, आधि-भौतिक और आधि-वैदिक। आध्यात्मिक दुःख ज्ञानीरिक और मानसिक दुःखों का दृसरा नाम है। आधि-भौतिक दुःख बाह्य जगत के प्राणियों से, जैसे पशु और मनुष्य से, प्राप्त होते हैं। इस प्रकार के दुःख के उदाहरण चोरी, ठंडी, हत्या आदि कुकर्म हैं। आधि-वैदिक दुःख वे दुःख हैं जो अग्राकृतिक जक्तियों से प्राप्त होते हैं। भूत-प्रेत, बाढ़, अकाल, भूकम्प आदि से प्राप्त दुःख इनके उदाहरण हैं। पारंतीय दर्शनों ने विश्व की सुखात्मक अनुभूति को भी दुःखात्मक कहा है।

उपनिषद उ  
साहित्यों में  
ओर सके  
प्रकार यहाँ  
संसार का  
किया है।

भारत  
में विश्वाय  
सिद्धांत के  
जीवन अती  
है, तथा भवि  
के कर्मों का  
जीवन को न  
तो हमारे  
निरन्तर प्रय  
है। अतः प्र  
के भाग्य क

बुद्ध ने  
लिए अष्टाव  
सूत्र के अनु  
मार्ग के  
सम्बन्ध स  
सम्बन्ध कम  
सम्बन्ध व्या  
सम्बन्ध स  
दर्शन में  
अपनाने के  
(Right Fa  
और सम्बन्ध  
दीया है।

भारती  
वेद में सत्य  
माना गया है  
Knowledg  
जान से मिन  
जाता है। इन  
हैं। इन सब

उपनिषद और गीता नेंसे दार्शनिक महिनों में विश्व की अपूर्णता की ओर सकेत किया गया है। इस प्रकार यहाँ के प्रत्येक दार्शनिक ने संसार का कलेशमय चित्र उपलब्धि किया है।

भारतीय दर्शन में कर्म सिद्धांत में विश्वास व्यक्त किया है, इस सिद्धांत के अनुसार हमारा वर्तमान जीवन अतीत जीवन के कर्मों का कल है, तथा भविष्य जीवन वर्तमान जीवन के कर्मों का कल है, यदि हम अपने जीवन को मुख्यमय बनाना चाहते हैं तो हमारे लिए वर्तमान जीवन में निरन्तर प्रदृष्टनशील रहेना आवश्यक है। अतः प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन के भाज्य का निर्माता है।

बुद्ध ने भी जीवन की पूर्णता के लिए ऋषिग मार्ग, पातो-जलि योग रूप के अनुसार दीये। अष्टांगीक आठ मार्ग के अंग हैं, सम्यक इष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्मान, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि। इसी प्रकार जैन दर्शन में जीवन की पूर्णता को अपनाने के लिए सम्यक दर्शन

(Right Faith), सम्यक ज्ञान (Right Knowledge) और सम्यक चरित्र (Right Conduct) त्रिमार्ग का ज्ञान दीया है।

भारतीय दर्शन ने धेय को प्रसादा इसलिए माना है कि वेद में गन्य का साक्षात् दर्जन अर्तशान (Intuition) के द्वारा माना गया है। अर्तशान का स्थान तार्किक ज्ञान (Logical Knowledge) से ऊचा है। यह इन्द्रियों से होने वाले प्रत्येक ज्ञान से भिन्न है। इस ज्ञान द्वारा ही गन्य का साक्षात्कार हो जाता है। इस प्रकार वेद द्वारा ऋषियों के अर्तशान का भण्डार है। इन सब दर्शन को स्पष्ट करने के पीछे यह उद्देश्य है कि

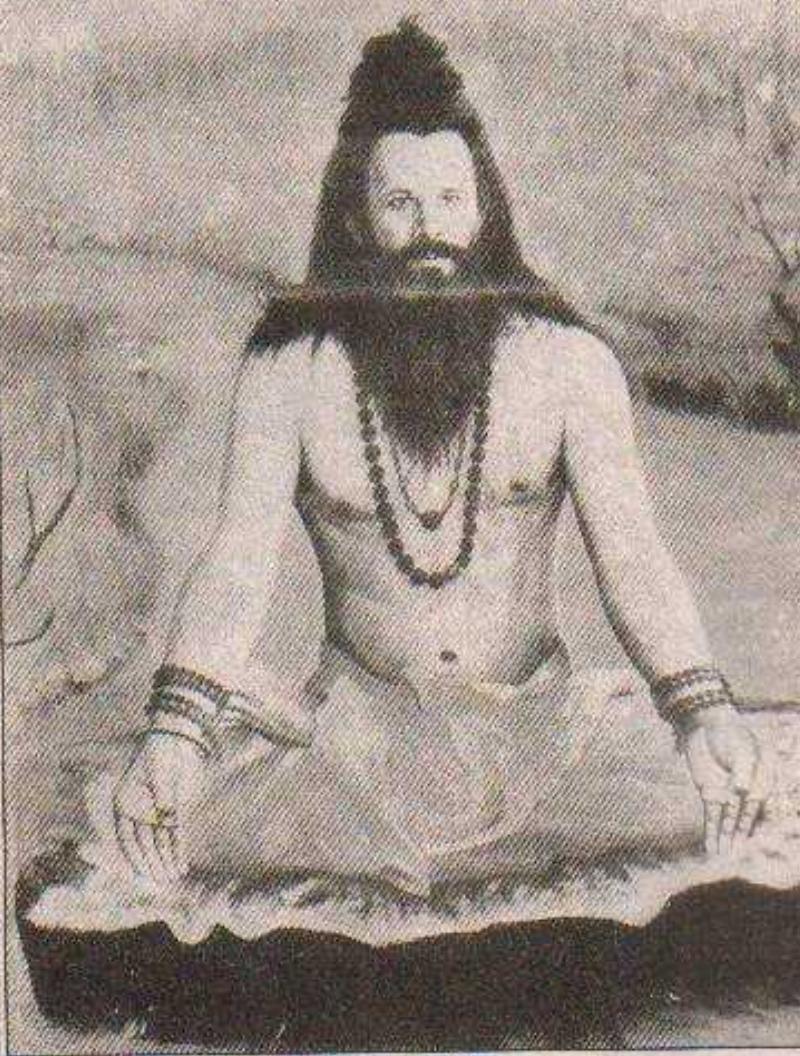


वही व्यक्ति जीवित है जो अपने जीवन में हो इष्टा बन जाता है और जो दूषा बना जाता है वह ऋषि बन जाता है।

ऋषि व्यक्तित्व होने के लिए अर्तशान का उत्तरदृष्टि का पूर्ण विकास होना आवश्यक है।

इस प्रकार ऐड मनुष्य वही होता है जो अपने जीवन को इस प्रकार ढाल ले कि उसमें भिन्न पात्र सिद्धियों रूपतः ही उत्पन्न हो जायें—

१. वह हरदम स्वस्य, निरोग, प्रसन्नचित्त रहे। २४
२. घण्टे दसके चौहरे पर एक सहज मुस्कराहट बिरुद्धी रहे। वह पूर्ण आयु भेजे।



२. उसकी आवाज पूर्ण सन्नोहन दूर, गंगीय परन्तु माधुर्यं दुर्क हो। वह किसी को भी कुछ कहे, तो समाने बले पर उसका दूरा प्रभाव होना ही चाहिए।
३. उसका व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक एवं चुम्बकीय होना चाहिए। उसका आभा मण्डल इनका विकसित हो, कि सामने बाला व्यक्ति स्वतः ही उसकी ओर आकृष्ट हो उसकी हर बाज मानने को नत्पर हो जाए।
४. वह जिस क्षेत्र में भी कदम रखेगा, उसमें ऊचाईदी को स्पर्शी करें। उसमें सम्पूर्ण प्रभार का ज्ञान समाहित हो और वह हर क्षेत्र में प्रदोष हो।

५. नीतिकता के साथ-साथ आध्यात्मिक उत्थान भी हो और इसी जीवन में दिव्य अनुभूतियां प्राप्त करें। अगर ये पांच बिन्दु व्यक्ति के जीवन में समाहित हैं, तो निश्चित ही वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी है, नहीं तो यह मानव जीवन पशुत्व ही है क्योंकि पशु का ही जीवन ऐसा होता है, उन का जीवन पर कोई नियन्त्रण नहीं होता...

हमारे पूर्वज, हमारे ऋषि, वह ही चेतनावान्, दिव्यगुण पुरुष थे, जिन्होंने मानव के जीवन में विभिन्न परिस्थितियों के अनुपार साधनाएं विकसित की। जिनके द्वारा व्यक्ति अपना अभीष्ट पूर्ण कर सके। ऋषि वे उक्तनम कोटि के योगी, यति होने हैं जो पूर्ण रूप से ब्रह्ममय हो जाते हैं, स्वयं अहं स्वस्प हो जाते हैं, और जिनके लिए असम्भव नाम की कोई स्थिति नहीं होती.... ऋषि ही बास्तव में इस ब्रह्माण्ड के नियंता है, उनकी सूक्ष्म, नियन्त्रक तरणों के माध्यम से ही, समस्त ब्रह्माण्ड गतिशील है...

वे सही अद्यों में मनुष्य थे, क्योंकि अपने जीवन की सभी दोर उनके स्वयं के हाथ में थी... और अगर हम आपने पूर्वजों की स्थिति तक न भी पहुंच पायें तो कम से कम ये स्थितियों तो अपने जीवन में उतार ही लें, जिससे हमारा मनुष्य होना नाशक हो सके...

आज धर-धर में विभिन्न रोगों का बोलबाला है। कोई भी वर ऐसा नहीं होगा जो इसे मुक्त हो। पर अगर व्यक्ति स्वस्थ हो, निरोगी हो, तो वह दिन भर ज्यादा अच्छा काम कर सकेगा और ज्यादा जोश के साथ सफलता की ओर

अगस्त में सकने में किस दृश्य सम्मेलनों वा राजनीतिक घटनाएँ होती हैं। जल्दी ही व्यक्ति बाला व्यक्ति बात मानने व्यापार लाइफ में साथ उगल ले, तो उन अगर तुम्हे है तुम पर अनुपम।

यदि पूर्णता भी मानव, पूरा तो वह एक बंधा हुआ के बाअध्यात्मिक हो सके...

और किया, जो का निर्माण ज्ञान व्यक्ति समावेश क होता है।

यह साधारण नहीं है अति है, जिसके हो जाना है

अपरसर ही सकेगा और बिना किसी भय के घृणायु शोग सकने में सक्षम ही सकेगा...

किसी भी व्यक्ति द्वारा प्रशापित करने के लिए वाक्यात्मक एवं सम्मोहक वार्षी का मिश्रण अत्यावश्यक है, इंटरव्यू ढोया राजनीति, पब्लिक मीटिंग हो या क्लॉनफ्रेंच या बिजनेस हीलिंग। इनमें वाक्यात्मक का होना बहुत लागभी होता है... कला के शेष में भी मधुर एवं आकर्षक आवाज जरूरी है।

व्यक्ति का व्यक्तित्व इतना चुन्हकीय हो, कि सामने वाला व्यक्ति उसकी ओर आकर्षित हो नदा उनकी प्रत्येक बात मानने के लिए तत्पर ही जाए... ऐसे भी आजकल ज्यादा ध्यान व्यक्ति की पर्सनलिटी पर ही दिया जाता है.. पब्लिक लाइफ में तो इसका महत्व कई गुना अचूत होता है... साथ ही साथ अगर व्यक्ति अपने श्रेष्ठ की उच्चताओं को स्पैशन कर ले, तो उनका जीवन और मरण एक समान हो है, क्योंकि अगर तुम्हारे ही जैसा और कोई भी हो गया, तो किस लान्त है तुम पर अन्यथा किर तुम अकेले ही हो... अद्वितीय, अनुपम।

यदि भौतिक सम्पूर्णता के साथ ही साथ आध्यात्मिक पूर्णता भी उपलब्ध हो जाए, तो फिर व्यक्ति निश्चय ही पूर्ण मानव, पूर्ण मनुष्य कहलाने योग्य हो पाता है। इससे पहले तो वह एक पश्च है, जो कि विशिष्ट बंधनों एवं मजबूरियों में बंधा हुआ अपना जीवन ढो रहा है....

केवल मनुष्य में वह क्षमता होती है... किय वह आध्यात्मिक दृष्टि से अपने नाम को ऊंचा उठाकर छव्वलीन हो सके...

और इसलिए ऋषियों ने एक ऐसे विवस का चयन किया, जो अपने आप में तेजस्विता युक्त है, और इस साधना का निर्माण किया जो इस विवस पर की जाती है, जिसके छारा व्यक्ति सहज ही में उपरोक्त बिंदुओं का अपने जीवन में समर्वेश करता हुआ हर प्रकार से सफलता का अधिकारी होता है।

यह साधना कोई मामूली साधना नहीं है, यह मंत्र कोई साधारण मंत्र नहीं है, क्योंकि यह देवी-देवताओं के लिए नहीं है उपर्युक्त ऋषियों के उस अवर्णनीय ब्रह्मात्म से आपूरित है, जिसके छारा समस्त जीवन ऊंचा पुनः ऊंचा से उपरित हो जाता है... और वह हर प्रकार से शेष जन पाता है.. पूरी

तरह से किसी व्यक्ति का आमूलचूल परिवर्तन हरी साधना द्वे राम्भव हैं, जो व्यक्ति जीवन में ये सभी बिंदुं प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें तो यह साधना करती ही चाहिए...

ऐसे कितने ही व्यक्तियों के उदाहरण दिए जा सकते हैं जो इस साधना के बल पर अद्वितीय बन सके।

यह साधना पूर्ण व्यक्तित्व प्राप्ति की साधना है, क्योंकि व्यक्ति का अर्थ ही उस व्यक्तित्व से है, जिसने समस्त प्रकार के अनुभवों को अपने ऊंचर पकाया हो, सब प्रकार से रहता हुआ (योगी एवं प्रोफी) अपने जीवन को गतिशील किया हो...

## साधना विधान

- इस साधना के लिए 'सप्तर्षि यंत्र', 'सप्तर्षि गुटिका', एवं 'सफेद हकीकी माला' की आवश्यकता होती है
- सर्वप्रथम साधक दिनांक ३१-९-२००२ या किसी भी गुरुवार के दिन ब्रह्म मुहूर्म में स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर, सफेद अस्त्र पर चूर्णविनाख लोकर बढ़े।
- फिर अपने सामने सफेद वस्त्र पर 'सप्तर्षि महायज्ञ स्थापित करें और उसका पंचोष्ठावर से पूजन करें।
- दिन मंत्रों का उच्चारण करते हुए एक पृष्ठ यंत्र के सामने रखते जायें—

### मंत्र

॥ ॐ श्री ब्रह्मात्म सिद्धि चैतन्यं श्री ॐ ॥

- इसके उपरान्त यंत्र के सामने 'सप्तर्षि गुटिका' स्थापित कर उसका भी पूजन करें।
- 'सफेद हकीकी' माला से निम्न मंत्र की ५१

### मंत्र

॥ ॐ श्री ही सप्त ऋषिभ्यो

ब्रह्मवर्चस्वं ही श्री ॐ ॥

यह एक विशेषीय साधना है। अतः साधना के बाद यह यंत्र और माला ११ दिन तक पूजा करे घर में ही रखें और शिव्य ५१ बार इस मंत्र का उच्चारण यंत्र के समक्ष करें। ३१ वे दिन मंत्र उच्चारण के बाद यंत्र, गुटिका एवं माला को सफेद वस्त्र में लपेट कर किसी भी जलाशय में अर्दित कर दें।

(साधना सामग्री न्योछावर रु. 300)

सर्वां

सर्वार्थ मि

हिमुक्ति

अमृत नि

सिद्ध योग

पुला (८)

आप स

कारण आ-

अपने गुण

द्वाप कार्य पू

आकर कोड

करेंगे तो नि

सहयोग नि

होगी। भौत

विशेष नीच

'महाकाल'

१,८,१०,

पूर्णिमा

दूसरे सप्त

काई भी न

करते रहे त

भी रूपये

मिलेगा।

वातावरण

जरूर ब्रह्म

धनुष (३)

यह सम

आपको रा

आपको सा

की प्रसिद्धि

तथा उनके

उत्साह रहा

प्राप्ति होगी

तिथिया २,

मकर (५)

इस सम

भी कार्य

आध्यात्मिक

समय व्यती

ही अच्छा

तथा परिवा

रिप भवन

हो धन की

# ब्रह्मवा की वापी

मेष (च, चे, चो, ली, ल, लो, आ)

यह माह आपके लिए उत्तर चहरे पुक रहेगा इसलिए इस समय आप जो भी नये कार्य सोच रहे हैं, वह बोच लक कर करें, बट्टेकि इस समय आपको उर कार्य को करने में काफी कठिनाई का वापन करना पड़ेगा। ब्रह्मवार वर्ष के व्यक्ति नये रोजगार की प्राप्ति होगी, मिश्रों से पूरा सहयोग प्राप्त होगा किसी भी प्रकार की डिप्लोमाने पर हनाश न हो तथा ईश से कार्य करें। इन परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। आकर्षित धन प्राप्ति का योग है। उनकी मेलनत यंग लाएगी तथा उनके सभी काय सकल होंगे। पूर्ण अनुकूलता के लिए 'सरस्वती साधना' समर्पण करें। शुभ तिथिया १,३,१०,१५,२१,२७

वृष (ई, उ, ए, वा, वी, व, वे, वी)

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होता है जिसे जीवन में कठिनाईयों का सामना न करना पड़े फिर आप उसे घबरा रहे हैं? जैली भी परिस्थिति में उड़ि हो, उसका सामना आपने पूर्ण पौरुष से करें, इससे आपके सामान में बुझ होगी परिवार आपके लिए महावपूर्ण व्यापार है, जिसकी उपेक्षा अपेक्षानीय नहीं है। स्वाल्लव को भी ध्यान में रखना पड़ेगा और व्यापार आदि के लिए यदि आग बोढ़ करनी पड़े तो कोइ हन नहीं है। वह आप जीवने व्यक्तित्व की शोभा नहीं देता। साधनात्मक वित्तन बनाये रखें, इस माह आप 'शनि साधना' संपाद्न करें। अनुकूल तिथिया २,४,५,१३,१८,२१

मिथुन (का, की, कु, ब, घ, को, डा)

यह माह आपके लिए प्रम प्रश्नों का लेकर उत्तराहृष्ट रहेगा तथा मार्गनिक कार्यों के लिए उत्तराहृष्ट होना रहेगी। धार्मिक प्रश्नों की लेकर यात्रा के गोग बर्दें। न्यायव्याप के मामले में किसी भी प्रकार की लापरवाही न रखें। जो भी कार्य करना चाहते हैं, स्वयं को मौलिक सज्जबूज के आधार पर ही करें। मतभेद की स्थिति में शांति एव सेवन का परिचय वै। कारोबारी यात्रा सामान्यतः अधिक दृष्टि से अनुकूलता प्रदान करने वाली निव देखें। मिश्रों का वाट्यान प्राप्त होगा। इस समय कार्य 'पारदेशवार शिव साधना' समर्पण करें। अनुकूल तिथिया

१,३,१०,१५,२१,२७

कर्ण (ही, हू, हो, डा, वी, डे, डा)

इस समय शत्रुओं से सम्भल कर ही रहें क्योंकि शत्रु आप पर हाथी रहेंगे और आपके उर कार्य में रुकावट ढालेंगे इसलिए हर कार्य करते समय सावधानी बरतें और किसी भी व्यक्ति पर भरोसा मत करें क्योंकि वह माह आपके लिए समरस्याओं से डिग्र हुआ रहेगा। व्यापारी वर्ग इस समय कोई नया कार्य मालम्ब नहीं करें। जो कार्य कर रहे हैं, उसे ही करते रहें। ब्रह्मवार व्यक्ति रोजगार प्राप्ति के लिए प्रयास करें। परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा तथा प्रेम वसंग को लेकर उत्साह एवं व्यस्तता रहेंगी। आप 'शुक्र शिव सावृत्य साधना' समर्पण करें। अनुकूल तिथिया ३,५,१०,१५,१८,२२,२८

शिंह (मा, मी, मू, मे, मो, डा, वी, दू)

इस माह आप में कुछ तीव्रता होगी। उपने कादी के धनि प्रसन्नता के साथ वह भी ध्यान रखें, कि स्वभाव में उत्तरा न आए। और अपने विचारों को संतुलित रखें और उनको क्रमबद्ध स्थप में प्रस्तुत करें। कई नए मित्र बनेंगे और आपको सहयोग प्रदान करेंगे। व्यवय का भी ध्यान रखना आवश्यक है। प्रेम और सौहार्द से शत्रुओं को भी मित्र बनाया जा सकता है। समाज में आपका सम्मान होगा। इस माह आप 'अनोकमना पूर्वि साधना' समर्पण करें। आपको हर कार्य ने सफलता मिलेगी। शुभ तिथिया १,५,२,१३,१८,२१

कठ्ठा (टी, पा, वी, पू, घ, ण, ठ, )

आप स्वभाव से चबल हैं एवं हसमुख भी इसलिए लोग आपकी बातों से ज्यादा ही उम्मिल होते हैं तथा आप जो भी कार्य करने हैं वह जल्दी भी कर देने हैं, इसलिए आप हर क्षेत्र में सफल हो जाते हैं।

व्यक्ति के वात्र विचारों में समय न शवाएं और धन की किञ्चन्चलनी न करें। श्रमिक वर्ग के लिए यह समय अच्छा नहीं है, इसलिए वह शोडा सोच समझ कर ही कार्य करें तथा शत्रुओं से सम्भल कर बाहर करें। पूर्ण अनुकूलता प्राप्ति के लिए आप 'आरक्ष तांत्रिक साधना' समर्पण करें। अनुकूल तिथिया १,५,११,१८,२२,२५

राजधानी, अन्धूर, रमेश, बुद्धि, विद्युतप्रकृति संस्कृति

संवार्ता विद्युत योग ८, १५, १९, २४, २७, २९, ३८ सितम्बर

ठिप्पकर योग ८ सितम्बर

अमृत सिल्क योग २४ सितम्बर

सिल्क योग ८, १८, २४, २६, २७ सितम्बर

### गेट (रा, री, रू, ता, ती, तु, ते)

आप स्वभाव से बहुत ही गधुर हैं, अपने इसी व्यवहार के कारण आप हर क्षेत्र में सफल हो जाते हैं इस माह आप पर अपने गुरु की विशेष कृपा रहेगी। आपके बहुत दिनों से सोचे हुए कार्य पूर्ण होने का समय आ गया है किसी के बढ़काव में आकर कोई भी गलत कार्रव न करें। स्वयं के निर्णय में ही कार्य करें तो निश्चित ही सफलता मिलेगी। परिवार से आपको सहयोग मिलेगा तथा आपके कार्य की सम्पादन में सहायता होगी। नीकरी वेश व्यक्ति की पदोन्नति की संभावना है किसी विशेष तार्थ स्थान में जाने का योग बन रहा है। इस समय आप 'महाकाल साधना' सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ १, ४, १०, १५, १७, २१, २४

### वृश्चिक (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यो, यू)

इस समय आपके गह कुछ ठीक नहीं चल रहे हैं छलपिए कोई भी नया कार्य हाथ ने न ले। जो कार्य कर रहे हैं, उसे ही करते रहे तथा आपने इष्ट का ध्यान नियमित करें। किसी से भी स्वप्नये पैसे उधार न लें। परिवार से आपको सहयोग मिलेगा। घर में किसी की नीकरी लगने से प्रसवता का वातावरण रहेगा। इस समय आप 'नववर्ष साधना' सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ ४, १२, १३, २२, २४

### धनु (ये, यो, आ, भी, धा, फा, दा, भे)

बहु समय आपका साजनालिक कार्यों में व्यतीत होगा तथा आपकी दाजनालिक क्षेत्र में विशेष रुचि रहेगी और उस क्षेत्र में आपको सफलता मिलेगी बेरोजगार व्यक्ति को नये रोजगार की प्राप्ति होगी तथा नीकरी पेश व्यक्ति की पदोन्नति होगी तथा उनके कार्य का सम्मान होगा तथा ऐसे प्रसंगों को लेकर उन्माड़ रहेगा। उनके हर कार्य सफल होगे तथा नये वाहन की प्राप्ति होगी। इस माह आप 'गायत्री साधना' सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ २, ३, ९, १५, १९, २५, २७

### मकर (भो, जा, जी, खू, खे, खो, गा, गी)

इस समय जुर्म की आप पर विशेष कृपा रहेगी इसलिए जो भी लाद करेंगे उसमें आपको सफलता मिलेगी तथा ऋष्यात्मिक वित्त बना रहेगा और धार्मिक कार्यों में ज्यादा समय व्यतीत होगा। अधिकारी वर्ग के लिए यह समय अद्भुत ही अच्छा रहेगा। उनके कार्यों से सम्मान होगा तथा परिवार में उनका का वातावरण रहेगा। श्रमिक वर्ग के लिए समय अद्भुत ही लाभकारी रहेगा। उनके हर तरफ से रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। इस समय आप 'शुक्र हवय स्थापन

### ज्योतिष की दृष्टि से यह मास

यह मास भारत के निवास दृष्टि से श्रेष्ठ है देश के विशेष ग्रामियों में गहने, ज्ञानवादीयक तनाव में एक दम उमी आयेंगी, सप्तसूर्य सब जगह श्रेष्ठ रहेगा। इस कारण कीमतों में भी विशेष व्यापारी, चिहार, उदासा, बंगाल में जात का विशेष योग है। राजनीतिक परिषदों में उक्ताव नीति विद्युत वहाँ और उत्तर प्रदेश में विवाद और आरोपिक उभेजा। पड़ोसी देशों से कार्रे परेशानी नहीं होगी। साधना सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ ५, १८, २२, २५, २८, २९

### कुंग (गु, गे, गो, सा, गी, लू, ले, यो, न्न)

आप जो भी कार्य करना चाहते हैं, स्वयं की स्वीकृत के आधार पर ही करें, सफलता की संभावना आधिक है। कार्यों में दृढ़ता भी दिखाई देगी और आपके विचारों का स्थिरता भी प्राप्त होगी। आपके कार्यों में जटा दृढ़ा धन प्राप्त होने से प्रसवता होगी। नीवनस्त्रीयों से वैचारिकता बनाए रखें, व्याकिं परिवारिक साम्लिंगों का उत्तम करने से वाह-विजय के लिये उत्पन्न हो सकती है। शवकाँ से सावधान रहें वह किसी भी समय यात्रा कर सकते हैं। इस समय आप 'विशेषि साधना' सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियाँ ४, ८, १०, १५, २२, २४

### गोव (बी, चू, थ, छ, वे, यो, चा, ची)

इस समय आप भावन-ओं में न बढ़े या किसी के व्यवहार में या द्वाव में आकर कोई कार्य न करें। अपने स्वयं के विश्रित में ही आपकी सफलता प्राप्त होगी, नीकरीवेश वर्ग के व्यक्तियों की पदोन्नति होगी तथा अधिकारी लोग उनके लाद की सरावना करेंगे। व्यापारी वर्ग के लोगों के लिए यह अद्भुत ही सुनहरा अवसर है, किसी नवीन वाहन की प्राप्ति होगी। इस समय शशु आपके कार्यों में अद्भुत परशान रहेंगे व्याकिं उनकी आपकी सफलता अच्छी नहीं लगेगी, वे आपके हानि पहुँचाने की कोशिश करेंगे। इसलिए शशु से रणवधन रहे, अपस्त्र विवाद और रंजिश से दूर रहे। पूर्ण अवकूलता के लिए आप 'महाकाली साधना' सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ १, ५, ११, १८, २१, २५, २९

### इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

१ सितम्बर भावपत्र कृष्ण पक्ष - ५, नववार	गुला नवमी
३ सितम्बर भावपत्र कृष्ण पक्ष - ५, मंगलवार	एकावती
७ सितम्बर भावपत्र कृष्ण पक्ष - ५, अनिवार	अमावस्या
९ सितम्बर भावपत्र शुक्ल पक्ष - ३, सोमवार	हरतालिका चौथी
१० सितम्बर भावपत्र शुक्ल पक्ष - ५, मंगलवार	विनायक अष्टमी
११ सितम्बर भावपत्र शुक्ल पक्ष - ५, बृहवार	त्रिपि पंचमी
१४ सितम्बर भावपत्र शुक्ल पक्ष - ८, शनिवार	महालहमी अष्टमी
१७ सितम्बर भावपत्र शुक्ल पक्ष - ११, मंगलवार	एकमा एकावती
२० सितम्बर भावपत्र शुक्ल पक्ष - १४, शुक्रवार	अनन्न चतुर्वेदी

# सामाया

गारक, पालक तथा सर्वजल रामान के लिए समय का वह रूप यह प्रत्युत है, जो किसी भी लालि के नीचने तेज़ति का कारण होता है तथा जिसने गान कर आए और अपने लिए उक्ति का नाम द्रश्शक कर सकते हैं।

वोले दे यह सारणी में समय का शेष रूप में प्रत्युत हिन्दू रूप है जीवन के लिए आवश्यक किसी भी काम के लिये, यह वह द्वयापार से सम्बन्धित है, जोकरी है सम्बन्धित है, इस में शेष उत्सव से सम्बन्धित हो जयपा अन्य किसी भी लाये से सम्बन्धित हो, आप इस अष्टतम तारय का अपनों प्रकर सकते हैं और सफलता का प्रतीक्षा ११-१२ अपके धार्य में उकित हो जायेगा।

**ब्रह्म मुदूर्त जा अमय प्रातः ४.२४ जे ६.०० बजे तक ही रहता है।**

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार ( अगस्त 25, सितम्बर 1-8-15 )	दिन ०६.०० से १०.०० तक रात्रि ०६.४८ से ०७.३६ तक ०८.२४ से १०.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक
सोमवार ( अगस्त 26, सितम्बर 2-9-16 )	दिन ०६.०० से २७.३० तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक रात्रि ०७.५६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
मंगलवार ( अगस्त 27, सितम्बर ३-१० )	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.०० से १२.२४ तक ०४.३० से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.००, १२.२४ से ०२.००, ०३.३६ से ०६.०० तक
बुधवार ( अगस्त २८, सितम्बर ४-११ )	दिन ०७.३६ से ०९.१२ तक ११.३६ से १२.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक रात्रि ०६.४८ से १०.४८ तक ०२.०० से ०६.०० तक
गुरुवार ( अगस्त २९, सितम्बर ५-१२ )	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०४.२४ से ०६.०० तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
शुक्रवार ( अगस्त ३०, सितम्बर ६-१३ )	दिन ०६.४८ से १०.३० तक ०४.२४ से ०५.१२ तक ०६.२४ से १०.४८ तक ०१.१२ से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक
शनिवार ( अगस्त ३१, सितम्बर ७-१४ )	दिन १०.३० से १२.२४ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक ०८.२४ से १०.४८ तक ०२.०० से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक



# ग्रह भवन वाही विष्णु बिहू का ग्रहण

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में समय-असमय की भावना रहती है, कि यह कार्य उक्त घटना का नहीं सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बधाएं तो उपर्युक्त नहीं हो जायेगी यह नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा दिन की समाजी पर वह स्वर्य को लक्षणात्मक कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाया चाहता है, जिनसे उसका प्रार्थक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समय प्रस्तुत हैं, जो उपर्युक्त विधि के विविध प्रकारित-उपकारित स्थानों से सकालित हैं, जिन्हें वहाँ प्रार्थक दिवस के अनुकूल प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें समझ करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकता है।

## स्थितिश्वर

१. शुभ कार्य के लिए प्रातः, काल बाहर जाने समय दरवाजे पर चुटकी भर नमक छिड़क दें।
  २. प्रातःघर से निकलते समय गूढ़ गांता के देख वे इलोक का ५ बार पाठ कीजिए।
  ३. कुंकुम से किसी वृक्ष के पते पर स्वस्त्रिक बनाकर मंदिर में चढ़ा दें।
  ४. प्रातःकाल 'खद्राश माला' लो धारण कर कार्य पर जाएं सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। (न्यौड़ाघर २००)
  ५. मीठी वस्तु का धोग लगाकर गाय को रिहिलाकर ही कार्य आरम्भ करें।
  ६. चेतना मंत्र की ४ माला जप कर कार्य आरम्भ करें।
  ७. प्रातः निखिलस्तवन के ११ इलोक का १ बार पाठ करें।
  ८. निन्न मन का २१ बार उच्चारण कर ही घर से बाहर जाएं-'ओ हो ही हू नमः'
  ९. प्रातः काल बाहर जाने से पूर्व दो सफेद पुष्प अपने सिर पर धुमाकर माल में फेंक दें।
  १०. अपने दिन का आरम्भ करते समय जब बाहर निकलें, तो पहले आप बाहिना पांव बाहर रखें।
  ११. प्रातः काल बाहर जाने से पूर्व निखिलेश्वर शतकम के २१ से लेकर ३० तक के इलोक का पाठ करके कार्य पर जाएं।
  १२. अपने रसोई घर में प्रातः मा अन्नपूर्णा का ध्यान करते हुए तेल का दीपक लगाएं।
  १३. 'तान्त्रोक्त फल' को कुंकुम में रंगकर अपने घर की उत्तर दिशा में प्रातःकाल फेंक दें।(न्यौड़ाघर ६०/-)
  १४. अपने बुजु़ों के घरण स्थान कर ही घर से बाहर कार्य पर निकलें। या अपनी छोटी बच्ची को प्यार करके जाएं।
  १५. प्रातःकाल उठकर देवदर्शन या इष्टदर्शन कर अपना दिन आरम्भ करें।
  १६. तुलसी के पतों का गहण कर घर से बाहर जाए।
  १७. 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का ज्यारह बार उच्चारण कर घर से बाहर जाएं।
  १८. एक गिलास पानी लेकर उसमें ऐं बीज का ज्यारह बार उच्चारण कर जल को अभिमंत्रित कर जल पी लें।
  १९. प्रातः काल पीली सरसों को अपने सिर पर से पांच बार धुमाकर बाहर फेंक दें।
  २०. प्रातः काल गुञ्जित वेद ध्वनि आडियो कैसेट का श्रवण कर घर से बाहर जाए।
  २१. गुरु जन्म दिवस के रूप में निखिलेश्वरानन्द स्तवन का पाठ करें। पूरे दिन गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संबलपूर्व करें।
  २२. थी का दीपक जलाकर शांत चिन उस पर जिनना सम्भव हो, बाटक करे, इसके बाय ही बाहर जाए।
  २३. चुटकी भर नमक दरवाजे पर ढालकर कर्प छेतु जाए।
  २४. गुरु चित्र के समक्ष पांच बगी का दीपक जलाकर रख दें, प्रत्येक विप्राए समाप्त होंगी।
  २५. पांच बगी का दीपक हनुमान जी के मंदिर में जलाकर आ जाएं आने वाली बाधाएं शान्त होंगी।
  २६. भगवती सरस्वती का ध्यान कर ही घर के बाहर जाएं।
  २७. प्रातः श्रीगुरु चरणों में नमन करने हुए निम्न इलोक का उच्चारण करें-
- गुकारो भवतोऽः स्यात् रुकारः ताङ्गे शकृतः ।  
भव रोग हृतपच्छ गुरु रित्यग्नियते ॥
२८. किसी व्यक्ति को सदगुरुदेव के ज्ञान से जोड़े आयदा उसे एक पत्रिका दें।
  २९. बिना कुछ खाए घर से बाहर नहीं जाएं।
  ३०. गगनसि को दुर्वा (दूब) अपैत कर कार्य हेतु बाहर जाएं।

# जीवन लाभदा



यो तो किसी भी शेष के शमन हैं तु आज विकिर्सा विज्ञान के पास अचूक  
इलाज है, परंतु मंत्रों के माध्यम से विकिर्सा के पीछे धारणा यह है कि  
सभी शेषों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े  
दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो शेष स्थायी  
रूप से शब्द हो जाते हैं।

## १. देश आप पीठ के दर्द से बीड़ित है?

आफिस में दिन भर व्यक्ति कुर्सी पर बैठा रहता है वह कार्य करता रहता है चाहे वह कम्पयुटर जॉब हो या आफिस का कार्य वह ४ से ५ घण्टे तक एक ही सीट पर बैठा रहता है इस कारण धीरे धीरे वह पीठ के दर्द से परेशान रहने लगता है शुरू में इस दर्द का पता नहीं चलता लेकिन बाद में इतनी तकलीफ होती है कि उससे बैठा नहीं जाता है।

यह समस्या आनकल महिलाओं और पुरुषों को बहुत ज्यादा ही हो जाती है लेकिन इस दौर में अब नयी युवा पीढ़ी भी पीठ के दर्द से परेशान होने लगी है क्योंकि वह भी एक ही सीट पर बैठे हुए ही कार्य करने रहते हैं।

इस समस्या से निपटने के लिए वह तरह तरह के एक्सरसाइज तथा फिजिशियन से सम्पर्क करता है लेकिन दर्द का समाधान नहीं मिलता है, यहां तक कि वह लिकाई तक करते हैं जिससे कि गलत परिणाम सामने आते हैं और इसका विपरीत प्रभाव शरीर को झोलना पड़ता है।

आप एक बार इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करें फिर देखें कि आपका दर्द दूर भागता है कि नहीं सर्वप्रथम आप शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाएं अपने सामने गुरु चित्र स्थापित कर उसके समक्ष धी का दीपक जलाकर किसी पात्र में कायाकल्प घंत्र को स्थापित कर उसका पूजन कुकुम, अक्षत, पुष्प से करें उसके बाद

मिन्न मंत्र का जप ५३ बार करें-

गं ग्र

ॐ आरोग्यं कायाकल्पं महाकेवाच नमः नमः।

मंत्र समाप्ति के बाद सभी सामग्री को एकत्र कर नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री एकेट-२४०/-

a. देश आपका बच्चा बीमार, चिड़चिड़ा, कठोरोद्ध बम्बण क्षति ढाला हो जाया है?

किसी आकस्मिक आघात के परिणाम स्वरूप या अन्य किसी कारणवश यह देखने में आया है कि उसका असर बड़ों की अपेक्षा बच्चों पर ज्यादा होता है। मस्तिष्क की नाड़ियों में अत्यधिक खिंचाव उत्पन्न होने के कारण यह कभी-कभी सदमे का रूप धारण कर लेता है और वह कोमल पुष्प इस कुप्रभाव को देख नहीं पाता, फलन्यन्य वह बच्चा उसमय ही बीमार पड़ जाता है और बात-बात पर चिड़चिड़ाना, हर कार्य का विरोध करना, उसकी आदान प्रदान जाती है।

ऐसी स्थिति में वह कभी रोता है, कभी छसता है, तो कभी मौन लो जाता है, जिससे कि पूरा घर परेशान रहता है। आप उनेक डॉक्टरों से उसका जांच करवाते हैं और कई दवाइयाँ खिलाने हैं, लेकिन फिर भी उससे फर्क नहीं पड़ता है। डॉक्टर भी उस बीमारी का समष्टता से पता नहीं लगा पाते। बच्चे के

शरीर व पड़ता है लग जाते सामान्य शनिवार परिक्रमा गुटिका कामना का मन ह गंगा

० सात बजे में प्रवाहि

३. पुर्वी, पास जान तकलीफों मोटी तक कर देते हैं विद्युता ही रोग के उ यही चुक्क यह प्रवाह जार जिसे के लिये प

प्रस्तुत अण्डवृत्ति के निराकाशीरक का उत्तम उसी काम है। 'कामने उसका संग माला' मे

शरीर व मन पर बातावरणा एवं घटनाओं का गहरा अप्रे  
पड़ता है और धोरे-धीर उसकी स्मरण शक्ति कमज़ोर प्रड़ने  
लग जाती है। इस प्रयोग के माध्यम से आप उपने बच्चे को  
सामान्य अवस्था प्रदान कर सकते हैं।

शनिवार के दिन प्रातः, बेला में पीपल के पेड़ की सात बार  
परिक्रमा कर बच्चे सूत से उसे बांध दें और हाथ में 'मेघिनी  
गुटिका' को लेकर मन ही मन बच्चे के रोगभूल होने की  
कामना करें, फिर ५ मिनट तक वहाँ खड़े रहकर निम्न मंत्र  
का मन ढी मन जप करें-

मंत्र

॥ॐ ओं क्री हौं नमोऽस्तु ठाठः॥

Om Aam Kreem Hreem Namostu Tthah Tthah

सात दिन ऐसा करें और फिर उस गुटिका को बालक के  
गले में पहना दें। महाने भर पश्चात् मेघिनी गुटिका को नदी  
में प्रवाहित कर दें।

साधना लाम्ही पैकेट-१०/-

### ३. पुरुषों के मुख बीमों के लिए प्रयोग

सबीं, खांसी, बुखार या जुकाम हो तो लोग डॉक्टर के  
पास जाकर इबा ले लेते हैं, परंतु जनननिद्रियों से सम्बंधित  
तकलीफों को लोग अताते नहीं हैं, छिपाते हैं। यदि छोटी-  
मोटी तकलीफ हो तो प्रायः उसे घड़ते रहते हैं या अनवेष्या  
कर देते हैं, परंतु जब तकलीफ बढ़ जाती है, तब डॉक्टर को  
दिखाना ही पड़ता है। आज विकित्सा विज्ञान के पास हर  
रोग के अचूक उपाय है और उनसे लाभ उठाना भी चाहिये,  
यहाँ बुद्धिमान व्यक्ति के लक्षण हैं। इस स्सम्बन्ध के अन्तर्गत  
यह प्रयात्र रहता है, कि रोग निराकरण के बे उपाय भी दिये  
जाएं, जिसे मंत्र दिये हैं, तो इस प्रकार के गुप्त रूपों के निदान  
के लिये पुरुषों द्वारा सफलता से प्रयोग किये जा सके।

प्रस्तुत प्रयोग के पुरुषों के विसी भी गृष्ण रेत, जैसे  
अपड़वृद्धि, नप्सकता, हिन्दी, ल्वानदेष, शक्तिहीनता आदि  
के निराकरण के लिये आजमाया जा सकता है। इस प्रकार के  
शारीरिक देष तभी व्यास होते हैं, जब शरीर में काग तन्त्र  
का असन्तुलन होता है। इस स्थाना व मंत्र जप का प्रभाव  
उसी कान तत्व को सुनियोजित व सन्तुलित करने के लिए  
है 'कामदेव चेटक' वो एक लाल वस्त्र पर स्थापित कर  
उसका संक्षिप्त पूजन कर लें। फिर 'पूर्ण श्रीरूप प्राप्ति कामदेव  
माला' से निम्न मंत्र की १४ बार माला निट्य द रात्रि तक

जप करें-

ॐ नमो आदेश गुरु का, जैसे के  
लेहु रामचन्द्र कबूत,  
ओचाई करहु राध विन कबूत।  
परबनपूत धाऊहर हर रावण।  
कृष्ण मिरावट, श्रवई अण्ड, खेतई श्रवई  
अण्ड, अण्ड विहण्ड, बाज जर्हहि श्रवई।  
स्त्री ख्योलहि श्रवई शांप, हर हर जंबीर  
हर जंबीर हर हर हर॥

प्रयोग समाप्ति पर समस्त सामग्री को प्रवाहित करें

साधना सामग्री ३००/-

४. लम्बे छड़े व बुन्देल बालों के लिए प्रयोग  
सिफ बाल होने ही काफी नहीं होते हैं, सौन्दर्य में सिखार  
तभी आता है जब बाल खब्जूरत हो, लम्बे छड़े, घने व काले  
हों।

बिना उपर्युक्त गुणों के बालों के लाशण चेहरे का आकर्षण  
समाप्त भी हो सकता है। आपने अनुभव किया होगा कि आप  
जब प्रातः स्वयं को तैयार करते हैं, तो चेहरे को आकर्षण  
बनाने के साथ ही यदि बालों को भी लजा देते हैं, तो आपके  
सौन्दर्य में कई गुना दृढ़ि हो जाती है।

इसके विपरीत आप यहे हों, आपके जाल उजड़े हों, तो  
आप स्वयं में और अधिक शकान अनुभव करेंगी और उस  
समय आप प्रभावपूर्ण डग से उपने कार्यों का करने में सफल  
नहीं हो पाएंगी। ज्यादातर यही अनुभव किया गया है, कि  
पुरुष हो या स्त्री यदि वह आकर्षक हो जे तैयार है, तो  
उसके आसपास का बातावरण भी उत्साहितक रहता है  
तथा ऐसे व्यक्ति तनाव का अनुभव भी कर सकते हैं।

और फिर आपके समझ नो मंत्रों की शक्ति डे जिसका  
प्रयोग कर आप विशिष्ट ही लंगों

उपने बालों के रीवन्डे देते मोती शंख में जल भर कर  
तापुपात्र में लगापित करें। फिर उसके समझ निष्प भ्यारह  
दिन तक निम्न मंत्र का उच्चारण २१ बार करें, मंत्र जप के  
पश्चात् मोती शंख में रखा हुआ जल बालों पर लगा ले।

मंत्र

ॐ बली केश सौन्दर्य बली ॐ।

भ्यारह दिन पश्चात् मोती शंख को लाल रंग के वस्त्र में  
लपेट कर, किसी निजीन स्थान में रख दें।

साधना सामग्री पैकेट-६०/-

लगा के  
धन्य क  
किसी ज  
थे पर मैं  
वहां पर  
उचाई व  
और शि  
गुरुदेव  
मेरे पूज्य  
उसी वब  
मेरी पुक

गुरु  
रायपु  
आया औ  
लाख गु  
एक ही ब  
बीच एक  
दर्शन दि  
करता है  
जाएगा।

उसी  
पूजन कि  
गया और  
अप्रेल क

जब  
कहीं कोड  
में सुखह  
था तो उ  
किया। स  
है आपकी

# साधक साधी हैं

सदगुरुदेव की कृपा से बहन का विवाह

मैं नित्य गुरु गीता, निखिल स्तवन का पाठ करने से पूर्व यह संकल्प करता था कि मेरी बहन का रिश्ता अच्छे घर में हो और उचित समय पर विवाह भी हो जाए। चार महीने नियमित पाठ करने से मेरी बहन का रिश्ता अच्छे घर में हो गया और गुरुकृपा से २३-६-२००२ को धूमधाम से विवाह भी सम्पन्न हो गया। यह सब गुरु कृपा का फल है। गुरुदेव से प्रार्थना है कि वर वधु को कृपा आशीर्वाद प्रदान करें। विवाह से पूर्व मैंने कुकुम पत्रिका गुरुवरणों में भेजी थी।

निलेश नारायण, सुशास्त्रचौक  
छाड़नवी, जिले पूर्णे महाराष्ट्र

गुरु कृपा से कार्य सिद्धि उत्तम रक्षा

गुरुदेव के श्रीचरणों में कोटि कोटि प्रणाम दिनांक १५-११-९८ को मैंने पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली थी। उस समय मैं बेरोजगार था और जून ९९ को मैंने रोजगार का संकल्प लिया था और जुलाई ९९ को मुझे ओ. एन. जी. सी. में लेबर में रख लिया गया।

दिनांक ११ फरवरी २००२ को मैं ओ. एन. जी. सी. के काम से डिमाचल में कार्य कर रहा था लगातार गाड़ियों में आना जाना था। अचानक ११ फरवरी २००२ को धूल ही धूल हो गयी सड़क बहुत ही भयानक था और एक टक आगे था पीछे वाले टक में बिटा था। गुरुमत्र जप कर रहा था रात का समय लगभग ८ बजे थे। अचानक पीछे वाला टक पलट गया और कई आदमियों को चोटे आयीं गुरु कृपा से मैं बच गया ऐसी कृपा मुझ पर और समस्त परिवार व सभी गुरु भाईयों पर सदा बनाये रखें।

बुध मिह पंचाम, भिरवोलगढ़  
लरोली देहरादून उत्तराखण्ड

गुरुदेव के आशीर्वाद से दिल्ली दर्शन

कामाड़ा शिविर में मैंने धारा लिया और उसके नीसरे दिन मन बहुत उबास हो गया। मैंने गुरुदेव जी से फोन पर बात की और उनके आशीर्वाद से मब ठीक उक हो गया। मैं २४ मई को पूजा कर रही थी और मन में ख्याल आया कि गुरुदेव आप मुझे अपने शिव स्वरूप के दर्शन देंगे। गुरुदेव जी की आरती की और रात को पूजा कक्ष में ही नीचे आसन

लगा के सी गयी। गुरुदेव जी ने मुझे अपने दर्शन तो के थन्य कर दिया। मैंने देखा कि मैंने गुरु चाहर ओढ़ी है और किसी जगह भी ओर दौड़ी जा रही हूं। वहां पर बहुत लोग थे पर मैं अकली गुरुदेव की शिष्या गुरु चाहर ओढ़े थी। वहां पर घंडारा लगा था मैं वहां पर खड़ी जैसे ही ऊपर ऊचाई की ओर देखती हूं तो वहां पर बहुत दिव्य शिवलिंग और शिवलिंग के साथ ही गुरुदेव निखिल जी खड़े थे मैंने गुरुदेव को देखा और जोर ने मेरे मुंह से निकला कि ये तो मेरे पूज्य गुरुदेव निखिलश्वरामन्द जी हैं। गुरुदेव निखिल उसी वक्त वहां से अन्तर्ध्यान हो गये। गुरुदेव जी आप ने मेरी पुकार सुनी और अपने दिव्य स्वरूप के दर्शन दिये।

हैप्पी शर्मा, सरकारी  
मण्डु हिमाचल प्रदेश

### गुरुकृपा से मकान निर्माण

रायपुर शिविर में गुरु विमूर्ति के चरण छुकर घर बापस आया और दूसरे दिन ही सदगुरुदेव का ध्यान कर सका लाख गुरु मंत्र जप प्रारम्भ किया। उस समय मेरे मन में एक ही कमना थी कि मैं कब अपने लिये घर बनाऊं। इसी बीच एक दिन गुरुदेव ने मुझे स्वरूप में गृहस्थ रूप में दर्शन दिए और बोला कि 'तू घर बनाने की चिंता करो करता है काम तो शुरू कर आकी सब अपने आप हो जायेगा।'

उसी समय मेरी ओर खुली और मैंने अनान कर गुरु पूजन किया तथा आठवें दिन नीव खुदाई का काम शुरू हो गया और नवरात्रि तक घर बनकर तैयार हो गया तथा २५ अप्रैल को गुरु पूजन कर गृह प्रवेश भी कर दिया।

जब घर बन रहा था तो मेरे मन में यह चिना आई कि कहाँ कोई घर पर जावटोना न कर दें। उसके कुछ दिन बाद मैं सुबह पांच बजे गुरुदेव का पूजन कर मंत्र जप कर रहा था तो गुरुदेव के दर्शन हुए और मुझे आशीर्वाद प्रदान किया। सचमुच मेरे गुरुदेव आप का मुझ पर बढ़ा अहसान है आपकी कृपा का अभारी हूं।

कृष्ण कुमार साहू  
कोणा नांव मध्य प्रदेश

### गुरु कृपा से नौकरी लगी।

विनांक २०-५-२००२ को राजस्थान की ग्राम पंचायतों में पैरा टीचर्स का साक्षात्कार था। मैंने भी कई पंचायतों से कार्म डाल दिये। राज्य सरकार के नियमानुसार इन्टरव्यू केवल एक ही जगह दे सकते थे। पूज्य गुरुदेव जी नियम पंचायत में मुझे इन्टरव्यू देना या उसमें तो मुझसे अधिक परसेन्टेज बाले लड़कों ने भी कार्म डाल रखा था। अतः अगर ये दोनों लड़के यहां इन्टरव्यू देते तो मैं रह जाता क्योंकि दोनों लड़के इन्टरव्यू केवल एक थीं। मैं गुरुदेव से उपयुक्त स्थान पर पोस्टेड होने की प्रार्थना करता रहता था।

एक दिन गुरुदेव ने स्वरूप में सफलता का आशीर्वाद दिया। विनांक २०-५-२००२ को मैं गुरुदेव से विशेष कारुणिक प्रार्थना करके इन्टरव्यू देने ग्राम पंचायत तिमासिया बखेड़ी धौलपुर चल दिया। पहुंचने के लिए साधन की समस्या आ रही थी। लेकिन गुरु कृपा से मैं जैसे जैसे बसेड़ी पहुंच गया कुछ कि, मी. पैदल भी चलना पड़ा। तीन बज गये थे मुझ से अधिक परसेन्टेज बाले लड़के इस ग्राम पंचायत पर इन्टरव्यू देने नहीं आये। गुरुकृपा से वे कूलरी पंचायतों पर चले गए। अब गुरु कृपा से इस पंचायत में मेरा स्थान निर्विचित था। मैंने अपने ओरिजिनल डाक्यूमेन्ट दिखाये। हेड मास्टर इन्टरव्यू का सदस्य ने फार्म जो कैसिन बरने की धमकी थी दी। लेकिन गुरु कृपा से असफल रहा। मेरिट लिस्ट में मेरा स्थान ६०, २२ प्रतिशत अंकों से प्रथम स्थान रहा। तथा द्वितीय तृतीय स्थान पर ड्रमश, ५३ प्रतिशत ५४ प्रतिशत बाले थे। गुरुदेव जी की असीम कृपा से राजीव गांधी स्वर्ण नयंती पाठशाला के लिए मेरा चयन हो गया। जिस समय हेडमास्टर ने औवरकनेक्शन लिया उस समय मैंने गुरु मंत्र का जप मन ही मन शुरू कर दिया। कुछ ही मिनटों में स्थिति पक्ष में हो गई। अन्त में मुझको चयनित घोषित कर दिया।

रतन लाल निखिल  
बरौली, धौलपुर

आपके जीवन की ४ प्रमुख समर्थ्याएँ  
उनका निष्ठान सम्भव है,  
अपने घरमें स्थापित कीजिए



**जीवन की ४ प्रमुख समर्थ्याएँ हैं, जहाँ पर्याप्ति आवश्यकता है और व्यवस्था, जीवनी, कार्य आवश्यकता, मीरी आवश्यकता है परिकार में प्रेम, जोही आवश्यकता है जीवन में किसी भी प्रकार का जीवन व जीवन की और उठी आवश्यकता है जीवन में बाधा, अद्वितीय, हमारा मन-बांध-संबंध विश्वास के कहाँ है कि कर्मशील व्यक्ति शायद कि हम के जीवन की इन ४ समर्थ्याओं के लिए प्राप्त कर सकता है, तो उसके लिए प्रयत्न है फलत उपर्युक्त मन-बांध-संबंध विश्वास के द्वारा जीवन के साथ-साथी रूप भर सकते हैं।**

मोती चुनने के लिए सामग्र में गहरे उत्तरना पड़ता है, उसी प्रकार जान के श्रेष्ठ मोती प्राप्त करने हेतु मन्त्र, वंत्र तथा तंत्र के विशाल सामग्र में यहि गुरु कृपा हो जाय, तो श्रेष्ठ स्वरूप प्राप्त कर सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान् शिव के अमृत वचनों पर अधिरित तथा नहायि शुक्राचार्य द्वारा साहिता ग्रन्थ, उड़ंग मन्त्र विद्वा पर आधारित

महायज्ञ 'घन्त चूड़ा मणि' ऐहत्यम् ग्रन्थ कहा जा सकता है।

ये शब्द, ये प्रयोग केवल शब्द मात्र नहीं हैं, ये यंत्र तो हर घर में होने चाहिए, हर एक को ये साधनाएँ सम्पन्न नहनी आवश्यक हैं, ये सिद्ध प्रयोग हैं, जिन्हें प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है।

कथा आती है, कि एक बार भगवान् शिव, पार्वती के साथ विराजमन्त्र थे, पार्वती ने शिव से निवेदन किया, कि पृथ्वी पर इसमें अधिक कष्ट क्यों है? मनुष्यों के चेहरों पर हर समय चिंता की रेखाएँ क्यों बनी रहती हैं? वे लोग जो भी कार्य

करना चाहते हैं, वह सिद्ध नहीं होता, उनकी इच्छाएँ हर समय अपूर्ण क्यों रहती हैं?

मद्र देव ने कहा, कि पृथ्वी पर मनुष्य कार्य नो करता है, कर्मशील भी है, परंतु उसमें कर्म जो सही तरीके से करने का जान नहीं है, इसके लिए वह बार-बार भटक जाता है, शास्त्रों के अनुसार चलता नहीं, उसमें आचार-विचार की

नियमित  
हर सम  
संविह  
है, गुरु  
पर  
अविज्ञ  
का दैर्घ्य  
इतनी  
में सिन  
पाती,  
कहा,  
क्या ऐस  
हो सक  
मनुष्य  
कर स  
दिन-  
चिन्नात  
कर अप  
लक्ष्य  
परमतत  
सके, म  
इसका  
इस  
विशेष  
सरलत  
स्वरूप स  
एवं जान  
प्रकृति  
यंत्र  
माध्यक  
नियम,

नियमितता नहीं है,  
हर समय अविश्वास,  
रवेह से धिरा रहता  
है, गुरु पर, साधन  
पर, मत्रों पर,  
अविश्वास करने हुए  
कार्य करता है,  
इसलिए उसे जीवन  
में सिद्धि नहीं मिल  
पाती, पार्वती ने  
कहा, कि हे देव!  
ज्ञा ऐसा कुछ उपाय  
हो सकता है, जिसे  
मनुष्य सरल रूप में  
कर सके, अपनी  
दिन-प्रतिदिन की  
विनाशों को मिटा  
कर अपने जीवन का  
लहय प्राप्त कर  
परमतत्व को प्राप्त हो

सके, मनुष्य की चिन्ताएँ उसे एक चक्र में उलझाये हुए हैं,  
इसका कुछ उपाय अवश्य बतायें।

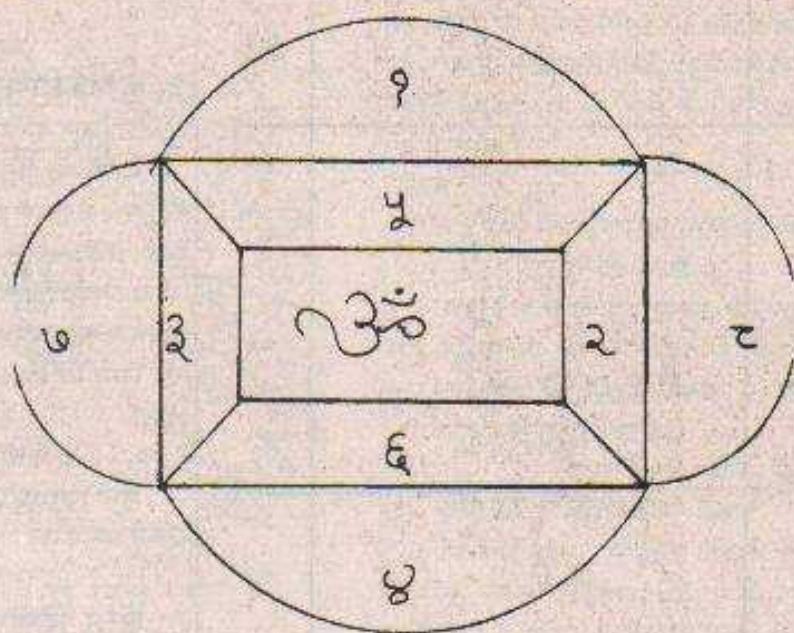
इस पर भिक्षियों के प्रदाता शिव ने जो १०८ प्रयोग  
विशेष रूप से दिये, वे साधना का, भिक्षि का आधार है,  
सरलतम विधि के साथ, सरल मंत्र जप के ये प्रयोग साधक  
स्वयं सम्पन्न कर सकेंगे, इस में सर्वप्रथम हुः यंत्र विवेचन  
एवं ज्ञान स्पष्ट किया जा रहा है, शेष आणे के अंकों में क्रमशः  
प्रकाशित किये जायें।

यंत्र साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी अनुपालना  
साधक को अवश्य ही करनी चाहिए, जिन जानकारी, जिन  
नियम, कार्य करने से सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

- प्रत्येक प्रयोग को तीन दिन तक विधि विधान से  
सम्पन्न करें, पूजन कार्य करें।
- तीन दिन तक ब्रह्मचर्य धर्म का पूर्ण रूप से पालन  
करें, ध्यान में भी शुद्धता हो।
- शुद्ध, शान्त, अन्तःकरण से ही प्रयोग सम्पन्न करना  
चाहिए, साधना समय को कल्प करना जाता है, पूरे  
कल्प में पूर्ण विश्वास के साथ कार्य करना चाहिए,

अन्यथा सेवेह पूर्वक किया गया कार्य विपरीत ही

### क्रणमोचन यन्त्र



फल देता है।

प्रथम दिन स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण  
कर गुरु पूजन सम्पन्न करें, और कुल वेवता, इष्ट  
देवता की भी पूजन सम्पन्न करें।

यंत्र साधना का कार्य एकान्त में सम्पन्न करना  
चाहिए, साधना समय में विध्न नहीं पड़ना  
चाहिए।

सातिक धोजन यहण करना चाहिए, और केवल  
दूध, कलाहार से नहीं तुमि हो, तो केवल सायंकाल  
को ही धोजन करें।

तीन दिन भूमि पर ही शयन करें, रात्रि में जो  
भी स्वप्न आये, प्रातःकाल उठकर उनका विवेचन  
उवश्य करें, अशुभ स्वप्न आने पर उसी समय  
उठ कर गुरु मंत्र का जप सम्पन्न करना चाहिए।

इन नियमों का ध्यान में रखते हुए नीचे दिये गये  
विशेष प्रयोगों को साधक सम्पन्न कर सकते हैं, एक समय  
में एक ही प्रयोग सम्पन्न करें, सुबह कोई प्रयोग, दोपहर को  
कोई प्रयोग और शाम को कोई और प्रयोग उचित नहीं है,

## व्यवसाय लाभ यन्त्र

१

₹

१०

१४

७ रु० २  
श्री ०३४ रु०  
३ करोट

६

५

११

८

एक—एक करके साथना सम्पत्ति की जाय।

### १. ऋणमोचन यन्त्र

जब ऋण बाधा बहुत उद्धिक बढ़ जाय तो अुथधार को प्रातः सुबह जल्दी उठ कर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा दुक्त ताम्रपत्र पर उकित एवं धारण योग्य तावीजरूपी यंत्र निम्न यन्त्र को अपने सामने एक पात्र में स्थापित करें, फिर इस यन्त्र को पुनः एक आर अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखें, चारों ओर 'श्री' बीज मंत्र लिखें, मध्य में जड़ों के लिखा है उसके नीचे अपना नाम लिखें, सामने सात सुपारी रखें और प्रत्येक सुपारी के नीचे एक सिक्का स्थापित करें तथा कुनकुम चढाएं, अब इष्ट देवता, कुल देवता तथा गुरु पूजन कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें।

### यन्त्र

"श्री"

इस मंत्र की ग्यारह माला मन्त्र जप करें, तीन दिन के पश्चात् मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा दुक्त 'थातु के तावीज' में बन्ध कर अपनी दाहिनी भुजा में जाले धागे से धारण कर लें।

तीन दिन के पश्चात् सातों सुपारी शिव मंदिर में चढ़ा दें।

(साधना सामग्री न्योशनावर रु. २४०)

### २. व्यवसाय लाभ यन्त्र

सोमवार के दिन त्रातः सूर्योदय के पश्चात् चित्र में दिये गये यन्त्र का पूजन अष्टगन्ध से सम्पन्न करें, यन्त्र में अपनी तुकान अथवा व्यापार का नाम लिखें, यदि स्वयं के नाम से व्यापार कार्य हो, तो अपना स्वयं का नाम लिखें, साथ ही धारण योग्य व्यवसाय लाभ यंत्र स्थापित कर, पुण्य अपित करें तथा निम्न मंत्र की सात माला प्रतिदिन जप करें।

॥ ऐ श्री ओ ही कर्ता ॥

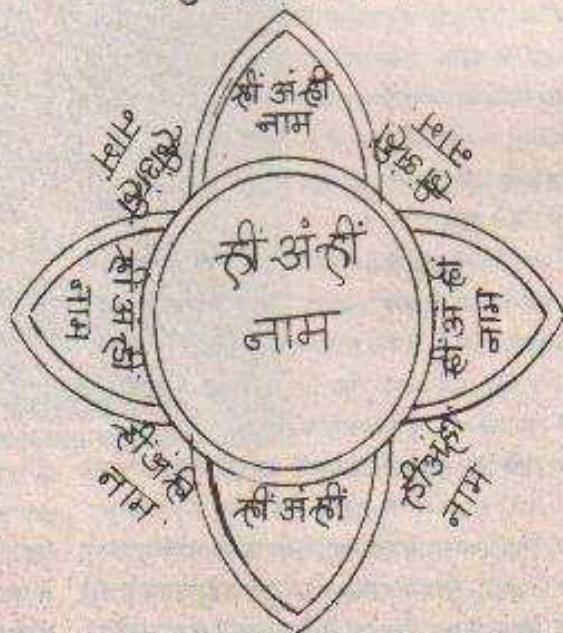
तीन दिन के पश्चात् तावीजरूपी यंत्र को गले में धारण कर लें।

(साधना सामग्री न्योशनावर रु. १५०)

### ३. शत्रु विद्वेषण यन्त्र

शनिवार की रात्रि को किये जाने वाले इस प्रयोग में दिये गये यन्त्र में नहां नाम लिखा है, वहां शत्रु का नाम लिखें, तथा भात चढाएं, और काली हकीक माला से

### शत्रु विद्वेषण यन्त्र



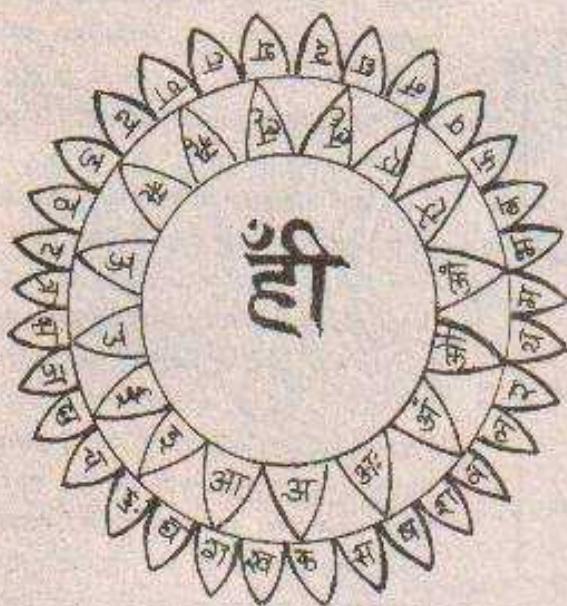
सात मा  
मन्त्र

तो  
दंत उ-  
दें इस य  
शिव मनि  
चालिए।

४. ३

गुह  
कमी जी  
पुरुषों व  
यह प्रयोग  
यन्त्र के प  
उसके ब  
समर्थ रह  
शुभ  
स्थापित  
अपित क

## अनंग यंत्र



सात माला यंत्र जप करें।

### मठत्र

॥ हीं अ हीं ॥

तीन दिन के प्रयोग के पश्चात इस ताब्दी नमस्कार यंत्र उस पर काला धारा बांध कर जमीन में गाढ़ दें इस यंत्र का पूजन और प्रयोग घर में नहीं करें, शिव मन्दिर में उथवा उमसान में ही प्रयोग करना चाहिए।

(साधना समग्री न्योडावर अ. २४०)

### ४. अनंग यंत्र

गृहस्थ सुख, जीवन का सौन्दर्य है, इसकी कमी जीवनमें एक अधुरापन कहती है, जो व्यक्ति पुरुषार्थ कमी की विवेष पीड़ाओं से यस्त हो, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पत्त करना चाहिए, इस यंत्र के प्रभाव स्वरूप स्त्री साधक के पूर्ण अनुकूल, उसके वश में और उसे पूर्ण सुख प्रदान करने में समर्थ रहती है।

शुक्रवार की मध्य रात्रि को इस यंत्र को स्थापित करें, और इसे मन्त्र, पुष्ट, नैवेद्य इत्यादि आर्पित करें, साधक श्वेत वस्त्र धारण कर 'हीं'

बीज मन्त्र का जप करते हुए अपनी शक्तिवर्धन का समरण करें, यदि सम्भव हो तो अष्टमन्द्य से भोजन्यत्र पर चमली की कलम से वह यंत्र निर्माण कर इसे भी अपने सामने स्थापित करें, फिर सात दिन तक प्रतिदिन पूजा करते हुए निम्न बीज मन्त्र की एक माला जप करें—

### मठत्र

॥ ओ ऐ मदने मदन विद्वायणे अनंग यंग मे वेहि  
देहि की कीं स्वाहा ॥

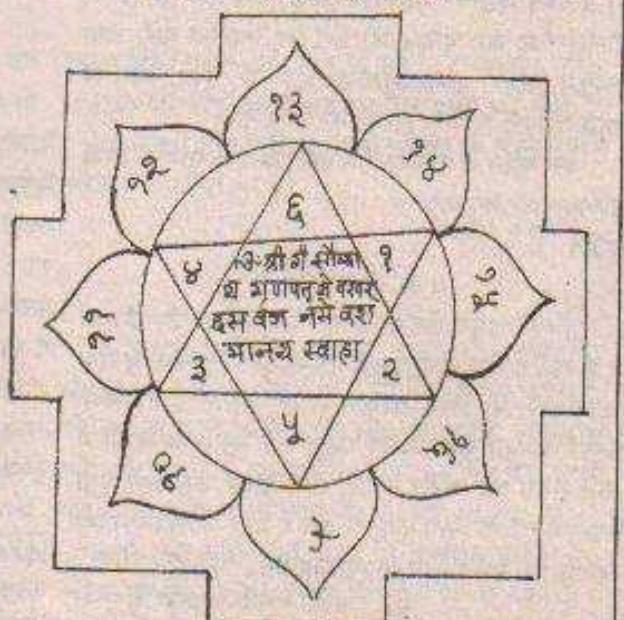
सात दिन के पश्चात साधक इसे पहले से प्रातः ताब्दी नमस्कार यंत्र अपनी भुजा में धारण करें, यह प्रयोग निःचय ही प्रबल प्रयोग है, जिसका प्रत्यक्ष परिणाम प्राप्त होता है।

(साधना समग्री न्योडावर अ. २५०)

### ५. लक्ष्मी विनायक यंत्र

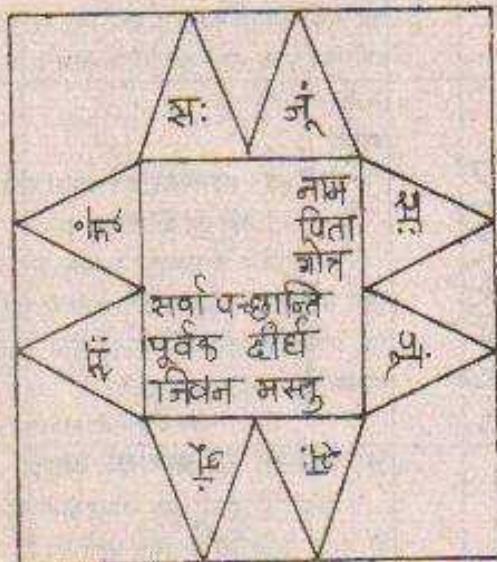
जिस पर लक्ष्मी तथा गणेश दोनों की ही कृपा हो जाय, उसके तो असंभव कार्य पूरे हो जाते हैं, उसे जीवन में आगे बढ़ने से कीन शक्ति सकता है, शुक्रवार के प्रातः स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण

### लक्ष्मी विनायक यंत्र



सं

## महामृत्युजय कवच यन्त्र



सं

००

रे

सं

कर, अपने पूजा स्थान में एक धो का दोपक जलाए, सामने गीला उत्तर बिकारकर यह यन्त्र लिखें, अब एक सूपारी पर मीली लपेट कर चाकल की ढेरी पर लथपित करें, तथा कुमकुम, केशर, अचार-शुलाल, अष्टगन्ध, पूज्य, नैवेद्य से पहले गणपति का फिर लक्ष्मी का पूजन करें।

इस पूजन के पश्चात तीन माला यन्त्र के मध्य में लिखे गये मन्त्र का जप करें-

मन्त्र

॥ॐ श्री ग्लो नमः॥

मन्त्र जप पूरा होने के पश्चात इस लिखित यन्त्र को पूजा में ही रहने दे और ताबीज स्पी यन्त्र को अपनी दाहिनी भुजा में धारण करे ले, इसके पश्चात गणेश अरती तथा लक्ष्मी अरती सम्पन्न करे। विशेष ध्यान रखें कि मूरक काढ़ी में जाते समय इसे धारण न करें, तथा उतार कर अपने पूजा स्थान में रख दें, नित्य पूजन के क्रम में यन्त्र को अपने सामने रखकर एक माला मन्त्र जप अवश्य करें।

(साधना सामग्री न्योडावर रु. 300)

## ६. महामृत्युजय कवच यन्त्र

व्याधि, पीड़ा जीवन का अपिशाप है, वीमर्शी व्यक्ति के

जीवन को धूम की तरह खोदूला कर देती है, इसीर तो निर्भीन दीता ही है, मन और हृदय शक्ति निर्भीन हो जाते हैं और एक अज्ञात मृत्यु भव द्वारा नमय बना रहता है, इसीलिए महामृत्युजय अनुशासन सम्पन्न किया जाता है, इसके पूजन में, जप में, वह शक्ति है, जो पीड़ा से प्रसन्नता की ओर बीमारी से स्वस्थता की ओर भय से निर्भयता की ओर ले जाती है।

किसी भी सोमवार को किये जाने वाले इस प्रयोग में प्राप्त: पहले स्नान कर शुद्ध इवेत वस्त्र धारण कर शिव पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात इस यन्त्र को अपने सामने रख कर एक ओर धूप, अगरबत्ती जलाए, दूसरी ओर धार में रखे किसी भी 'शिवलिंग' को यन्त्र पर रख दें कर चान्दन से पूजा करें, इसके सामने एक जल में भरा पात्र रखें, कूरे पूजन के दोरान 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र जप करते रहें, तथा इस यन्त्र को चारों कोनों तथा मध्य में भी चन्दन लगाए, इसके पहले पूजा के प्रारम्भ में ही अपना नाम, पिता का नाम तथा गोत्र (जाति) लिखें। इसके पश्चात महामृत्युजय मन्त्र की आरह माला का जप करें, चब सामने रखे जल को दाहिने हाथ से खुद के शरीर पर छिड़के, और शेष जल गीते।

मन्त्र

ॐ श्यम्बकं यजामहे गुगलिं पुष्टिवर्धनम्।

उवासिक बन्धनान्मुत्योर्भुक्षीय मामृतात्॥

यदि किसी अन्य व्यक्ति के नाम से प्रयोग सम्पन्न करना है, तो पहले दाहिने हाथ में जल ले कर वह संकल्प करें, कि मैं गुरु तथा शिव को आश्री रखते हुए यह पूजन कार्य अनुकूल (व्यक्ति का नाम, उसके पिता का नाम, गोत्र) हेतु सम्पन्न कर रहा हूं, पूजन के पश्चात इस यन्त्र के साथ प्राप्त ताबीन धारण करा दें, शिव कृपा का यह अनुत्तम प्रयोग बड़ी से बड़ी व्याधि में भी शान्ति प्रदान करता है। ये प्रयोग जल्यन्त भरल एवं शीघ्र प्रभाव देने वाले हैं, जिससे समस्या के सम्बन्ध में तात्कालिक राहत प्राप्त हो जाय, दिये गये दिनों में निरन्तर पूजन सम्पन्न करने से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती है,

(साधना सामग्री न्योडावर रु. 300)

विशेष : साधकों को इन छः यन्त्रों की साधना एवं मन्त्र जप करते समय निरेशानुसार कागज, भोजपत्र अथवा वस्त्र पर कुमकुम या केसर अथवा अष्टगन्ध से स्वयं यन्त्र का अंकन करना है और उसके साथ ही यही यन्त्र जो ताबीज रूप में भेज सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठायुक्त है, उन्हें धारण करना है।

# काल्पनिक

रामय का चक्र निरन्तर गतिशील है और यदि भूमिता से देखें, तो प्रत्येक क्षण का अपना अलग विशिष्ट महत्व है। इस काल चक्र की गात्रे के फलस्वरूप कुछ ऐसे विशिष्ट क्षण भी व्यक्ति के जीवन में आते हैं, जिनमें साधना विशेष को सापेह करने पर सकलता का प्रतिशत उचितता होता है और श्रेष्ठ राधक इन विशेष क्षणों को उपले जीवन में उतार लेते हैं। इस रुदमन के अन्तर्गत ऐसे ही विशिष्ट साधना नुहर्त को ब्रह्मनुहत किया जाता है, आप इन साधनाओं को सम्पन्न कर विशिष्ट हैं सफलता प्राप्त करे—

\* दिनांक 4-9-2002 बुधवार, ब्राह्मी को सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप यदि शत्रु नाश हेतु साधना की जाए, तो ज्यादा फलप्रद है। सामने तेज का दोषिक लगाकर किसी पात्र में बगलामुखी गुटिका रखकर प्राप्त ६ से ६.४५ बजे तक निम्न मंत्र का जप करे—

॥३० त्वीं बगलामुखि त्वीं ३० फट॥  
जप के बाद बगलामुखी गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें।

(न्यौछावर = 100/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 8-9-2002 रविवार, प्रतिपदा को सर्वार्थ सिद्ध योग एवं द्विषुष्कर योग बन रहा है इस दिन आप व्यापार वृद्धि हेतु प्रयोग कर सकते हैं अपने पूजा स्थान में सिद्ध लक्ष्मी गुटिका को स्थापित कर उसका पूजन कर उसके समक्ष निम्न मंत्र जप करे—

समक्ष निम्न मंत्र का जप प्राप्त ६ बजे से ८ बजे तक करे—

॥३० श्रीं महालक्ष्म्ये सम व्यापार वृद्धिं श्रीं ३०॥

जप समाप्त होने पर सिद्ध लक्ष्मी गुटिका को अपने पूजा में स्थान में स्थापित कर दें।

(न्यौछावर = 80/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 15-9-2002 रविवार, नवमी को सर्वार्थ सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप अपने कार्य में आ रही बाधा को समाप्त करने के लिए एक छोटा सा प्रयोग अवश्य ही करें ताके के पात्र में 'कल्पान्तिका' को स्थापित कर उसका पूजन कर उसके समक्ष निम्न मंत्र जप करे—

॥ ३० नव शक्ति सर्व बाधा निवारणाय फट ॥

जप समाप्त होने पर कल्पान्तिका को नदी में विसर्जित कर दें।

(न्यौछावर = 90/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 18-9-2002 शुभवार, छाड़गी सिद्ध योग इस दिन आप अपनी पुरी के विवाह में आने वाली अड्डवानों की समाप्ति के लिए यह प्रयोग अवश्य ही करें। किसी पात्र में जौरी शंकर रुद्राश को स्थापित कर उसका पूजन कर उसके समक्ष पांच बिल्व पत्र चढ़ाकर निम्न मंत्र का जप ६ बजे से ६.५० तक करें—

॥ ॐ शिव जौरी सम मनोकामना सिद्धि ॐ ॥

जप समाप्त होने पर जौरी शंकर रुद्राश को शिव नदिर ने रख कर आ जाए।

(न्यौछवर = 100/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 19-9-2002 गुरुवार, वयोवशी को सर्वार्थ सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप विद्या में उत्तमि के लिए भगवती सरस्वती का ध्यान कर उसके सम्प्रदाय को स्थापित कर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प से कर उसके समक्ष निम्न मंत्र वा जप ६ बजे से ९ बजे तक करें—

॥ ॐ ऐं सरस्वतयै नमः ॥

जप समाप्त होने पर सरस्वती मुटिका को धारण कर लें। तथा निम्न मां भगवती का पांच मिनट तक ध्यान करें।

(न्यौछवर = 150/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 24-9-2002 मंगलवार, तृतीया को सर्वार्थ सिद्ध योग एवं अमृत सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप अपने घर में ढाँचारी को समाप्त करने के लिए यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करें।

महाकाल तौ कालों का भी काल है प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिये। किसी पात्र में 'महाकाल गुटिका' को स्थापित कर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत से कर उसके समक्ष पांच बिल्व पत्र एवं आळ चढ़ाकर उसके समक्ष निम्न मंत्र का जप एक घन्टे तक करें—

॥ ॐ महाकालेश्वराय मृत्युंजयाय ॐ ॥

प्रयोग समाप्त होने पर महाकाल गुटिका के घर की चौड़ाठ के बाहर बांध दें जिससे कि आने वाली बाधा एवं बिमारी

पूर्ण रूप से समाप्त हो सकें।

(न्यौछवर = 120/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 26-9-2002 गुरुवार, पञ्चमी सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप धूमावती गुटिका का पूजन कर उसके समक्ष निम्न मंत्र का जप सिर्फ १३ मिनट जप करें—

॥ ॐ पूर्णधूमावती ठः ठः ॥

मंत्र जप के बाद धूमावती गुटिका को अपने पाकेट में रख लें एवं कोई विशेष कार्य पर जाना हो तो उस गुटिका को पांच मिनट तक देख कर फिर कार्य पर जाए।

(न्यौछवर = 80/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 27-9-2002 शुक्रवार, षष्ठी को सर्वार्थ सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप भाष्य को परिवर्तित करने के लिए यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करें। अपने पूजा स्थान में भाष्योदय गुटिका को स्थापित कर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प से कर उसके समक्ष निम्न मंत्र का जप एक घन्टे तक करें—

॥ ॐ श्री सीधाग्रं देहि श्री ॐ नमः ॥

प्रयोग समाप्त होने पर भाष्योदय गुटिका को जल में प्रवाहित कर दें।

(न्यौछवर = 75/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 28-9-2002 शनिवार, रात्रमी को सर्वार्थ सिद्ध योग एवं अमृत सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप अपनी किसी कामना की पूर्ति के लिए साधना सम्पन्न कर सकते हैं। कामना पूर्ति गुटिका को स्थापित उस निम्न मंत्र का जप १ घण्टे तक करें—

॥ ॐ हीं मनोवांछितं कार्यं साधय हीं ॐ ॥

प्रयोग समाप्त होने पर कामना पूर्ति गुटिका को किसी मंदिर में चढ़ा दें।

(न्यौछवर = 120/-)

\*\*\*\*\*

स्तोत्र शक्ति



# कृष्ण-कृत्त्वालोकन कथा

## कृताचरण

सुष्टि के प्रारंभ में विविध लोकों को रचने की इच्छा से तपस्या की, ब्रह्मा के इस अस्तण्ड तप से भगवान् विष्णु ने 'तप' अर्थ बाले 'सन' नाम से युक्त होकर सनक, सननन्दन, सनातन और सनकुमार इन चार मुनियों के रूप में अवतार ग्रहण किया, यह चारों महान् मुनि भगवान् का अवतार अंश थे, और अपनी उत्पत्ति से ही द्यान में तत्त्वीन मोक्ष मार्ग परायण, साधनारत एवं विरक्त रहते थे, उन्होंने अपने जीवन में ब्रह्मावर्य का ही पालन किया, और संसार को ज्ञान दिया, इन्हीं में से एक महान् भगवत् अंश सनकुमार की तपस्या महान् ऋषि पुलस्त्य ने की, भगवान् श्रीकृष्ण के त्रैलोक्य मंगल ख्यरूप श्रीकृष्ण कबच के सम्बन्ध में महर्षि पुलस्त्य की तिज्जासा को द्यान कर यह वित्तक्षण कबच कहा। साथक इस बात की ओर विशेष ध्यान देंगे की भगवान् श्रीकृष्ण की साधना के तितने भी बीज मंजूर हैं, तितने भी विशेष मंजूर हैं, ये सब कबच में समर्पित हैं, इस कबच के एक-एक मंजूर का पाठ करने से ही जीवन में कार्य सिद्ध हो जाते हैं। पूरे कबच का पाठ तो पूर्ण कर्त्त्याणकारी है-

॥ पूर्व-पीठिका- पुलस्त्य उवाच ॥

भगवन्! सर्व-धर्मेश ! कवचं यत्-प्रकाशितम् ।  
त्रैलोक्य - मञ्जूलं नाम, कृपया कथय प्रभो ! ॥३॥

॥ सनकुमार उवाच ॥

शृणु विष्णेन्द्र ! वश्यामि, कवचं परमादभूतम् ।  
नारायणेन कथितं, कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥२॥

स्वधारा  
ततः ॥  
पूज्यात्  
सकृत्  
दग्ध—  
फलमा  
भूजे वि  
यहि ।  
कण्ठे ।  
संशयः  
अपवये  
च ।

महा—  
भुवस्त्

कला:  
ततः ।

कवचम्  
त्रैलोक्य  
भवेत् ।

इदं कव  
शत—  
सिद्धय

॥इति—  
सम्पूर्ण

प्रश्नान्  
डस वि

ने कृपा  
इस कव

स्वरूप  
ह

करते हैं  
तीनों ल

तत्वों के  
कवच व

नाश वि

ब्रह्मणा कथितं महां, परं स्नेहाद् ब्रह्ममि ते ।  
अति—गृह्य—तरं तत्त्वं, ब्रह्म—मन्त्रीथ—विश्वम् ॥३  
यद् धूत्वा पठनाद् ब्रह्मा, सृष्टि विननुते धूत्वम् ।  
यद् धूत्वा पठनाद् पाति, महालक्ष्मीजंगत—व्रयम् ॥४  
पठनाद् धारणाच्छम्भुः, संहर्ता सर्वं—तत्त्वं—वित ।  
त्रैलोक्य—जननी दुग्मा, महिषादि—महाऽसुरान् ॥५  
वर—दूसान् जप्तानेव, पठनाद् धारणाद् यतः ।  
एवमिन्द्रदयः सर्वे, सर्वे चर्चमवाप्नयुः ॥६  
इदं कवचमत्यन्तं, गुरुं कुञ्जापि नो वठेत ।  
शिष्याद् भक्ति—युक्ताय, साधकाय प्रकाशयेत ॥७  
त्रैलोक्य—मङ्गलस्यास्य, कवचस्य प्रजापतिः ।  
ऋषिश्छुद्धनदश्च गायत्री, देवो नारायणः स्वयम् ॥८  
धर्मार्थ—काम—मोक्षेषु, विनियोगः प्रकीर्तिः ॥८

## ॥ मूलपाठ ॥

विनियोग—ॐ अस्य श्रीकृष्णर्घ त्रैलोक्य—मङ्गल—  
कवचस्य प्रजापतिः ऋषिः । गायत्री छादः । नारायणः देवता ।  
धर्मार्थ—काम—मोक्ष प्राप्त्यर्थं पाठे विनियोगः ।

ब्रह्मादि न्याय—प्रजापतिः ऋषये नमः शिरसि ।  
गायत्री छन्दसे नमः मुखे । नारायण उवतनये नमः हृषि । धर्मार्थ—  
काम—मोक्ष—प्राप्त्यर्थं पाठे विनियोगाद् नमः सदाज्ञे ।

प्रणवो मे शिरः पातु, नमो नारायणाय च ।  
भालं पायान्नेन—युग्मपटाणोः भुक्ति—मुक्तिदः ॥१  
कलीं पायाच्छोत्र—युग्मं वैकाक्षरः सर्वं मोहनः ।  
कलीं कृष्णाय सदा ध्राणं, गोविन्दायेति जिह्विकाम् ॥२  
गोपी—जन एव बल्लभाय स्वाहाऽऽनन्तं मम ।  
अष्टाक्षरो महा—मन्त्रः, कण्ठं पातु दशाक्षरः ॥३  
गोपी जन—एव बल्लभाय स्वाहा भूज—द्रयम् ।  
कलीं जलौं कलीं श्यामलाङ्गाय, नमः स्वल्पौ दशाक्षरः ॥४  
कलीं कृष्णः कलीं करो पायतु, कलीं कृष्णायाङ्गोऽवतु ।  
हृषयं भुवनेशानीं, कलीं कृष्णाय कलीं स्तनी मम ॥५  
गोपालायाजिन—जायान्तं, कुसि—युग्मं सदाऽवतु ।  
कलीं कृष्णाय सदा पातु, पाश्वं—युग्मं मनूल्तमः ॥६  
कृष्ण—गोविन्दकी पातु, स्मराद्यी, हे—युती मन् ।  
अष्टाक्षरः पातु नाभिः, कृष्णोति द्वयक्षरोऽवतु ॥७  
पृष्ठं कलीं कृष्ण कङ्गलं, कलीं कृष्णाय द्वि—ठान्तकः ।  
सक्षियनी सततं पातु, श्रीहीं कलीं कृष्ण—ठ—द्रयम् ॥८  
ऊरु सप्ताक्षरः पायात, त्रयोदशाक्षरोऽवतु ।

श्रीं हीं कलीं पदतो, गोपी जन बल्ल एवं ततः ॥९  
भाय स्वाहेति पायुं वै, कलीं हीं श्रीं स दशार्णकः ।  
जानुनीं च सदा पातु, हीं श्रीं कलीं च दशाक्षरः ॥१०  
त्रयोदशाक्षरः पातु, जङ्गे चक्राद्यदायुषः ।  
अष्टादशाक्षरो हीं श्रीं, पूर्वको विश्वर्णकः ॥११  
सदाज्ञे मे सदा पातु, डारका—नायको बली ।  
नमो भगवते पश्चाद्, वासुदेवाय तत्परम् ॥१२  
ताराद्यो द्वादशार्णोऽयं, प्राच्यां मां सर्वतोऽवतु ।  
श्रीं हीं कलीं च दशार्णस्तु, कलीं हीं श्रीं धाडशार्णकः ॥१३  
गवाद्युदायुधो विष्णुर्ममग्नेविशि रक्षतु ।  
हीं श्रीं दशाक्षरो मन्त्रो, दक्षिणे मां सदाऽवतु ॥१४  
तारो नमो भगवते, लक्ष्मणी—बल्लभाय च ।  
स्वाहेति ओडशार्णोऽयं, त्रैकृत्यां विशि रक्षतु ॥१५  
कलीं हृषिके—पदंशाय, नमो मां वासुणेऽवतु ।  
अष्टादशार्णः कामान्तो, वायन्वे मां सदाऽवतु ॥१६  
श्रीं माया काम—कृष्णाय, गोविन्दाय द्विठो मनुः ।  
द्वादशार्णात्मको विष्णुरुत्तरे मां सदाऽवतु ॥१७  
वाग्मवं काम—कृष्णाय, हीं गोविन्दाय ततः परम् ।  
श्रीं गोपी जन—बल्लान्ते, भाय स्वाहा च सौस्ततः ।  
द्वा—विश्वत्यक्षरो मन्त्रो, मार्गेशान्ये सदाऽवतु ॥१८  
कालियस्य कणा—मध्ये, द्विष्यं नृत्यं करोति तप् ।  
नमामि देवकी—पुत्रं, नृत्यं राजानमच्युतम् ।  
द्वा—विश्वक्षरो मन्त्रोऽप्यधो मां सर्वदाऽवतु ॥१९  
कामदेवाय विद्धाहे पृष्ठ—वाणाय धीमहि ।  
तन्मोऽनङ्गः प्रचोदयात् मां पातु चोर्ध्वतः ॥२०

## ॥ फलश्रुति ॥

इति ते कथितं विप्र! ब्रह्म—मन्त्रीथ—विश्वम् ।  
त्रैलोक्य मङ्गलं नाम, कवचं ब्रह्म—स्त्रपक्षम् ॥१  
ब्रह्मणा कथितं पूर्वं, नारायण—मुखाच्छ, तम् ।  
तव स्नेहान्मयाऽऽख्यातं, प्रवक्तव्यं न कस्यवित् ॥२  
गुरुः प्रणम्य विधि—वत्, कवचं प्रयठते ततः ।  
सकृद् द्विष्यवर्यथा—जानं, सोऽपि सर्वं—तपो—मयः ॥३  
मन्त्रेषु सफलेष्वेव, देखिको नात्र संशयः ।  
शतमष्टोतरं वैव, पुरम्बर्या—विधि: स्मृतः ॥४  
हृषनादीन दशांशेन, कृत्वा तत् साधयेद् धूवम् ।  
यवि स्वात् मिद्द—कवचो, विष्णुरेव भवेत् स्वयम् ॥५  
मन्त्र—सिद्धिर्भवेत् तस्य, पुरम्बर्या विधानतः ।

स्वधामुदधूय सततं, लक्ष्मीवाणी वसेत  
ततः ॥६

पुष्पाश्नल्यष्टकः दत्ता, मूलेनेव पठेत्  
सकृत् ।

दश— वर्ष— सहस्राणां, पूजायाः  
फलमान्यात् ॥७

भूजें विलिख्य मुलिकां, स्वर्णस्थां धारयेद्  
यदि ।

कण्ठे वा वक्षिणे बाही, सोऽपि विष्णुर्न  
संशयः ॥८

अश्वमेथ— सहस्राणि, वाजपेय— शतानि  
च ।

महा—दानानि यान्येव, प्रावक्षिण्यं,  
भूवस्तथा ॥९

कलाः नार्थन्ति तान्येव, सकृदुच्चारणात्  
ततः ।

कवचस्य प्रसादेन, जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ।

त्रैलोक्यं क्षोभयेत्येव, त्रैलोक्य— विजयी  
भवेत् ॥१०

इति कवचमजात्वा, यजेद् यः पुरुषोत्तम् ।

शत—लक्षं प्रजसो हि, न मन्त्रस्तस्य  
सिद्धयति ॥११

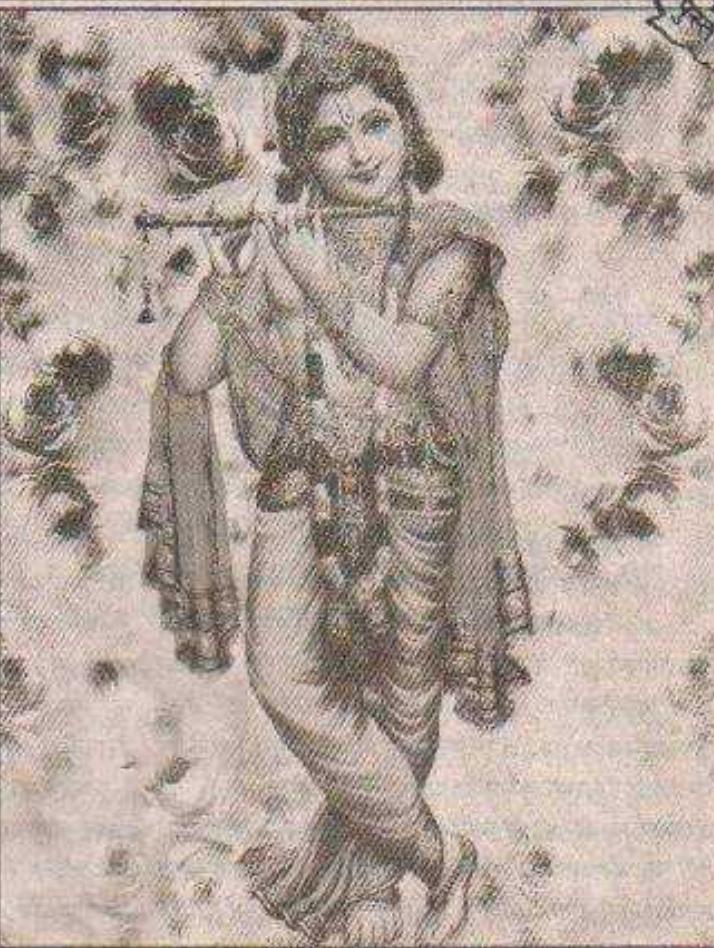
॥इति श्रीकृष्ण—त्रैलोक्य मङ्गल— कवचम्  
सम्पूर्णम् ॥

### भूमिका—

भगवान् सनक्तुमार ने कहा कि है ब्रह्मशुद्ध अद्वितीय पुलत्त्व्य ! मैं  
इस विलक्षण कवच को तुम्हें बताऊंगा जिसे भगवान् नारायण  
ने कृपा कर ब्रह्मा को बनाया, ब्रह्मा ने मेरी रचना के साथ ही  
इस कवच का जान मुझे दिया, यह कवच ब्रह्म—मन्त्र—समूह—  
स्वरूप है ।

इस कवच को धारण और पाठ कर, ब्रह्मा सुष्ठुपि की रचना  
करते हैं, और सनाती महालक्ष्मी इसे धारण और पाठ कर  
तीनों लोकों की रक्षा करती है ।

इस कवच को धारण कर भगवान् सदाशिव शंभु जो सब  
तत्त्वों के जाना है, संदार किया करते हैं, मनवती मा दुग्धनि इसी  
कवच को धारण कर, महिषासुर, चंड—मुँड आदि राक्षसों का  
नाश किया या, इसी कवच को धारण कर हनुम आदि देवताओं



ने समस्त देवदर्श प्राप्त किया था ।

इस 'श्रीकृष्ण त्रैलोक्य मंगल' कवच के बहिर्भूति  
ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता नारायण और विनियोग धर्म, अर्थ,  
काम, मोक्ष हैं ।

साधकों की लुकिधा के लिए इस त्रैलोक्य मंगल कवच का  
हिन्दी अर्थ दिया जा रहा है जिससे वे जान सके की वास्तव में  
इस कवच का अर्थ और धारार्थ क्या है? और क्या कवच का  
तात्पर्य है? यदि संभव हो नो संस्कृत भाषा में ही इस कवच का  
पाठ करें अन्यथा हिन्दी भाषा में भी इस कवच का पाठ कर सकते हैं।

### मूल पाठ (हिन्दी अर्थ)

'उं' मेरे सिर की रक्षा करे, 'नमो नारायणाव' मन्त्रक  
की रक्षा करे, और मोक्ष—मोक्ष — दाता अष्टाभर 'ॐ नमो  
नारायणाव' दोनों नेत्रों की रक्षा करे ॥१॥

सबको मुख्य करनेवाला 'कली' दोनों कानों की रक्षा करे। 'कली कृष्णाय' सदा नाक की ओर 'गोविन्दाय' जीव की 'गोपी - जन - बल्लभाय स्वाहा' मरे मुख की तथा आठ एवं दस कुल अठारह अक्षरों का महामन्त्र 'कली कृष्णाय गोविन्दाय गोपी - जनबल्लभाय स्वाहा' मेरे कण्ठ की रक्षा करे॥२-३॥

'गोपी - जन - बल्लभाय स्वाहा' दोनों भूजाओं की ओर दशाकार 'कली गली कली श्वामलाङ्गाय नमः' मेरे दोनों कन्धों की रक्षा करे॥४॥

'कली कृष्णाय कली' दोनों हाथों की रक्षा करे, 'कली कृष्णाय कली' हृदय को, 'हीं कली कृष्णाय कली' मेरे दक्षस्थल की रक्षा करे॥५॥

'गोपालाय स्वाहा' दोनों काञ्छों की सदा रक्षा करे और ब्रेड मन्त्र 'कली कृष्णाय' सदा मेरे दोनों पाँचों की रक्षा करे॥६॥

'कली कृष्णाय गोविन्दाय' - यह अटारह मन्त्र मेरी नाभि की रक्षा करे और दो अक्षरों का मन्त्र 'कृष्ण' मरी पीठ की रक्षा करे। 'कली कृष्ण' मेरे कङ्गल (अस्थि-पञ्चर) की, 'कली कृष्णाय स्वाहा' सदा दोनों स्विधियों की ओर सात अक्षरों का मन्त्र 'श्री हीं कली कृष्ण स्वाहा' दोनों उर्जाओं की तथा नेरह अक्षरों का मन्त्र 'श्री हीं कली गोपी - जन - बल्लभाय स्वाहा' मेरी गुदा की रक्षा करे। 'कली हीं श्री गोपी - जन - बल्लभाय स्वाहा' सदा दोनों जानुओं की रक्षा करे। 'हीं श्री कली गोपी - जन - बल्लभाय स्वाहा' यह तेरह अक्षरों का मन्त्र चक्रादि - अस्त्र धारी कृष्ण के समान मेरी दोनों जांचों की रक्षा करे।

अठारह अक्षर के पूर्व 'हीं श्री' तुड़कर बना लीस अक्षरों का मन्त्र 'हीं श्री कली कृष्णाय गोविन्दाय गोपी जन बल्लभाय स्वाहा' बलवान दारकांश के समान सदा मेरे सर्वोंग की रक्षा करे। 'अं नमो भगवते वासुदेवाय' यह बारह अक्षरों का मन्त्र पूर्व दिशा मेरी सब प्रकार से रक्षा करे। 'श्री हीं कली गोपी - जन - बल्लभाय स्वाहा हीं श्री' यह सोलह अक्षरों का मन्त्र गदादि अस्त्र धारी विष्णु के समान अस्त्रे कोण मेरी रक्षा करे। 'हीं श्री गोपी - जन - बल्लभाय स्वाहा' दक्षिण मेरी सदा मेरी रक्षा करे॥७-१४॥

'अं नमो भगवते रुक्मिणी बल्लभाय स्वाहा' - यह सोलह अक्षरों का मन्त्र नैऋत्य दिशा मेरी रक्षा करे॥१५॥

'कली हथीकेशाय नमः' पठिचम मेरी रक्षा करे। 'कली कृष्णाय गोविन्दाय गोपी जन बल्लभाय स्वाहा कली' वायु कोण मेरी सदा मेरी रक्षा करे॥१६॥

'श्री हीं कली कृष्णाय गोविन्दाय स्वाहा' यह बारह अक्षरों का मन्त्र विष्णु के समान उत्तर मेरी सदा रक्षा करे॥१७॥

'ऐं कलीं कृष्णाय हीं गोविन्दाय श्री गोपीं जन बल्लभाय स्वाहा सौः' - यह बाईस अक्षरों का मन्त्र इशान कोण मेरी सदा रक्षा करे॥१८॥

'कालिया - नान के कणों के मध्य मेरु खड़े होकर जो दिव्य नृत्य करते हैं, उन देवकी पुत्र, नृत्यराज विष्णु को मैं सदा प्रणाम करता हूँ' - यह बीस अक्षरों का यह अनोकात्मक मन्त्र अधो देश मेरी मेरी सदा रक्षा करे॥१९॥

'काम देवाय विश्वे पुष्प ब्राणाय धीमहि ततोऽनङ्गः प्रचोदयात्' - यह कृष्ण नायकी उर्ध्वदेश मेरी रक्षा करे॥२०॥

### कवच का फल

भगवान श्री सनात्कुमार कहते हैं कि हे पुलत्य व्राष्टि! बहु मन्त्र समृद्ध ही जिसका स्वरूप है उसी बहु रूप श्रीकृष्ण वैलोक्य मंगल कवच मैंने तुम्हें सर्वर कहा है। जिसकी रचना स्वयं भगवान नारायण ने की। इस कवच का पाठ गुरु युजन कर, समय अनुसार एक-दो या तीन बार अवश्य करना चाहिए। इस प्रकार साधक को अपनी साधनाओं का फल प्राप्त होता है। इस कवच का १०८ बार पाठ करने से पुरुषरूप होता है। और उसके पश्चात् वशांश हृष्ण करना चाहिए। इस विशेष स्तोत्र का पुरुषरूप करने से साधक को मन्त्र सिद्धि और वाक्सिद्धि तो प्राप्त होती ही है। सबसे विशेष बात यह है कि इस कवच द्वारा लक्ष्मी और सरस्वती जिनके बारे मैं यह कहा जाना है कि वोनों मैं वैरभाव है, अर्थात् जहाँ लक्ष्मी रहती है वहाँ सरस्वती नहीं रहती और जहाँ सरस्वती रहती है वहाँ लक्ष्मी नहीं रहती, लेकिन इस कवच के फल स्वरूप लक्ष्मी और सरस्वती दोनों ही साधक के घर मैं निवास करती हैं।

इस कवच का मूल मंत्र 'अं नमो भगवते वासुदेवाय' का पाठ करते हुए अपने हाथ मेरुप लेकर पुष्पाजलि समर्पित कर कवच का पाठ करना चाहिए।

मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठा द्वारा इस कवच को भुजा मैं अथवा कण्ठ मैं धारण करने से व्यक्ति निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होना है। यह जीवन मैं चैत्रव विजय प्राप्त करता है। यह कवच जो कि वैलोक्य मंगल कवच है, इसका पाठ किया जिना जो विष्णु साधना करता है, उसे जीवन मैं सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती है। यह अवश्यक नहीं है कि इस कवच का पाठ किसी भी स्वयं स्तुति मैं ही किया जाय। इस कवच का पाठ किसी भी स्वयं स्तुति कर, गुरु वस्त्र धारण कर कर सकते हैं।

# चीर्णाप्रबद्धाविषय सिंहिमाला

व्यक्ति जब उज्जति की ओर अवश्य होता है, तो उसकी उज्जति से, प्रतिष्ठा से दृष्ट्या अस्त होकर कुछ उसके गिर ही उसके शत्रु बन जाते हैं और उसे सहयोग देने के स्थान पर वे उसकी उज्जति के मार्ग को अवश्य करने के लिए प्रयासरत हो जाते हैं। ऐसे शत्रुओं से लिपटने के लिए वीताभ्यर्थ विजय सिंहि माला को सिद्ध व प्राण प्रतिष्ठित किया जया है। इसके माध्यम से समस्त प्रत्यक्ष आपत्यक्ष शत्रु समाप्त होने, वहीं इस माला के प्रभाव से आपके कार्यों में भी सफलता मिलेगी, आपकी कहीं पराजय नहीं होनी। यह माला निश्चय ही उज्जति और आत्म रक्षा के लिए विशेष लाभप्रद है। समस्त प्रकार के शत्रु वसके प्रभाव से बचतः ही शांत हो जाते हैं, और आप भयमुक्त हो जाते हैं।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठ दाब - 'ज्ञान दाब'

ज्ञान दाब वे जीवन का सर्वश्रेष्ठ दाब बताया गया है। आप किसी एक व्यक्ति को फूल गुलबेब की इस जान परम्परा से उसे पत्रिका का व्यापक सदस्य बनाकर जोड़ सकते हैं। साथ ही आप २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएँ त्राय वर गोदियों में, अन्यतानों में समारोह में वगल कार्यों में बाल्याणों को, निधन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस ब्रह्म ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अर्थी नज़ इसमें वर्चित है। इस क्रिया के माध्यम से कोई मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शोतूता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अवश्य ही सकृदाह और आपको तुष्ण जाग जाएगा।

इधिः किसी भी नगन्तवार को प्राप्त, अथवा रात्रि में इस माला से बगलामुखी मंत्र 'ॐ ह्ली बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं सदस्थय जिङ्गा कीलय बुद्धि विनाशय ह्ली ॐ फट' की तीन माला जप करें। इस तरह अगले ११ दिनों तक हरी माला से नित्य ३ माला जप करें। येर माला को किसी नियन स्थान पर छोड़ आएं

## 'आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्ट कार्ड क्रमांक ३) भेज दें, कि 'मैं अपने एक पत्रिका का व्यापक सदस्य बनाना चाहता हूं एवं २० पूर्व पत्रिकाएँ मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित पीताम्बर सिद्धि माला' ३९०/-२० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क ३००/- + डाक व्यय १०/- की बी. पी. पी. से भिजजा दें, बी. पी. पी. आपने पर मैं पोस्टमैन को धन राखि देकर छुड़ा लेंगा। बी. पी. पी. छुट्टें के बावजूद १० पत्रिकाएँ रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें एवं मेरे गिर को एक वर्ष तक पत्रिका भेजते रहें। आपका पत्र आपने पर हम ३००/- + डाक व्यय १०/- = ३१०/- की बी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित पीताम्बर सिद्धि माला 'मिनवा' के, नियसे कि आपको यह तुलनात्मक उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। आपको बीए पत्रिका भेजकर आपके गिर को सदस्य बना दिया जायेगा।

## सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमानी मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 432209, टेलीफोन - 0291 - 432010

क्र. 'अगस्त' 2002 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान 79/46

# हुक्मदीम हिंस्त्री

जिस भूमि पर रोकड़ी प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं  
समझ हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि—

## पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली सिद्धांशुम ने पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विद्वि-विद्वान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 5 से 7 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं। यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से सधानों में शिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार 20-9-2002

आत्म चैतन्य गुरु स्थापन प्रयोग

गुरु गङ्गा प्रयोग साधन के जीवन का स्वाक्षर है। यदि वास्तव में शिष्य जो उसका प्रयोग धर्म गुरु के ही चिन्नन में व्यतीत होता है, उसका प्रत्येक बार्द गुरु के ही श्रीचरण कमलों में ही समर्पित होता है। फिर उसकी एक ही ललक होती है, कि कैसे गुरुदेव का नारियल प्राप्त करने, कैसे उनकी सेवा करने, उनको प्रसन्न करने, कैसे उनकी कृपा प्राप्त करने, क्योंकि उनकी कृपा होने पर ही कुछ प्राप्त हो सकता है। यदि गुरु प्रसन्न हो जाए, तो जो कार्य कई साधनाओं से और कठिन परिश्रम से भी नहीं हो पा रहे हों, वह मात्र एक क्षण में ही हो जाता है। जो साधन इस रहस्य को समझ जाते हैं, वे गुरु की प्रसन्नता को ही जीवन का आधार मान लेने हैं। यह साधना वस्तुतः गुरु को प्रसन्न करने के लिए ही सम्पन्न की जाती है, जिससे वह हर क्षेत्र में गुरु कृपा से सकूलता प्राप्त कर सके।

21-9-2002 शनिवार आत्म सम्मोहन प्रयोग

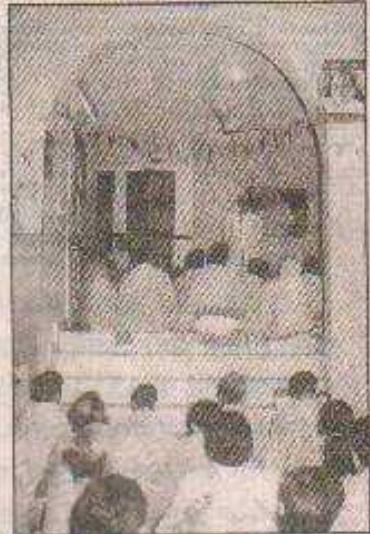
सम्मोहन एक ऐसा विज्ञान है, जिसके द्वारा किसी भी अन्य क्रिया को नहीं वरन् स्वयं को भी सम्मोहित किया जा सकता है। आत्म सम्मोहन साधना का एक ऐसा पक्ष है, जिसके द्वारा अपने मन को वश में करके, सम्मोहित कर साधक उसे बहाँ पक्ष पर गिरिशील कर सकता है।

१. यदि साधना में आपका मन इकाया नहीं हो गता,
२. यदि आपका किसी काम में मन नहीं लगता,
३. यदि आपका मन पढ़ाई में नहीं लगता हो,
४. यदि आप में आत्म विश्वास की कमी है,
५. यदि आपको क्रोध बहुत अधिक आता है,
६. यदि आप में किसी प्रकार की कोई भी भावना है या
७. किसी अन्य प्रकार का मनोरोग है, तो इन सभी का उपयोग है आत्म सम्मोहन।

22-9-2002 रविवार

शिवयुक्त धूमावती प्रयोग

धूमावती प्रयोग एक प्रचाण्ड और अद्भुत प्रयोग है, जिसे धृषि सही तरह सम्पन्न किया जाए तो इसका निशाना खाली नहीं जाता। शिवयुक्त होने से धूमावती प्रयोग लौम्य रूप से लेती है, परन्तु इसका प्रभाव और भी अधिक बढ़ जाता है। इससे प्रयोग के निम्न लाभ है—१. यदि किसी प्रकार की आपके ऊपर कोई तंत्र बाधा है, अथवा कोई तंत्र दोष है तो वह समाप्त होता है। २. यदि शत्रु अधिक हावी एवं बलशाली हो गये हों, तो वे परास्त होने हैं और अत्यधिक प्राप्त होता है। ३. यदि किसी प्रकार का कोई तन्त्र रोग हो तो स्वास्थ्य लाभ होता है और दुर्बलता समाप्त होती है। ४. मृत ऐत अदि इतर योनियों जा कोई प्रकोप हो, तो उसका शमन होता है। ५. धूमावती जा विशेष सुरक्षा चक्र प्राप्त होता है, जिससे किसी भी विद्युत में साधक की उकाल वृत्तु या घूर्णन नहीं हो सकती।



१. ब्रह्माकर  
२४०/-  
गटिका,  
२. किसी स  
३. एवं पृष्ठ  
है, तो य  
को प्राप्त

शास्त्र  
उसके भी  
इन सबसे  
कर, तो हम  
कुछ  
में अवस्थि  
दीक्षा प्राप्त  
तीव्र  
रहा तो, एवं  
जाग्रत होने  
के साधन।

१. ब्रह्मा ज  
उपर्युक्त के  
के अधिक व  
ने असलीन  
करने का  
\* यह प्रयो  
ग गौला प्र  
तीन है, वह  
करने का एवं  
११ ब्रह्मा ने  
अपूर्ण वायिन  
प्रवास किया  
संग उन्होंने

कोटि ज  
दीक्षा” के  
आप नहीं  
ही आपा  
विक वापर  
के नाम से  
होने वाली  
आपको भी  
दिल्ली का  
सक, इस  
जानेवाले  
पर रैंडा न

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किसी दो यिन्हें अथवा स्वर्गनों को (जो प्रविका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तत्र यव विज्ञान प्रविका का वार्षिक सदस्य बन कर दिल्ली गुरुधाम में स्वर्गज होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। प्रविका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- थी जम करना है। प्रयोग से संबंधित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित समर्पण (व्रत शुद्धिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप परिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मिश्र के लिए परिका वार्तिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधन में घण ले सकते हैं।

इ. पक्षिका सत्त्वस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को जहि प्रसम्भाल की इस पावनसाधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यवादी कथा करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अधिकांश कुल प्राप्तियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ जाता है, तो वह आपके जीवन की सजलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो नि.शुल्क है और युल कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रदेशों की न्यौदाओं वरां के अर्थ के तराजु में नहीं तोल सकते।

गठधार में दीक्षा व साधना का महत्व

शान्ति में बर्णन किया जाता है, कि मंत्रिर में मंत्र जप किया जाए तो भूति उत्तम होता है, उसमें भी अधिक पूर्णदारी होता है वहि नवी के जिनरे करे, उसमें भी अधिक समुद्र लट, और उसमें भी अधिक परवत में करे, तो और पर्वत में भी यदि हिन्दूलग्न में किया जाए, तो जौर से कहे गुना खेत होता है। इन लकड़ी भी ऐसा है चर्चि साधक गुण लगानी में बेटकर साधन सम्प्रय करे और यदि गुणदेव अपने आश्रम उठात गुरुदाम में से यह साधना प्रवर्तन करे, तो उससे छह सौभाग्य और कृष्ण होता ही नहीं।

क्रृष्ण ऐसे स्थान होते हैं, जहाँ विष्य शक्तियों का वास पर्देव रहता ही है। जो चक्षुर होते हैं, वे सूर्यम् रूप से अथवा महारीर प्रतिपल अपने धार्म में उच्चविद्यत रखते हुए प्रत्येक ननि वैधि का स्वरूप रूप से स्वावलन करते ही रहते हैं। इसलिए यहि विष्य गुरुभयम् ने पञ्चक कर गुरु से साधन, भव एवं दीक्षा ग्राम करने हैं और यह वरणों का समर्पण कर उनकी आज्ञा से साधना ग्रामन करता है। तो उनके सम्मान ह से उन्होंना भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पूज्यजन हैं जहाँ शिव-आदि साधक के लिए भारी तोड़ी से भी जागत तीर्थ गुरुज्ञाम होता है जिस धारा में सदगुरुज्ञान का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर नुक़ चरणों में उपरिषित होकर नुक़ मुख से नव प्राप्त करने की इच्छा ही नाधिक में तब उपराहोती है, नव उक्त स्थान में जागत होने हैं। इसी नियम को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुत्रैव की व्यस्तान के बावजूद भी दिल्ली गुरुद्वारा में तीन दिवसीयों में तीन दिवसीयों को सभान्तक श्रद्धालुओं की श्रद्धा का निपत्रित की गई है।

५६ दीक्षा जान के समय में एक प्रायाग्रीष्णन उत्पात है सरावना की उत्तरायणी को प्राप्त कर लेने का नियम के अधार पर, अशुद्धिन को दूर कर देने का नियम में अशुद्धिक घन, चारस, प्रेषण एवं दोषी प्राप्त कर लेने का सरावन में लालोचन प्राप्त कर देने का एवं एक प्रकाश नियमित जाना चाहिए यिस कारण ही वह जाता जाम बदलता है, उसमें निषुप्ताभास प्राप्त कर देना है, कर्मिक इन सरावना और देवता जाति करने का एक दूर उत्पात है।

\* बीजा में भू-लेने वाले साथकों के नाम दे अग्रणी अधिकारी करने के उपर्युक्त विशेष गतिसंगत प्रदान किया जाता। यह दोनों द्वारा तो ही विवरों में सम्पूर्ण विवरण की जाएगी।

योजना केवल इन ३ निम्नों के लिये  
किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्यना  
शुल्क २४०/५=Rs. 120/- राशि का बैंक डापट  
मत्र तथा विज्ञान के नाम से बैंकाकर उनके  
डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा  
आप नि-शूलक प्राप्त कर सकते हैं।

अक्षिप्रात वर्ज दीक्षाएँ

১৮৪

महाविद्या दीक्षा

यह आश्चर्य ही है कि कमला महाविद्या के नाम से तो जभी साधक परिचित होते हैं, परन्तु कमला महाविद्या की शक्ति से साधक प्राप्त: अनभिज्ञ ही हैं, और इसीलिए वे अन्य महाविद्या साधनाएं तो सम्पन्न करते हैं, परन्तु इनकी साधना की ओर ध्यान नहीं देते। सही अर्थों में कहा जाएँ तो कमला आदि शक्ति का वह स्वरूप है जो जीवन में अर्थ की अधिष्ठात्री देवी है। दरिद्रता को जड़ से समाप्त कर धन का अक्षय स्रोत प्रदान करने में कमला दीक्षा अचूक है। इसके प्रभाव से व्याघर में चतुर्दिक् बृद्धि होती है, बेरोजगार को रोजगार प्राप्त होता है, यदोग्रस्ति होती है। महालक्ष्मी की साधना तो प्रत्येक व्यक्ति कर ही लेता है, परन्तु जो वास्तव में तंत्र के जानकार होते हैं, वे तो कमला दीक्षा ही लेते हैं, क्योंकि यह अपने आप में महाविद्या है, शक्ति स्वरूपा है, जिसके सामने दुर्भाग्य दरिद्रता टिक नहीं सकती।

समाजक सेवा कार्यक्रम ३०६ लालोट शहरी परिवारों के लिए वित्ती - ३४ फॉन ०११-२१८२२४३ और ०११-२१९६७००

# PHYSICAL REJUVENATION!

All knowledge of science and the spiritual world is aimed at making human life more comfortable and easy. Science sure has provided man with so many luxuries but can it claim to have made his life more healthy?

In some ways yes, for the medical world has made great strides in recent times. But another truth is that today man is more prone to diseases and ailments and no person specially in cities is totally free from ailments. Is this the destiny of man i.e. to suffer endlessly?

Science can bring only temporary relief and it is not possible for it to bring complete rejuvenation of the human body. This is possible only through the exalted spiritual knowledge possessed by our great Rishis and Yogis.

In this knowledge lie the seeds to a completely healthy and comfortable life but unfortunately today man is unable to benefit from it being incapable of understanding it and believing in it.

When the ancient texts talk of ailments they do not refer to only physical problems but also mental tensions and hurdles in life faced by all of us today. And it is but most logical to club problems along with ailments as tensions lead to deterioration of health and these need to be rooted out to keep perfectly fit. Hence the ancient texts provide infallible Sadhanas to cure the same.

Astrologically speaking the cause of diseases or such problems could also be malefic planets in one's natal chart. In fact such ailments are not cured even by the best medical help.

This Sadhana must be tried by everyone who faces any of the above mentioned problems related to his health. If tried in particular auspicious moments with full concentration and faith it simply can-

not fail. Where even science can fail this ritual could do wonders.

According to the great Rishi Dhanvantari who was an authority on treatment of diseases, Narayan Kal Sadhana can completely rejuvenate the body no matter how badly afflicted. Through the chanting of the Narayan Kal Mantra a divine energy is produced within which can bring about an amazing transformation in the human body.

This is a one day Sadhana that must be done on a **Tuesday** early morning or in the night.

Have a bath and wear clean yellow clothes. Then sit facing North. Cover a wooden seat with a yellow cloth. On it write with vermillion. On two Ashoka leaves make a Swastik each with turmeric paste. Place these leaves over a *Narayan Yantra*. On them place *Narayan Chakra*. Then chant following verse meditating on the divine form of Lord Narayan.

*Udyat Pradyotan Shat Ruchim Tapt Hemaavadaabham, Paarshva Dwarndwa Jaladhi Sutayaa Vishva Dhaatryaa Cha Jushtam. Naanaa Rainollasit Vividhaa-kalpamaa-peet Vastram, Vishnum Vande Dar Kamal Keumodiki Chakra Paannim.*

After this pray to the Lord for perfect health and freedom from your ailment. Then with a *yellow Hakeek rosary* chant five rounds of the following Mantra:

*Om Nrim Nrinnaay Kaayaakalp Poornnatva Soundarya Praaplaye Phat.*

Repeat the entire Sadhana on the next Tuesday. Do this for four continuous Tuesdays.

After the Sadhana tie all Sadhana material in a yellow cloth and drop the bundle in a river or pond.

*Sadhana articles - 300/-*

# BANISH ENMITIES AND PROBLEMS

oddess Jwalamalini is none but the divine energy of Lord Shiva. So powerful is Her form that even the gods fear Her and great Yogis crave to perform Her Sadhana in order to banish all obstacles in the path of spiritual development. Yet it is a fact that the Sadhana of the Goddess Jwalamalini has long remained under the cover of secrecy. Gurus would give its knowledge only to the most deserving disciples.

Any Sadhak who tries Her Sadhana without doubt is instilled with the divine powers of the Goddess. If one's faith and devotion is unwavering then the Sadhana simply cannot fail to produce the desired result.

This is also a very quick acting ritual and its Mantra is packed with more power than even a nuclear bomb! Only thing is one should know how to make its proper use.

Every Sadhak should try and accomplish this Sadhana at least once in his life time in order to gain from the benevolent Goddess who is very kind to Her devotees but a terror to the enemies.

Through this Sadhana one can banish all enmities in life. The energy generated by the Mantra chanting is enough to neutralise the negative plots and actions of even the most powerful enemies. It also fills the Sadhak with confidence, will power and a divine radiance which enables him to face the most formidable of foes. Then the Sadhak does not feel perturbed even in adverse situations and he comes out victorious in all ordeals of life.

Through this ritual one can even ward off the ill effect of any evil ritual tried by one's enemies to

destroy one's life or harm one.

The Sadhana must be tried in the night of a Saturday.

Have a bath and wear yellow clothes. Also cover yourself up with a *Guru Chadar* (a special protective shawl). Sit with crossed legs. Cover a wooden seat with a yellow cloth and on it place the *Jwalamalini Yantra* on a mound of rice grains. Also place Sadgurudev's picture on one side. Light a Ghee lamp and offer vermillion, rice grains, flowers on the Yantra and the picture. Take some water in the right palm and speak out your name and the reason why you are doing the Sadhana. Let the water flow to the ground

Next meditate on the holy form of the Goddess chanting thus.

*Om Namo Angushthhaabhyaaam Namah,  
Bhagwati Tarjaneebhyaaam Swaahaa,  
Jwaalaamaalini Madhyamaa-bhyaaam Vashat,  
Grighra Gann Parivrite Kavachaay Hoom, Hoom  
Phat Netratrayaaay Voushat, Swaahaa Astraay  
Phat.*

This Mantra energises the fingers and makes the chanting of the main Mantra with a rosary more effective and powerful. Then with a *Jwaala rosary* chant four rounds of Guru Mantra and with the same rosary chant 5 rounds of the following Mantra.

*Om Jram Jram Jwaalaamaalinyel Phat*

Do this regularly for 11 days. In this period wear the rosary daily. After 11 days drop the Yantra and rosary in a pond or river. One should lead a celibate life in this period and eat pure food. One can try again for even better result.

Sadhana Articles - 240/-

# Wishes Fulfilled!

**M**ercury is a divine metal and according to the ancient text *Ras Ratna Samuchchaya* if mercury is Samskarised through it any wish can be fulfilled. Samskarised mercury or *Parad* is called elixir and nectar of life and through it even the impossible can be achieved.

If with this Samskarised mercury one prepares an idol of Lord Ganpati then through its worship a Sadhak can gain intelligence, divine powers, wealth, health and fulfilment of all desires and wishes.

In the Indian system of Sadhanas no ritual is complete without the worship of Lord Ganpati. Before the worship of every God and Goddess, Lord Ganpati is offered prayers because with His blessings no obstacle can come in one's way.

A Sadhana of Lord Ganpati is like the divine boon tree *Kalpvirksha* which can fulfil any wish on being asked. Lord Ganpati is also a very kind deity who bestows comforts, wealth and favours on his devotees.

Just remembering the Lord removes obstacles and problems from one's life and enables one to make quick progress in one's field of work.

If then one uses a *Parad* idol of the Lord for the Sadhana the effect becomes hundred fold and success is quicker and more certain.

If you feel there are lots of tensions and problems in your life. If your business is not doing well. If

you are facing problems in studies. In fact if you are worried about anything just try this wonderful ritual and witness its amazing power for yourself.

This Sadhana should be tried on a Wednesday or a *Ganesh Chaturthi* early in the morning. Have a bath and wear fresh yellow clothes. Cover a wooden seat with yellow cloth.

Then sit on a yellow mat facing North. In a copper plate draw a Swastik with turmeric. On it place a *Parad Ganpati*. Offer vermillion, rice grains and yellow flowers.

Then take water in the right palm and speak out your wish. Let the water flow to the ground. Then join both palms and chant the following prayer meditating on the divine form of the Lord.

*Veenam Kalp-lataam Cha Paasham  
Varadam Vldhatte Kare, Vaame Taamrasam  
Cha Ratna-kalasham Sanmanjareem  
Chaabhayam. Shundaadand-  
lasanmrigendra-vradah Shankhendu-gourah  
Shubhoh, Deevyadratna-nibhaanshuko  
Ganpatih Paayaad-paayaat Sa Nah.*

Next smear a *Shree Phal* with vermillion and offer it to the Lord. Then with a coral rosary chant three rounds of the following Mantra.

*Om Gam Gannpataye Gam Namah*

Do this for three consecutive Wednesdays. After Sadhana place *Parad Ganpati* in your place of worship. Drop the *Shree Phal* and rosary in a river or pond.

Sadhana articles - 390/-

# TRANSFER OF DIVINE ENERGY

**H**uman life is the greatest boon from the side of Nature. According to the text *Vivek Chodamanni* composed by Bhagwatpad Shankaracharya it is very difficult to be born as a human and still more difficult to become a *Purush* or a complete man.

Only a person who becomes curious about the spiritual world and the science of Mantra and Tantra can be called truly fortunate because for him can open the doors to totality.

But only a person who has found a Sadguru in his life can hope to make spiritual progress and attain to such an elevated state.

The highest aim of human life is realisation of the self and of the Supreme. Till he does this he has to go through the cycle of birth and death again and again.

But for this realisation to occur it is necessary to free the body and the mind of all impurities. Only when one is physically and mentally pure does the divine energy that is within spurs forth and one has the glimpse of the immortal soul.

It is very difficult for an ordinary person in the present age to become free of these evil tendencies on his own. For this he needs the help of an accomplished master who could instil his own spiritual power into the person and destroy his weaknesses. This is an act of kindness and love which the master does and it cannot be repaid by wealth or gifts. In return the master only asks for true love for the Divine and unwavering faith.

The process of instilling of his divine power into a disciple by a master is called *Shaktipaat Diksha* which can be done by a touch of the hand

on the forehead, a mere look or even by gazing at a photograph for a person remotely situated.

Not every Guru is capable of performing Shaktipaat. He has to be a Sadguru who is one among the elite Rishis and Yogis of the holy spiritual land of Siddhashram.

One such great Guru worshipped even by the gods and goddesses and revered by all Yogis and Rishis is Paramhans Sadguru Dev Swami Nikhileshwaranand who has transferred the elixir of his divine powers into millions of lives and saved them from perils and whose divine work on earth continues to be done by the three revered Gurus at present.

In his own words - "I have given Shaktipaat Diksha to millions. There have been individuals who have never even read or heard about Yogic practices and Prannayam and yet after having got Shaktipaat they automatically started to perform amazing Yogic practices with the greatest ease."

"And more importantly each Sadhak performed the practice that would ensure his spiritual progress and none else."

Through Shaktipaat Diksha amazing results have accrued for different Sadhaks - riddance from incurable diseases, debts and problems; banishment of poverty and gain of wealth; employment for those without jobs; marriage of those who were earlier unable to find the right match and many more.

What more those desirous of spiritual progress have attained to the awakening of the Kundalini and gain of powers like clairvoyance and telepathy. In fact nothing is impossible through Shaktipaat Diksha and it is a sure way of completely transforming one's life for the better.

**4 अगस्त 2002**

**शिविर स्थल जाट धर्मशाला रेलवे  
स्टेशन हिसार(हरियाणा)**

आयोजक ओम प्रकाश मलिक ९८१२०-५६१०८, श्री नरेंद्र सिंह  
हिसार, ०१६६२-८१६२७, लतबीर सिंह कुमारी,  
९५१२६५४-३६२४०, राजकुमार शर्मा ब्रह्मबारा, सत्यनारायण  
पटवारी-उकलाना - १६९३-३३२०३, राजेन्द्र मलिक, राजा  
पुष्कर शर्मा, डॉ. बलबीर सिंह कलावाली मिरसा- २२८०१  
विजय शास्त्री नारनील, पूर्ण चंद सोरणा-नारनील-०१३८५-  
५२७४१, टी. एन पाठक, पानीपत-०१७४२-६५५७८१, वरदान सिंह  
फलेहावार, समन्वय सिंह, राजेश कुमार धनंजय एडवोकेट-  
०१६६२-४३४८८, श्री. पी. शर्मा हिसार, आई.आर. शर्मा-  
छिक्कर बबाला -९५१७१-२६६०३०५

**15 अगस्त 2002**

**सीतापुर उ. प्र.**

**शिविर स्थल राजा कालेज मैदान निकट  
लाल बाग चौराहा सीतापुर**

आयोजक राजकुमार रस्तोरी, ०५८७२-५७५६८ रामसिंह  
राठौर, ०५८६५-२२७३१ राजबीर सिंह कानपुर ०३१२-६१२०१६  
सत्यनारायण ०५१२-५०३४२७, निरिन पचासिया ०३१२-३५९४५३  
शिवदत्त प्रसाद ०५८६२-४९९४८, अनूप प्रताप सिंह ०५१६२-  
४४४७१२, सुशील कुमार महेश्वरी, देम इकर कश्यप, खानद  
कुमार तिवारी, डॉ. नीरा सिंह, मन्तु सच्चेना, प्रकाश चन्द्र  
बाजपेही, मदन लाल राठौर, शक्ति प्रताप सिंह, प्रनोद यादव,  
महेन्द्र सिंह यादव, रामकृष्ण जिखिल,

**15 सितम्बर 2002**

**सोलन (हिमाचल प्रदेश )**

**शिविर स्थल दुर्गा भवन मुरारी मार्केट  
सोलन (हि. प्र.)**

**चामुण्डा साधना शिविर**

आयोजक ज्ञानचन्द्र रत्न एडवोकेट युमानी ०१९७८-५५२८३  
शैलेन्द्र शीली ०१९७८-४४५०० अशोक कुमार हिमला -२३०५०३-  
प्रकाशो चंद्री ०१९७८-६६०५९, सुरेश कुमार ०१९७८-५५८४६, दिवान  
सिंह टाकुर ०१९२-४००४६, चन्द्रशेखर ०१७९६-४८६६१, कमल

सिंह, राजेन्द्र शर्मा, डॉ. गणेश के, डॉ. शर्मा, बंसी राज  
गुरुर, केवारनाथ, ओमप्रकाश शर्मा, कुशल सिंह, आर.  
एस. मिन्हास, कमल, ब्रदीप राणा, हेमी, पक्ष्म राणा, राम  
कुमार।

\* \* \* \* \*

**साधक कृपया द्यान दें**

१. यदि आप अपने स्थान पर साधना  
शिविर का आयोजन करता चाहते हैं तो इस  
सम्बन्ध में एक आयोजक मंडल बिताकर  
लिखित में पत्र नुस्खेव को जोधपुर अथवा  
दिल्ली भेजें प्रत्र प्राप्त होने के पश्चात दो तीन  
महीने में जब भी दिनांक उपलब्ध होनी  
आपको सूचित कर दिया जायेगा।

२. डाक तार विभाग द्वारा टी. पी. शुल्क,  
रजिस्ट्री शुल्क बहुत अधिक डाक त्वय  
लगता है इससे बचने हेतु सम्बन्धित साधना  
सामग्री की धर शशि यदि पूर्ण रूपये  
अधिग्रहण भेज दें तो आपको कार्यालय खर्च पर  
रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा साधना सामग्री भेज  
दी जायेगी।

३. साधना सामग्री से सम्बन्धित धन शशि  
'मंत्र शक्ति केन्द्र जोधपुर' और पत्रिका  
से सम्बन्धित आवश्यक शुल्क 'मंत्र तंत्र  
यंत्र विज्ञान जोधपुर' के नाम से ही  
भेजें।

४. पत्रिका में छपे कार्यक्रम दिवसों के  
अलावा जोधपुर अथवा दिल्ली भैंट करने हेतु  
कृपया पहले फोन करके जातकारी अवश्य  
प्राप्त कर लें।

आप गुरु आई आपने स्थान पर जो  
भी कार्यक्रम करते हैं, उस संबंध  
में वितरण नुस्खेव के पास दिल्ली  
पते पत्र अवश्य भेजें यदि कोई  
शिविर आयोजन करता चाहते हैं  
तो पूर्ण वितरण साहित पत्र नुस्खेव  
के नाम दिल्ली पते पत्र भेजें।

रजिस्ट्रेशन नं० 35305/81

With Registrar Newspapers of India  
Posting Date 14-15 every Month

A.H.W.

Postal No. RJ/WR/19/65/2002  
Licence to Post without Pre payment  
Licence No. RJ/WR/PP04/2002

## महां : शिवार दीपाली के लिए विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निष्ठा के लिए दिवसों पर साधकों से विशेष दीपा प्रदान करते।

इच्छुक साधक निष्ठा के लिए दीपा पर गढ़वा कर दीपा प्राप्त कर लेते हैं।

निष्ठा दिवस १५ ये दीपार ग्राह ११ बजे से १ बजे ते-

कर्त्ता दीपा समय ३ बजे से ७:३० बजे के मध्य प्रदान की जातीगी।

दिनांक

६-७-८ शिवार दीपा

समाप्त

पुष्टाधाम (जिल्हापुर)

दिनांक

२०-२१-२२ शिवार दीपा

समाप्त

शिवाधाम (जिल्हा)

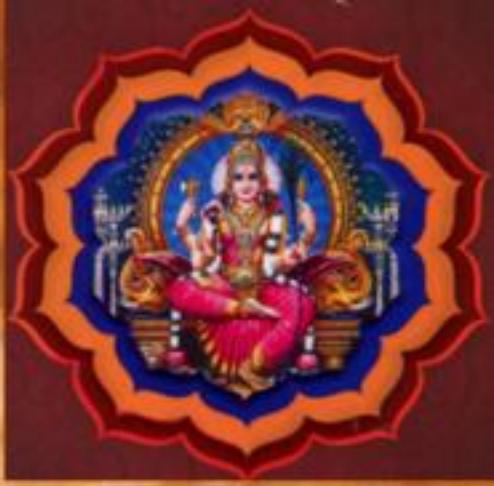
२५-२६

२५-२६

सम्पर्क

मंत्र लंब शंख शिराल डॉ. डीमली मार्ज हार्दिलोट लॉलोनी, गोधापुर ३४२००१ राज. फ़ोन: ०२९१-४३२२४०७ टेल: ०२९१-४३२०१०

शिराशम ३०६ कोहुट एड्स होम गोदापुर लाटु देवली - ३५ फ़ोन: ०१-७१३२२४४ टेल: ०१-७१९६७८०



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server

